# छत्तीसगढ़ विधान सभा

# की

# अशोधित कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

**पंचम विधान सभा** **एकादश सत्र**

## सोमवार, दिनांक 26 जुलाई, 2021

## (श्रावण 04, शक सम्वत् 1943)

**[अंक 01]**

**Web Copy**

## विधान सभा के पदाधिकारी

| | |
|---|---|
| अध्यक्ष | डॉ. चरणदास महंत |
| उपाध्यक्ष | श्री मनोज सिंह मण्डावी |
| प्रमुख सचिव | श्री चन्द्र शेखर गंगराड़े |

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

## सभापति तालिका

1. श्री सत्यनारायण शर्मा,
2. श्री धनेन्द्र साहू,
3. श्री देवेन्द्र बहादुर सिंह,
4. श्री शिवरतन शर्मा,
5. श्री देवव्रत सिंह
6. श्री बघेल लखेश्वर

## माननीय राज्यपाल

सुश्री अनुसुईया उइके

## मंत्रिमण्डल के सदस्यों की सूची

| | | |
|---|---|---|
| 01. | श्री भूपेश बघेल, मुख्यमंत्री | सामान्य प्रशासन, वित्त, ऊर्जा, खनिज साधन, जन सम्पर्क, इलेक्ट्रानिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी एवं अन्य विभाग जो किसी मंत्री को आवंटित ना हो. |
| 02. | श्री टी.एस. सिंहदेव, मंत्री | पंचायत एवं ग्रामीण विकास, लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, चिकित्सा शिक्षा, 20 सूत्रीय कार्यान्वयन, वाणिज्यिक कर (जी.एस.टी.) |
| 03. | श्री ताम्रध्वज साहू, मंत्री | लोक निर्माण, गृह, जेल, धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व, पर्यटन |
| 04. | श्री रविन्द्र चौबे, मंत्री | संसदीय कार्य, कृषि विकास एवं किसान कल्याण तथा जैव प्रौद्योगिकी, पशुधन विकास, मछली पालन, जल संसाधन एवं आयाकट |
| 05. | डॉ.प्रेमसाय सिंह टेकाम, मंत्री | स्कूल शिक्षा, आदिम जाति तथा अनुसूचित जाति विकास, पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक विकास, सहकारिता |
| 06. | श्री मोहम्मद अकबर, मंत्री | परिवहन, आवास एवं पर्यावरण, वन, विधि एवं विधायी कार्य |
| 07. | श्री कवासी लखमा, मंत्री | वाणिज्यिक कर (आबकारी), वाणिज्य एवं उद्योग |
| 08. | डॉ.शिवकुमार डहरिया, मंत्री | नगरीय प्रशासन एवं विकास, श्रम |
| 09. | श्री अमरजीत भगत, मंत्री | खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण, योजना आर्थिक एवं सांख्यिकी, संस्कृति |
| 10. | श्रीमती अनिला भेंडिया, मंत्री | महिला एवं बाल विकास एवं समाज कल्याण |
| 11. | श्री जयसिंह अग्रवाल, मंत्री | राजस्व एवं आपदा प्रबंधन, पुनर्वास,वाणिज्यिक कर (पंजीयन एवं मुद्रांक) |
| 12. | श्री गुरू रूद्र कुमार, मंत्री | लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी एवं ग्रामोद्योग |
| 13. | श्री उमेश पटेल, मंत्री | उच्च शिक्षा, कौशल विकास, तकनीकी शिक्षा एवं रोजगार, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, खेल एवं युवा कल्याण |

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

## संसदीय सचिवों की सूची

| | | |
|---|---|---|
| 01. | श्री चिंतामणी महाराज | लोक निर्माण मंत्री से संबद्ध |
| 02. | श्री पारसनाथ राजवाड़े | उच्च शिक्षा मंत्री से संबद्ध |
| 03. | श्रीमती अंबिका सिंहदेव | लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी मंत्री से संबद्ध |
| 04. | श्री चन्द्रदेव प्रसाद राय | वन मंत्री से संबद्ध |
| 05. | श्री द्वारिकाधीश यादव | आदिम जाति विकास मंत्री से संबद्ध |
| 06. | श्री गुरुदयाल सिंह बंजारे | पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री से संबद्ध |
| 07. | श्री इन्द्रशाह मण्डावी | राजस्व मंत्री से संबद्ध |
| 08. | श्री कुंवर सिंह निषाद | खाद्य मंत्री से संबद्ध |
| 09. | डॉ. (श्रीमती) रश्मि आशिष सिंह | महिला एवं बाल विकास मंत्री से संबद्ध |
| 10. | श्री रेखचंद जैन | नगरीय प्रशासन मंत्री से संबद्ध |
| 11. | सुश्री शकुन्तला साहू | कृषि मंत्री से संबद्ध |
| 12. | श्री शिशुपाल सोरी | वन मंत्री से संबद्ध |
| 13. | श्री यू.डी. मिंज | वाणिज्यिक कर (आबकारी) मंत्री से संबद्ध |
| 14. | श्री विकास उपाध्याय | लोक निर्माण मंत्री से संबद्ध |
| 15. | श्री विनोद सेवनलाल चन्द्राकर | पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री से संबद्ध |

.

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

## सदस्यों की वर्णात्मक सूची
## (निर्वाचन क्षेत्र का नाम तथा क्रमांक सहित)

**अ**

| | | |
|---|---|---|
| 01. | अजय चन्द्राकर | 57-कुरूद |
| 02. | अमरजीत भगत | 11-सीतापुर (अ.ज.जा.) |
| 03. | अरूण वोरा | 64-दुर्ग शहर |
| 04. | अनिता योगेंद्र शर्मा, श्रीमती | 47-धरसींवा |
| 05. | अनिला भेंडिया, श्रीमती | 60-डौंडी लोहारा (अ.ज.जा.) |
| 06. | अंबिका सिंहदेव, श्रीमती | 03-बैकुंठपुर |
| 07. | अमितेश शुक्ल | 54-राजिम |
| 08. | अनूप नाग | 79-अंतागढ़ (अ.ज.जा.) |
| 09. | आशीष कुमार छाबड़ा | 69-बेमेतरा |

**इ**

| | | |
|---|---|---|
| 01. | इंद्रशाह मण्डावी | 78-मोहला-मानपुर (अ.ज.जा.) |
| 02. | इंदू बंजारे, श्रीमती | 38-पामगढ़ (अ.जा.) |

**उ**

| | | |
|---|---|---|
| 01. | उत्तरी गनपत जांगड़े, श्रीमती | 17-सारंगढ़ (अ.जा.) |
| 02. | उमेश पटेल | 18-खरसिया |

**क**

| | | |
|---|---|---|
| 01. | कवासी लखमा | 90-कोन्टा (अ.ज.जा.) |
| 02. | कृष्णमूर्ति बांधी, डॉ. | 32-मस्तूरी (अ.जा.) |
| 03. | किस्मत लाल नंद | 39-सरायपाली (अ.जा.) |
| 04. | कुलदीप जुनेजा | 50-रायपुर नगर उत्तर |
| 05. | कुंवर सिंह निषाद | 61-गुण्डरदेही |
| 06. | के.के.ध्रुव, डॉ. | 24-मरवाही (अ.ज.जा.) |
| 07. | केशव प्रसाद चन्द्रा | 37-जैजेपुर |

**ख**

| | | |
|---|---|---|
| 01 | खेलसाय सिंह | 04-प्रेमनगर |

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

**ग**

| | | |
|---|---|---|
| 01. | गुरू रूद्र कुमार | 67-अहिवारा (अ.जा.) |
| 02. | गुरूदयाल सिंह बंजारे | 70-नवागढ़ (अ.जा.) |
| 03. | गुलाब कमरो | 01-भरतपुर-सोनहत (अ.ज.जा.) |

**च**

| | | |
|---|---|---|
| 01. | चक्रधर सिंह सिदार | 15-लैलूंगा (अ.ज.जा.) |
| 02. | चरणदास महंत, डॉ. | 35-सक्ती |
| 03. | चंदन कश्यप | 84-नारायणपुर (अ.ज.जा.) |
| 04. | चंद्रदेव प्रसाद राय | 43-बिलाईगढ़ (अ.जा.) |
| 05. | चिन्तामणी महाराज | 08-सामरी (अ.ज.जा.) |

**छ**

| | | |
|---|---|---|
| 01. | छन्नी चंदू साहू, श्रीमती | 77-खुज्जी |

**ज**

| | | |
|---|---|---|
| 01. | जयसिंह अग्रवाल | 21-कोरबा |

**ट**

| | | |
|---|---|---|
| 01. | टी.एस.सिंहदेव | 10-अम्बिकापुर |

**ड**

| | | |
|---|---|---|
| 01. | डमरूधर पुजारी | 55-बिन्द्रानवागढ़ (अ.ज.जा.) |

**त**

| | | |
|---|---|---|
| 01. | ताम्रध्वज साहू | 63-दुर्ग ग्रामीण |

**द**

| | | |
|---|---|---|
| 01. | दलेश्वर साहू | 76-डोंगरगांव |
| 02. | द्वारिकाधीश यादव | 41-खल्लारी |
| 03. | देवती कर्मा | 88-दंतेवाड़ा (अ.ज.जा.) |
| 04. | देवेंद्र यादव | 65-भिलाई नगर |
| 05. | देवेंद्र बहादुर सिंह | 40-बसना |
| 06. | देवव्रत सिंह | 73-खैरागढ़ |

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

**ध**

01. धरमलाल कौशिक 29-बिल्हा
02. धनेन्द्र साहू 53-अभनपुर
03. धर्मजीत सिंह 26-लोरमी

**न**

01. ननकीराम कंवर 20-रामपुर (अ.ज.जा.)
02. नारायण चंदेल 34-जांजगीर-चांपा

**प**

01. प्रकाश शक्राजीत नायक 16-रायगढ़
02. प्रमोद कुमार शर्मा 45-बलौदाबाजार
03. पारसनाथ राजवाड़े 05- भटगांव
04. प्रीतम राम, डा. 09-लुण्ड्रा (अ.ज.जा.)
05. पुन्नूलाल मोहले 27-मुंगेली (अ.जा.)
06. पुरूषोत्तम कंवर 22-कटघोरा
07. प्रेमसाय सिंह टेकाम, डॉ. 06-प्रतापपुर (अ.ज.जा.)

**ब**

01. बृजमोहन अग्रवाल 51-रायपुर नगर(दक्षिण)
02. बृहस्पत सिंह 07-रामानुजगंज (अ.ज.जा.)

**भ**

01. भुनेश्वर शोभाराम बघेल 74-डोंगरगढ़ (अ.जा.)
02. भूपेश बघेल 62-पाटन

**म**

01. ममता चंद्राकर, श्रीमती 71-पण्डरिया
02. मनोज सिंह मण्डावी 80-भानुप्रतापपुर (अ.ज.जा.)
03. मोहन मरकाम 83-कोण्डागांव (अ.ज.जा.)
04. मोहित राम 23-पाली-तानाखार(अ.ज.जा.)
05. मोहम्मद अकबर 72-कवर्धा

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

**य**

| | | |
|---|---|---|
| 01. | यू.डी.मिंज | 13-कुनकुरी (अ.ज.जा.) |

**र**

| | | |
|---|---|---|
| 01. | रजनीश कुमार सिंह | 31-बेलतरा |
| 02. | रंजना डीपेंद्र साहू, श्रीमती | 58-धमतरी |
| 03. | राजमन वेंजाम | 87-चित्रकोट (अ.ज.जा.) |
| 04. | रमन सिंह, डॉ. | 75-राजनांदगांव |
| 05. | रामकुमार यादव | 36-चंद्रपुर |
| 06. | रामपुकार सिंह ठाकुर | 14-पत्थलगांव (अ.ज.जा.) |
| 07. | रविन्द्र चौबे | 68-साजा |
| 08. | रश्मि आशिष सिंह, डॉ. (श्रीमती) | 28-तखतपुर |
| 09. | रेखचंद जैन | 86-जगदलपुर |
| 10. | रेणु अजीत जोगी, डॉ. (श्रीमती) | 25-कोटा |

**ल**

| | | |
|---|---|---|
| 01. | लक्ष्मी ध्रुव, डॉ. | 56-सिहावा (अ.ज.जा.) |
| 02. | लखेश्वर बघेल | 85-बस्तर (अ.ज.जा.) |
| 03. | लालजीत सिंह राठिया | 19-धरमजयगढ़ (अ.ज.जा.) |

**व**

| | | |
|---|---|---|
| 01. | विक्रम मण्डावी | 89-बीजापुर (अ.ज.जा.) |
| 02. | विनय जायसवाल, डॉ. | 02-मनेन्द्रगढ़ |
| 03. | विनय कुमार भगत | 12-जशपुर (अ.ज.जा.) |
| 04. | विद्यारतन भसीन | 66-वैशाली नगर |
| 05. | विकास उपाध्याय | 49-रायपुर नगर पश्चिम |
| 06. | विनोद सेवन लाल चंद्राकर | 42-महासमुन्द |

**श**

| | | |
|---|---|---|
| 01. | शकुन्तला साहू, सुश्री | 44-कसडोल |
| 02. | शिवरतन शर्मा | 46-भाटापारा |
| 03. | शिवकुमार डहरिया, डॉ. | 52-आरंग (अ.जा.) |
| 04. | शिशुपाल सोरी | 81-कांकेर (अ.ज.जा.) |

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

| | | |
|---|---|---|
| 05. | शैलेश पाण्डे | 30-बिलासपुर |

**स**

| | | |
|---|---|---|
| 01. | सत्यनारायण शर्मा | 48-रायपुर ग्रामीण |
| 02. | संतराम नेताम | 82-केशकाल (अ.ज.जा.) |
| 03. | संगीता सिन्हा, श्रीमती | 59-संजारी बालोद |
| 04. | सौरभ सिंह | 33-अकलतरा |

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

# छत्तीसगढ़ विधान सभा

सोमवार, दिनांक 26 जुलाई, 2021

(श्रावण 4, शक संवत् 1943)

विधानसभा पूर्वाह्न 11.00 बजे समवेत हुई

**(अध्यक्ष महोदय (डॉ. चरणदास महंत) पीठासीन हुए)**

समय :

11.00 बजे **राष्ट्रगीत/राज्यगीत**

अध्यक्ष महोदय :- अब राष्ट्रगीत "वंदे मातरम्" के साथ राज्यगीत "अरपा पइरी के धार" होगा । माननीय सदस्यों से अनुरोध है कि वे राष्ट्रगीत एवं राज्यगीत के लिये कृपया अपने स्थान पर खड़े हों ।

(राष्ट्रगीत "वंदे मातरम्" और राज्यगीत "अरपा पइरी के धार" की धुन बजाई गई।)

समय :

11.03 बजे **निधन का उल्लेख**

(1) श्री गुलाब सिंह, पूर्व सदस्य, छत्तीसगढ़ विधान सभा ।

(2) श्री सोमप्रकाश गिरि, पूर्व सदस्य, अविभाजित मध्यप्रदेश विधान सभा ।

(3) श्री बालाराम वर्मा, पूर्व सदस्य, अविभाजित मध्यप्रदेश विधान सभा ।

(4) श्रीमती करूणा शुक्ला, पूर्व सांसद, लोकसभा ।

(5) श्री बद्रीधर दीवान, पूर्व उपाध्यक्ष, छत्तीसगढ़ विधान सभा ।

(6) डॉ. शक्राजीत नायक, पूर्व राज्यमंत्री, छत्तीसगढ़ शासन ।

(7) श्री रामाधार कश्यप, पूर्व सांसद, राज्यसभा ।

(8) श्री बलराम सिंह बैस, पूर्व सदस्य, अविभाजित मध्यप्रदेश विधान सभा ।

(9) श्री खेलनराम जांगड़े, पूर्व सांसद, लोक सभा ।

अध्यक्ष महोदय :- मुझे सदन को सूचित करते हुए अत्यंत दुख हो रहा है कि छत्तीसगढ़ विधान सभा के पूर्व सदस्य, श्री गुलाब सिंह का दिनांक 25 मार्च, 2021, अविभाजित मध्यप्रदेश विधान सभा के पूर्व सदस्य, श्री सोमप्रकाश गिरि का दिनांक 17 अप्रैल, 2021, अविभाजित मध्यप्रदेश विधान सभा के

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

पूर्व सदस्य, श्री बालाराम वर्मा का दिनांक 17 अप्रेल 2021, अविभाजित मध्यप्रदेश विधानसभा की पूर्व सदस्य एवं लोक सभा की पूर्व सांसद, श्रीमती करूणा शुक्ला का दिनांक 27 अप्रैल, 2021, छत्तीसगढ़ विधान सभा के पूर्व उपाध्यक्ष, श्री बद्रीधर दीवान का दिनांक 27 अप्रैल, 2021, छत्तीसगढ़ विधान सभा के पूर्व उपाध्यक्ष, श्री बद्रीधर दीवान का दिनांक 4 मई, 2021, छत्तीसगढ़ शासन के पूर्व राज्य मंत्री, डॉ. शक्राजीत नायक का दिनांक 29 मई, 2021, राज्यसभा के पूर्व सांसद, श्री रामाधार कश्यप का दिनांक 6 जुलाई, 2021, अविभाजित मध्यप्रदेश विधान सभा के पूर्व सदस्य, श्री बलराम सिंह बैस का दिनांक 17 अप्रैल, 2021 तथा लोकसभा के पूर्व सांसद श्री खेलनराम जांगड़े का दिनांक 30 अप्रैल, 2021 को निधन हो गया है ।

श्री गुलाब सिंह का जन्म 1 जुलाई, 1968 को ग्राम-सोंस में हुआ था । उन्होंने स्नातक तक की शिक्षा प्राप्त की थी । उनका मुख्य व्यवसाय कृषि था । श्री गुलाब सिंह ने अपने राजनीतिक जीवन की शुरूआत जनपद एवं जिला पंचायत सदस्य के रूप में निर्वाचित होकर की थी । वे जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक, कोरिया के अध्यक्ष भी रहे । वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी की टिकट पर मनेन्द्रगढ़ निर्वाचन क्षेत्र से सन् 1998 में अविभाजित मध्यप्रदेश विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए तथा नवम्बर, 2000 में छत्तीसगढ़ राज्य गठन के पश्चात् नवगठित छत्तीसगढ़ राज्य की प्रथम विधान सभा के सदस्य रहे । उन्होंने अपने क्षेत्र के विकास हेतु उल्लेखनीय कार्य किये ।

उनके निधन से प्रदेश ने एक युवा राजनेता तथा समाजसेवी को खो दिया है ।

श्री सोमप्रकाश गिरि का जन्म 1 दिसम्बर, 1935 को अमराकला में हुआ था। उनका मुख्य व्यवसाय कृषि था। वे जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक, रायपुर के अध्यक्ष रहे। मीसाबंदी के तहत् जेल भी गये। वे भारतीय जनता पार्टी की टिकट पर कुरूद निर्वाचन क्षेत्र से सन् 1990 में अविभाजित मध्यप्रदेश विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए। वे जनकल्याणकारी कार्यों तथा समाजसेवा में सदैव समर्पित रहे।

उनके निधन से प्रदेश ने एक वरिष्ठ राजनीतिज्ञ तथा समाजसेवी को खो दिया है।

श्री बालाराम वर्मा का जन्म 21 अगस्त, 1949 को ग्राम-तुलसी, पोस्ट-नेवरा, जिला-रायपुर में हुआ था। उनका मुख्य व्यवसाय कृषि था। वे पंचायत तुलसी के पंच तथा नेवरा की कृषि उपज मंडी समिति के अध्यक्ष रहे। वे सन् 1993 में भारतीय जनता पार्टी की टिकट पर धरसींवा निर्वाचन क्षेत्र से अविभाजित मध्यप्रदेश विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए। उनकी कृषि कार्य तथा समाजसेवा में विशेष अभिरूचि थी।

उनके निधन से प्रदेश ने एक वरिष्ठ राजनीतिज्ञ तथा समाजसेवी को खो दिया है।

श्रीमती करूणा शुक्ला का जन्म 1 अगस्त, 1950 को ग्वालियर में हुआ था। श्रीमती करूणा शुक्ला ने एम.ए. तक की शिक्षा प्राप्त की थी। वे प्रारंभ से ही सामाजिक तथा राजनैतिक कार्यों में सक्रिय रहीं। वे प्रथम बार भारतीय जनता पार्टी की टिकट पर बलौदाबाजार निर्वाचन क्षेत्र से सन् 1993 में

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अविभाजित मध्यप्रदेश विधान सभा की सदस्य निर्वाचित हुईं। उन्हें वर्ष 1997-98 में मध्यप्रदेश विधान सभा में संसदीय उत्कृष्टता पुरस्कार से सम्मानित भी किया गया था। वे सन् 2004 में भारतीय जनता पार्टी की टिकट पर जांजगीर-चांपा संसदीय क्षेत्र से चौदहवीं लोक सभा हेतु सांसद निर्वाचित हुईं। उनकी सामाजिक कार्यों, लेखन तथा पर्यावरण के प्रति विशेष अभिरूचि थी। अपने क्षेत्र के सर्वांगीण विकास हेतु वे सदैव प्रयत्नशील रहीं।

उनके निधन से प्रदेश ने एक वरिष्ठ राजनेत्री तथा समाजसेवी को खो दिया है।

श्री बद्रीधर दीवान का जन्म 27 नवम्बर, 1929 को ग्राम देवरी पंधी, जिला बिलासपुर में हुआ था। श्री दीवान का मुख्य व्यवसाय कृषि था। वे महामाया मंदिर रतनपुर के आजीवन ट्रस्टी भी रहे। वे आपातकाल में जेल भी गये। भारतीय जनता पार्टी की टिकट पर प्रथम बार सीपत निर्वाचन क्षेत्र से सन् 1990 में अविभाजित मध्यप्रदेश विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए। पश्चात् सन् 2003, 2008 तथा 2013 में भारतीय जनता पार्टी की टिकट पर छत्तीसगढ़ विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए। वे छत्तीसगढ़ विधान सभा की अनेक समितियों के सभापति तथा सदस्य रहे। उन्होंने द्वितीय तथा चतुर्थ विधान सभा में उपाध्यक्ष पद का दायित्व भी संभाला। उनकी समाज सेवा तथा धार्मिक ग्रंथों को पढ़ने में विशेष अभिरूचि थी।

उनके निधन से प्रदेश ने एक वरिष्ठ राजनीतिज्ञ, समाजसेवी को खो दिया है।

डॉ. शक्राजीत नायक का जन्म 25 मई, 1946 को ग्राम-नावापाली, पोस्ट-बरमकेला, जिला-रायगढ़ में हुआ था। डॉक्टर नायक ने कृषि में कीट विज्ञान में पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की थी। प्रारंभ में उन्होंने नागपुर विश्वविद्यालय में प्राध्यापक तथा गुरूनानक महाविद्यालय, बल्लारपुर में प्राचार्य के पद पर कार्य किया। पश्चात् सेवा से त्याग पत्र देकर कृषि तथा सामाजिक कार्य में सक्रिय रहे। वे प्रथम बार सन् 1990 में भारतीय जनता पार्टी की टिकट पर सरिया निर्वाचन क्षेत्र से तथा दूसरी बार सन् 1998 में अविभाजित मध्यप्रदेश विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए एवं नवम्बर, 2000 में छत्तीसगढ़ राज्य गठन के पश्चात् नवगठित छत्तीसगढ़ राज्य की प्रथम विधान सभा के सदस्य रहे तथा छत्तीसगढ़ शासन में जल संसाधन एवं आयाकट विभाग के राज्यमंत्री पद का दायित्व संभाला। वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी की टिकट पर रायगढ़ निर्वाचन क्षेत्र से सन् 2003 एवं सन् 2008 में भी छत्तीसगढ़ विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए तथा छत्तीसगढ़ विधान सभा की विभिन्न समितियों के सदस्य रहे। उन्हें छत्तीसगढ़ की द्वितीय विधान सभा में वर्ष 2007-08 के लिये उत्कृष्ट विधायक चुना गया। वे अपने क्षेत्र के विकास हेतु सदैव प्रयत्नशील रहे।

उनके निधन से प्रदेश ने एक वरिष्ठ राजनीतिज्ञ, कृषि विशेषज्ञ को खो दिया है।

श्री रामाधर कश्यप का जन्म 26 नवम्बर, 1936 को ग्राम-चोरभट्टी, तहसील-पामगढ़, जिला-जांजगीर-चांपा में हुआ था। श्री कश्यप ने एल.एल.बी. तक की शिक्षा प्राप्त की थी। उनका मुख्य व्यवसाय



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

कृषि था। वे प्रारंभ से ही सामाजिक तथा राजनीतिक कार्यों में सक्रिय रहे। छत्तीसगढ़ को पृथक राज्य बनाने में उनकी भूमिका रही। 2002 में वे कांग्रेस पार्टी से राज्य सभा सदस्य के रूप में निर्वाचित हुए । 2003 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की टिकट पर अकलतरा निर्वाचन क्षेत्र से छत्तीसगढ़ में द्वितीय विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए किंतु उन्होंने विधान सभा सदस्य पद से त्यागपत्र दे दिया । वे छत्तीसगढ़ पिछड़ा वर्ग सलाहकार मंडल के सदस्य रहे । वे अपने क्षेत्र के सर्वांगीण विकास के लिए सदैव सक्रिय एवं तत्पर रहे । उनके निधन से प्रदेश ने एक वरिष्ठ राजनीतिज्ञ एवं समाजसेवी को खो दिया है ।

श्री बलराम सिंह बैस का जन्म 16 फरवरी, 1944 को कड़कड़ा, जिला कबीरधाम में हुआ था । उनका मुख्य व्यवसाय कृषि था, वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की टिकट पर विरेन्द्र नगर विधान सभा क्षेत्र से क्रमश: 1977, 1980 एवं 1985 में अविभाजित मध्यप्रदेश विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए । वे जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक राजनांदगांव के अध्यक्ष भी रहे, उनकी समाज सेवा के प्रति विशेष अभिरूचि थी । वे अपने क्षेत्र के सर्वांगीण विकास में सदैव तत्पर रहे । उनका निधन प्रदेश के लिए अपूरणीय क्षति है । उनके निधन से प्रदेश ने वरिष्ठ राजनीतिज्ञ एवं समाजसेवी को खो दिया है ।

श्री खेलनराम जांगड़े जी का जन्म 15 जुलाई, 1946 को ग्राम फुलवारीखुर्द जिला मुंगेली में हुआ । उनका व्यवसाय कृषि था । वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की टिकट पर मुंगेली विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र से सन् 1980 में अविभाजित मध्यप्रदेश के सदस्य निर्वाचित हुए तथा सन् 1984 एवं 1991 में बिलासपुर लोक सभा क्षेत्र के सांसद चुने गए । वे छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग के सदस्य रहे, उनकी सामाजिक एवं सांसकृतिक गतिविधियों के प्रति विशेष अभिरूचि थी । उनके निधन से प्रदेश ने एक वरिष्ठ रानजीतिज्ञ एवं समाजसेवी को खो दिया है ।

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, पिछले विधान सभा सत्र से इस विधान सभा सत्र के बीच हमने बहुत सारे राजनेताओं को, बहुत सारे विधायक एवं सांसदों को खोया है । भाई गुलाब सिंह जी के साथ काम करने का मुझे अवसर मिला था, आप भी साथ थे और बहुत सारे साथियों के साथ उन्होंने काम किया । बहुत कम उम्र में, मात्र 53 वर्ष की उम्र में वे हमसे बिछड़ गए । छात्र नेता के रूप में उन्होंने सार्वजनिक जीवन की शुरूआत की और राजनीति की मूल धारा से लगातार जुड़े रहकर वे लोगों की आवाज़ बुलंद करते रहे । अध्यक्ष महोदय, जैसा कि आपने बताया 26 साल की उम्र में ही जनपद सदस्य और जिला पंचायत सदस्य बन गए थे और 30 साल की उम्र में पहली बार विधान सभा में 1998 में मध्यप्रदेश में विधायक के रूप में निर्वाचित हुए और तब से हम लोगों का सम्पर्क और संबंध बना रहा । 2000 में छत्तीसगढ़ बना तब भी, छत्तीसगढ़ निर्माण में उनकी भूमिका रही है। अध्यक्ष महोदय, वे विधान सभा की विभिन्न समितियों में भी सदस्य के रूप में रहे । चाहे प्रश्न एवं संदर्भ समिति हो, अनुसूचित जाति कल्याण समिति हो, महिलाओं एवं बालकों के कल्याण संबंधी समिति

हो, 2003 में भी वे अपने कार्यों के बल पर भारी बहुमत से जीते । वनांचल होने के कारण सड़कों और रपटों की भारी कमी थी और वे उसके लिए काम करते रहे, वे निरन्तर विकास के काम में लगे रहे। उनके जाने से समाज और प्रदेश को अपूरणीय क्षति हुई है । मैं शोक संतप्त परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त करता हूं और ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उन्हें अपने चरणों में स्थान दे ।

आदरणीय सोमप्रकाश गिरि जी को बहुत जी जुझारू नेता के रूप में हम जानते हैं । वे कुरूद विधान सभा क्षेत्र से विधायक रहे । तीन बार चुनाव लड़े, तीसरी बार उन्हें सफलता मिली । लेकिन उनका जो लगाव सामाजिक क्षेत्रों में ज्यादा रहा । प्रारंभ में वे आर.एस.एस. से जुड़े रहे, उसके बाद वे आर्यसमाज से भी जुड़े रहे, विधायक न रहने के बावजूद भी वे लगातार सक्रिय रहे । कांग्रेस प्रवेश के बाद आजीवन कांग्रेस में ही रहे । जहां भी कार्यक्रम होता था, उनकी सक्रियता बनी रहती थी  और लोग हमेशा कहते रहते थे और अंत तक वे सक्रिय रहे । उन्होंने बहुत लंबी आयु जीया । हम लोगों को उनसे बहुत कुछ सीखने को मिला । जब हम लोग साथ में रहते थे तो वह बहुत सारी बातें और अनुभव साझा करते थे, वे हम लोगों को सीखाते भी थे । उनके जाने से निश्चित रूप से अपूरणीय क्षति हुई है । उनकी मृत्यु के कुछ दिनों पूर्व उनसे फोन में बात होती रही, महीने-दो महीने में उनसे फोन पर बात होती रही । उनके जाने से एक अपूरणीय क्षति हुई है । मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि गिरि जी की आत्मा को शांति प्रदान करें, उनके परिजनों को दु:ख सहने की क्षमता प्रदान करे।

माननीय अध्यक्ष महोदय, हम लोग बालाराम वर्मा जी को एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में जानते थे । वह किसान के रूप में, सफल कृषक के रूप में भारतीय जनता पार्टी से निर्वाचित हुए । उन्हें हम लोग बेहद धार्मिक प्रवृत्ति के बहुत ही सौम्य, मिलनसार व्यक्ति के रूप में जानते हैं । वह 1993 में पहली बार निर्वाचित होकर गए । जब हम लोग अक्सर ट्रेन में जाते थे तो उनके साथ मुलाकात हो जाती थी । वह बहुत ही मृदुभाषी और अल्पभाषी थे । उनके जाने से निश्चित रूप से अपूरणीय क्षति हुई है । ईश्वर से प्रार्थना है कि मृतात्मा को शांति प्रदान करे और उनके परिवार को दु:ख सहने की क्षमता प्रदान करे ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आदरणीय करूणा शुक्ला जी भी 1993 में पहली बार निर्वाचित होकर मध्यप्रदेश की विधान सभा में गईं और उनका अपना स्वभाव था कि पहले ही कार्यकाल में सभापति तालिका में उनका नाम था और 320 सदस्यों की विधान सभा में वे घंटों आसंदी में बैठकर बहुत सफलतापूर्वक सदन को संचालित करती रहीं। वह सांसद भी रहीं । अध्यक्ष महोदय, आपके साथ चुनाव भी हुए, आपने उन्हें एक बार पराजित किया, दूसरी बार उन्होंने आपको पराजित किया, लेकिन आप लोगों के संबंधों में मैंने कभी कटुता नहीं देखी । उन्होंने ऐसे परिवार में जन्म लिया, जिनमें पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी जिन्हें हम सब अजातशत्रु के रूप में जानते हैं, उस परिवार में जन्म लिया । उनके संस्कार उच्च शिक्षित थे और उसी प्रकार से जैसे अटल जी की व्यक्तित्व शैली थी, उसी

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

प्रकार की शैली करूणा जी की भी थी । उनके शब्दों के चयन करने में, शब्दों के उच्चारण में, शब्दों के प्रयोग में उनको महारथ हासिल थीं । जब वे बोलने खड़ी होती थीं तो निश्चित रूप से पूरा सदन सुनता था और सभाएं होती थी तो सभा में भी लोग बड़े धैर्य से उनकी बातों को सुनते थे । उनके जाने से निश्चित रूप से अपूरणीय क्षति हुई है । वे बलौदाबाजार विधान सभा क्षेत्र से विधायक रहीं और जांजगीर-चांपा से भारतीय जनता पार्टी से सांसद भी बनीं, विधायक भी बनीं । बाद में कांग्रेस में आईं तो आजीवन कांग्रेस पार्टी के लिए समर्पित रहीं । मैं समझता हूं कि 2018 के पहले 2013 से 2018 के बीच में जब हमारा संघर्ष था, उसमें हर क्षण, हर संघर्ष में, हर प्रदर्शन में, हर कार्यक्रम में, हर प्रशिक्षण शिविर में उनकी भागीदारी होती थी और हम लोगों को प्रेरित करती रहती थीं और हम लोगों के बीच में बिल्कुल पारिवारिक संबंध था । उनके जाने से निश्चित रूप से अपूरणीय क्षति हुई है । मृतात्मा की शांति के लिए मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं और उनके परिवार को दु:ख सहने की क्षमता प्रदान करे, ऐसी ईश्वर से कामना करता हूं ।

आदरणीय अध्यक्ष महोदय, हम लोगों ने बद्रीधर दीवान जी के साथ बहुत लंबे समय तक विधान सभा में काम किया है । मैं समझता हूं कि इस सदन में सबसे उम्रदराज विधायक के रूप में यहां थे । वे दो बार विधान सभा के उपाध्यक्ष बने । उसके पहले मैं कहना चाहूंगा कि उनका सार्वजनिक जीवन, सामाजिक और राजनीतिक जीवन बहुत लंबा रहा । बिलासपुर के ग्राम देवरी पंधी में 27 नवम्बर, 1929 को उनका जन्म हुआ । उन्होंने धार्मिक, सामाजिक पदाधिकारी के रूप में काम करते हुए सामाजिक कुरुतियों के खिलाफ संघर्षरत थे, समाज सुधार के बड़े प्रबल समर्थक रहें। उन्होंने जिस प्रखरता और मुखरता के साथ दहेज विरोधी अभियान को साथ संचालित किया, उससे न केवल ब्राम्हण समाज में ही , बल्कि सर्वसमाज में सर्वमान्य नेता बन गये। वे लगातार अपने क्षेत्र से चुनाव जीतते रहे, 1990 में चुनाव जीते। अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ बनने के बाद भी लगातार 3 बार विधायक बने और दो बार विधानसभा के उपाध्यक्ष भी रहे। सन् 2009 से 2013 तक सी.एस.आई.डी.सी. के अध्यक्ष भी रहे। सन् 2013 से 2018 का कार्यकाल हम लोगों के लिए स्वर्णिम काल था। उनकी उम्र अधिक होने के कारण सन् 2018 के चुनाव में निर्वाचित नहीं हुए अन्यथा वे आज भी हमारे बीच में सदस्य के रूप में होते। उनके जाने से एक अपूरणीय क्षति हुई है। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि ईश्वर उन्हें अपने चरणों में स्थान दें, उनकी आत्मा की शांति और उनके परिजनों को दु:ख सहने की शक्ति प्रदान करें, ऐसी ईश्वर से कामना करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, डॉ. शक्राजीत नायक के सार्वजनिक जीवन में आने की अद्भुत कहानी है। जैसा आपने बताया कि वे कृषक परिवार में जन्म लिए, लेकिन उनकी रूचि अध्ययन-अध्यापन में रहा। उन्होंने कीट विज्ञान में डाक्ट्रेट किया, जो अपने आप में बड़ी उपलब्धि रही। वे विश्वविद्यालय में एम.एस.सी. की पढ़ाई में टॉपर रहे। पी.एच.डी. करने के बाद उन्होंने सन् 1969 में नागपुर विश्वविद्यालय में प्राणी

शास्त्र विभाग के प्राध्यापक की नौकरी से आजीविका की शुरूआत की। सन् 1978 में बल्लारपुर स्थित गुरूनानक महाविद्यालय के प्राचार्य बनें। अध्यक्ष महोदय, लेकिन उनका मन वहां नौकरी करने में नहीं रहा, बल्कि सार्वजनिक जीवन जीने की उनके मन में ललक थी। उन्होंने नौकरी छोड़कर सार्वजनिक जीवन में आयें। सन् 1990 में अविभाजित मध्यप्रदेश में विधानसभा के सदस्य के रूप में निर्वाचित हुए। वे 4 बार विधायक बने। भारतीय जनता पार्टी और कांग्रेस के विधायक बने। कांग्रेस में आने के बाद वे मंत्री भी बनें। सरिया उनका विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र था। परिसीमन के बाद सरिया विधानसभा के लोप के बाद वे रायगढ़ विधानसभा से भी निर्वाचित हुए। हम जब उनके साथ पक्ष में थे तब और विपक्ष में थे तब, वे बड़े धारदार सवाल करते थे। वे अपने क्षेत्र के प्रति हमेशा जागरूक रहा करते थे। छोटी से छोटी बातों को लेकर विधानसभा में अपनी बात रखते थे और विधानसभा के माध्यम से अपने क्षेत्र के बहुत सारे काम स्वीकृत करा लेते थे। हम लोग उन्हें एक सजग विधायक के रूप में जानते हैं। हम उन्हें बहुत ही मिलनसार, एक जागरूक जनप्रतिनिधि के रूप में जानते हैं। भाई प्रकाश नायक जी, उनके सुपुत्र, वे पहले जिला पंचायत के सदस्य रहें और अभी वर्तमान विधानसभा में सदस्य हैं। प्रकाश नायक जी निश्चित रूप से अपने पिता जी के कार्यों को आगे बढायेंगे। उनको अंतिम समय में हैवी डायबिटीज था। व्हील चेयर में भी उनकी सक्रियता बनी रहती थीं। वे फोन में भी बात करते रहते थे। वे रायपुर आते थे तब भी उनसे मुलाकात होती थी। वे अपने क्षेत्र के प्रति लगातार जागरूक रहे। उनके जाने से रायगढ़ को ही नहीं, पूरे क्षेत्र को एक अपूरणीय क्षति हुई है। मैं उनकी आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता हूं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, रामाधार कश्यप जी, हमारे दल के बहुत ही वरिष्ठ नेता थे। वे विधायक भी रहें, राज्यसभा सदस्य भी रहें। उसके पहले छत्तीसगढ़ निर्माण में भातृ संघ के अध्यक्ष के रूप में डॉ. खूबचंद बघेल के सहयोगी के रूप में हम सब जानते हैं। उनके जाने से निश्चित रूप से समाज को, बिलासपुर संभाग तथा पूरे छत्तीसगढ़ को अपूरणीय क्षति हुई है। उन्होंने मृत्यु के एक दिन पूर्व ही मुझे फोन करके बातचीत की थी। उन्होंने कहा था कि 19 जुलाई को डॉक्टर साहब का कार्यक्रम है, तो मैं 19 जुलाई को आऊंगा तो आपसे भेंट करूंगा। मैंने कहा था कि 19 जुलाई को तो कार्यक्रम है, आप 18 जुलाई को आईये, शाम को साथ में बैठेंगे, चर्चा करेंगे और फिर दूसरे दिन कार्यक्रम में शामिल भी होंगे। उस समय तक वे बिलकुल स्वस्थ लग रहे थे। उनकी आवाज में कहीं कोई कम्पन या घबराहट नहीं थी, ऐसा नहीं लग रहा था कि वे बीमार हैं। हालांकि कुछ दिन पहले ही उनकी बिटिया के देहावसान से व्यथित थे। फिर भी उन्होंने मृत्यु के एक दिन पूर्व शाम को ही मुझसे बात की । तब नहीं लगा था कि उनसे आखिरी बार बातचीत हुई है । उनके जाने से निश्चित रूप से एक अपूरणीय क्षति हुई है । उनके आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ।



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

स्व. बलराम सिंह जी, कवर्धा वीरेन्द्र नगर से 1980 से 1985 और 1985 से 1990 तक विधायक रहे । 1977 में पहली बार कांग्रेस प्रत्याशी विधायक के रूप में चुने गये। अध्यक्ष महोदय, लगातार तीन बार वीरेन्द्र नगर से विधायक रहने का उनका रिकार्ड रहा है । अब वीरेन्द्र नगर विधान सभा ही लोप हो गया । वे लगातार कवर्धा की राजनीति का दमकता हुआ चेहरा बने रहे । मध्यप्रदेश के विधान सभा में लगातार वे सक्रिय रहे । मध्यप्रदेश राज्य सहकारी बैंक, अपेक्स बैंक, भोपाल के उपाध्यक्ष पद पर भी आसीन रहे । अध्यक्ष महोदय, इतने बार विधायक रहने के बाद भी उनके मन में कहीं कोई घमंड लेशमात्र नहीं था । बहुत ही सरल, सहज और एक पूर्ण छत्तीसगढ़िया, जैसे आम छत्तीसगढ़िया होते हैं, उसी प्रकार सदैव उनका व्यवहार रहा । उनके लड़के हम लोगों के साथ युवा कांग्रेस के पदाधिकारी रहे, उस नाते उनसे मुलाकात होती रही । अध्यक्ष महोदय, हम लोगों को उनका बड़ा स्नेह मिला । उसके जाने से एक अपूरणीय क्षति हुई है, उनकी आत्मा को शांति मिले, यह ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ । स्व. श्री खेलनराम जॉगड़े जी, छत्तीसगढ़ के सामाजिक, सार्वजनिक, राजनीतिक जीवन में, चार दशक पहले अनुसूचित जाति की आवाज, पूरी तरह से उठाने वाले नेताओं में अग्रिम पंक्ति में स्व. श्री खेलनराम जॉगड़े जी का नाम था । वे 30 अप्रैल 2021 को 75 वर्ष की आयु में स्वर्ग सिधार गये । मुंगेली के पास फुलवारी गांव में उन्होंने बतौर आयुर्वेद चिकित्सक के रूप में प्रेक्टिस शुरू की । न केवल मरीजों का ध्यान रखा, बल्कि सार्वजनिक जीवन में भी वह लगातार काम करते रहे । गरीबों और वंचितों के आवाज के रूप में उन्हें हम लोग देखते थे । 1980 में पहली बार मुंगेली से विधायक चुने गये और 1984 और 1989 में बिलासपुर में सांसद के रूप में निर्वाचित हुये । छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग के सदस्य भी वह बने । कुछ दिनों तक कार्यकारी अध्यक्ष के रूप में भी काम किया । बहुत ही सहज, सरल, मिलनसार व्यक्ति की छवि उनकी थी । अध्यक्ष महोदय, उनके जाने से अपूरणीय क्षति हुई है । मैं मृतात्मा की शांति के लिए ईश्वर से कामना करता हूँ।

अध्यक्ष महोदय, आज कारगिल विजय दिवस भी है, आज ही के दिन कारगिल में विजय हासिल हुई थी, उस युद्ध में जो सैनिकों की शहादत हुई, उसे भी नमन करते हुये, उसे भी स्मरण करते हुये अपनी वाणी को विराम देता हूँ । धन्यवाद, जय हिन्द, जय छत्तीसगढ़ ।

नेता प्रतिपक्ष (श्री धरमलाल कौशिक) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, दिवंगत आत्मा के सम्मान में, श्रद्धांजलि के लिए, उनके जीवन का व्यक्तित्व और कृतित्व, हम सब के सामने में है । इस बात को रखने के लिए मैं खड़ा हुआ हूँ । गुलाब सिंह जी, उस समय मध्यप्रदेश के समय में चुनकर आये थे, हम सब लोग एक साथ विधायक रहे । वे बहुत ही कम उम्र में विधायक बनकर आये थे, राजनीति में उनकी काफी सक्रियता रही । क्षेत्र के लिए उनकी सजगता, सक्रियता, इससे क्षेत्र का विकास हो सके, जनप्रतिनिधि का जो गुण है, बचपन से ही रहा । जनपद पंचायत लड़कर आना, जिला पंचायत लड़कर आना, कोरिया जिला सहकारी बैंक के अध्यक्ष के रूप में निर्वारित होकर आना और एक प्रकार से शिक्षा



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अध्ययन के बाद में राजनीति में उन्होंने विभिन्न दायित्वों का निर्वहन किया और अपने विधायक के रूप में निर्वहन करते हुये आदिवासी समाज और क्षेत्र के विकास में लगातार हमेंशा जुटे रहे । सजगता के साथ में उन दायित्वों का उन्होंने निर्वहन किया है । हमने निश्चित रूप से एक युवा राजनेता और समाजसेवी को खोया है । सोमप्रकाश गिरी जी, जिस प्रकार से उनका तेवर और स्वभाव था, वे आपातकाल में मीसाबंदी भी रहे । जेल में जीवन व्यतीत किया और साथ ही वह एक दबंग राजनेता के रूप में उभरकर सामने आये। उनको जिला सहकारी बैंक रायपुर के अध्यक्ष के रूप में काम करने का अवसर प्राप्त हुआ। वह 1990 में कुरूद निर्वाचन क्षेत्र से विधायक बनकर के आये। वह केवल जनप्रतिनिधि के नाते ही नहीं बल्कि उसके बाद में भी चाहे वह समाजसेवा के क्षेत्र में हो, राजनीति के क्षेत्र में उनकी लगातार सक्रियता बनी रही। इस प्रकार से जीवन के अंतिम समय तक एकाग्रता के साथ में वह समाज की सेवा में लगे रहे।

माननीय अध्यक्ष महोदय, बालाराम वर्मा जी शुद्ध रूप से कृषक परिवार के थे। कृषि से आजीविका से लेकर के समाज के बीच में उनकी जो भूमिका थी, नवधा रामायण के कार्यक्रम और बाकी चीजों में भी उनका आना जाना था। वह एक धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। वह ग्राम तुलसी के रहने वाले थे। वह कृषि उपज मंडी के अध्यक्ष भी रहे। वर्ष 1993 में भारतीय जनता पार्टी की टिकट पर धरसींवा निर्वाचन क्षेत्र से विधायक के रूप में चुनकर के आये। विधायक बन जाने के बाद भी उनका लगातार समाज के बीच में आना जाना लगा रहता था और क्षेत्र के विकास के लिए जो भी संभव था, उनके द्वारा किया जाता था। इस प्रकार से उन्होंने एक सरलता और सादगी का जीवन व्यतीत किया।

माननीय अध्यक्ष महोदय, श्रीमती करूणा शुक्ला जी के बारे में हम सब लोग जानते हैं कि उनका जन्म ग्वालियर में हुआ था। उनकी शिक्षा-दीक्षा ग्वालियर में हुई और ग्वालियर के बाद में भोपाल में हुई। वह अवध बिहारी वापजेयी जी की पुत्री थीं। अभी मुख्यमंत्री जी बता रहे थे कि अटल बिहारी वाजपेयी जी और अवध बिहारी वाजपेयी जी भ्राता थे। ऐसे राजनीतिक परिवार में उनका जन्म हुआ। उनका छत्तीसगढ़ में विवाह होने के पश्चात यहां पर राजनीति में उनकी सक्रियता आरंभ हुई और वह संयुक्त मध्यप्रदेश में बलौदाबाजार विधानसभा क्षेत्र से विधायक चुनकर आईं। उनको मध्यप्रदेश विधानसभा में उत्कृष्ट विधायक पुरस्कार से सम्मानित भी किया गया। वह जांजगीर-चांपा जिले से सांसद निर्वाचित हो करके आईं। भारतीय जनता पार्टी में मध्यप्रदेश से लेकर के छत्तीसगढ़ में उन्होंने विभिन्न दायित्वों का निर्वहन किया। वह हमारी पार्टी की महिला मोर्चा की राष्ट्रीय अध्यक्ष रहीं। उन्होंनें भारतीय जनता पार्टी की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष के रूप में भी काम किया। लोकसभा और विधानसभा की विभिन्न समितियों में भी उन्होंने कार्य किया। इसके साथ ही राष्ट्रकुल संसदीय संघ के सम्मेलन में भी भाग लेने का उनको अवसर प्राप्त हुआ। इस नाते उनका विदेशों में दौरा हुआ। इस प्रकार से यदि हम उनके जीवन में देखेंगे तो उन्होंने निश्चित रूप से एक छाप छोड़ी है। जिस प्रकार से सबको साथ में लेकर के चलने की उनकी

राजनीतिक कुशलता थी, न केवल पार्टी बल्कि पार्टी के बाहर भी सबके साथ में उनका जो संबंध था, उन्होंने एक कुशल राजनीतिक के रूप में अपने जीवन का निर्वहन किया है। इस कोविड काल में हम सब लोगो ने उनको खोया है। निश्चित रूप से न केवल हमारे लिए बल्कि छत्तीसगढ़ के लिए यह अपूरणीय क्षति है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, बद्रीधर दीवान जी, एक प्रकार से हम लोगों के संरक्षक ही रहे हैं। उनके नेतृत्व में, कुशल मार्गदर्शन में हम सबको काम करने का अवसर प्राप्त हुआ है। बद्रीधर दीवान जी शुरू से ही जनसंघ के कार्यकर्ता के रूप में काम किये। उसके बाद में पार्टी के जो विभिन्न दायित्व हैं। वर्ष 1977 में जनता पार्टी बनी, वह बिलासपुर जिले के पार्टी के अध्यक्ष रहे, उस समय सब एक जिले में थे। मध्यप्रदेश में किसान मोर्चा और बाकी मोर्चा के भी सदस्य के रूप में काम किये। वह आपातकाल में लंबे समय तक जेल में रहे। उसके बाद वर्ष 1990 में अविभाजित मध्यप्रदेश विधानसभा में सदस्य के रूप में निर्वाचित हुए। सदस्य निर्वाचन होने के पश्चात में मध्यप्रदेश राज्य परिवहन निगम के उपाध्यक्ष के रूप में अपने दायित्वों का उन्होंने कुशलतापूर्वक निर्वहन किया। छत्तीसगढ़ राज्य बनने के बाद में लगातार यहां पर वर्ष 2003, वर्ष 2008 और वर्ष 2013 में तीन बार विधायक रहे। साथ ही इस विधान सभा में उपाध्यक्ष के रूप में 2 बार उनको काम करने का अवसर प्राप्त हुआ। वह सी.एस.आई.डी.सी. के चेयरमेन भी रहे और उसके साथ ही साथ महामाया रतनपुर जो ट्रस्ट है, वह आजीवन उसके ट्रस्टी रहे, वह सर्वब्राम्हण समाज के अध्यक्ष रहे। उनकी रूचि विभिन्न धार्मिक, सामाजिक कार्यों में रही है। हम लोगों का समग्र रूप से मार्गदर्शन बद्रीधर दीवान जी ने किया है। निश्चित रूप से दीवान जी का काम हम सबको एक पालक के रूप में संभालने का रहा है ऐसे हमने वरिष्ठ राजनीतिज्ञ, समाजसेवी और हमारे पार्टी के वरिष्ठ नेता को हम सब लोगों ने खोया है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, डॉ. शक्राजीत नायक भारतीय जनता पार्टी की टिकट पर दो बार सरिया से विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए। जब छत्तीसगढ़ राज्य अलग हुआ उसके बाद में यहां जल संसाधन, आयाकट मंत्री के रूप में काम करने का अवसर प्राप्त हुआ, स्वतंत्र प्रभार मिला। साथ ही जिस प्रकार से उनकी शिक्षा और दीक्षा में जो रूचि रही। उन्होंने नागपुर विश्वविद्यालय में प्राध्यापक के रूप में काम किया या प्राचार्य के रूप में बल्लारपुर में काम किया। यह स्वाभाविक रूप से उनकी शिक्षा दीक्षा की रूचि थी। उसके साथ में यदि हम उस समय की बात करें तो वह कीट विज्ञान में विषय विशेषज्ञ थे। कृषि वैज्ञानिक के रूप में उनका जीवन रहा। निश्चित रूप से विधान सभा में भी कई अवसर ऐसे देखने को प्राप्त हुए कि जब कृषि का विषय आये तो वह खूब रूचि के साथ में वह विषय रखते थे और उसमें बोलते थे। उसके साथ में रायगढ़ से दो बार निर्वाचित हुए। हमारे रायगढ़ जिले से भारतीय जनता पार्टी के दो बार अध्यक्ष भी रहे। इस प्रकार से उनका जो समग्र रूप से राजनीतिक जीवन है उनका पूरा जीवन

राजनीति, समाजसेवा में रहा और कृषि के क्षेत्र में विशेष रूचि रही। हमने ऐसे वरिष्ठ राजनीतिक, कृषि विशेषज्ञ को हम सब लोगों ने खोया है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा रामाधार कश्यप जी से पारिवारिक संबंध था। समाज के बीच में आना-जाना, मिलना-जुलना होता था और हम लोग लगातार संपर्क में रहे हैं। उनकी छत्तीसगढ़ निर्माण की पृष्ठभूमि में भूमिका थी और उनके द्वारा साथ ही विभिन्न सामाजिक दायित्वों का निर्वहन किया जाता था। उसके बाद में जिस प्रकार से छत्तीसगढ़ राज्य के बाद में राज्यसभा सदस्य के रूप में निर्वाचित हुए। राज्यसभा में रहते हुए ही उनको अकलतरा विधान सभा से टिकट मिली। वह टिकट मिलने के बाद में जीतकर आये, विधायक भी बने। उस समय यह बातें आयीं कि राज्यसभा में रहना है या विधान सभा में सदस्य रहना है, लेकिन जैसे भी जो स्थिति बनी। उन्होंने यहां विधान सभा में शपथ नहीं ली और उन्होंने विधान सभा की सदस्यता से त्यागपत्र दे दिया। लेकिन आप उनका पूरा जीवन देखेंगे कि जनप्रतिनिधि थे तब भी उनकी सक्रीयता और जनप्रतिनिधि नहीं रहने के बाद भी पूरे जीवन में उनकी जो सक्रीयता रही है, चाहे वह राजनीति के क्षेत्र में हो या समाज के क्षेत्र में हो। वह निरंतर समाज को मार्गदर्शन देते रहे। साथ ही एक प्रतिष्ठित परिवार की प्रतिष्ठा आजीवन कायम रही है। हम सब लोगों ने ऐसे रामाधार कश्यप जी को खोया है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, श्री बलराम सिंह बैस जी के बारे में जैसा कि हम सबको जानकारी है कि अविभाजित मध्यप्रदेश में विरेन्द्र नगर से लगातार वर्ष 1977, वर्ष 1980 और वर्ष 1985 में विधायक रहे। साथ ही जिला सहकारी बैंक राजनांदगांव के अध्यक्ष भी रहे। साथ ही कृषक परिवार में जन्म लेने के कारण में स्वाभाविक रूप से कृषि में रूचि थी। अपने क्षेत्र के विकास के लिए सदैव तत्पर रहते थे। उनका लोगों के साथ मिलना-जुलना था और अपने क्षेत्र को विकास की दिशा में आगे ले जाने का कार्य करते थे। यह उनके जीवन की महत्वपूर्ण उपलब्धियां रहीं हैं। हमने ऐसे वरिष्ठ नेता को खोया है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, खेलनराम जांगड़े जी उस समय वह और हम बिलासपुर संयुक्त, मुंगेली से विधायक बने। विधायक बनने के बाद में फिर दो बार हमारे बिलासपुर लोक सभा से सांसद के रूप में निर्वाचित हुए। खेलन राम जांगड़े जी की जो जीवन की सरलता और सादगी थी, वह हम सब के सामने में है। उनको पी.एस.सी. में भी काम करने का अवसर मिला। जब छत्तीसगढ़ राज्य का निर्माण हुआ तो कुछ दिन पी.एस.सी. में चेयरमेन भी रहे। मोहले जी के साथ में चुनाव भी लड़े और मोहले जी से भी उनका अटूट संबंध रहा। ऐसा कम होता है, देखने मे जो आता है कि एक दूसरे के साथ में जो प्रतिद्वंदी हो और चुनाव के बाद भी उतने ही पारिवारिक संबंध, मुझे अच्छा लगा कि वे जिस मकान में रहते थे, उसके बाद जब छोड़ने की बारी आई तो मोहले जी के साथ हम लोग गये, जब वे सांसद बन गये। उनके बच्चे भोपाल में पढ़ रहे थे। जब वे सांसद नहीं रहे तो उनके बच्चे मोहले जी के यहां रहकर पूरी पढ़ाई



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

किये। यह उनके आपस का जो एक विश्वास था, ऐसी सरलता राजनीति में काफी कम अनुभव आया है। इतने विश्वास के साथ में हम मिले। लेकिन हम लोगों ने जांगड़े जी को बहुत करीब से देखा है। वे कांग्रेस में थे, हम लोग भाजपा में थे। काम करने का अवसर प्राप्त हुआ जिले में उठने-बैठने का अवसर प्राप्त हुआ। हमने एक वरिष्ठ नेता को खोया है। मैं सभी दिवंगत आत्मा की शांति के लिए भगवान से प्रार्थना करूंगा कि उन्हें अपने चरणों में स्थान दे और उस परिवार को असहय दुख को सहने की शक्ति प्रदान करे। मैं ईश्वर से कामना करता हूं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल (रायपुर नगर दक्षिण) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आज हम यहां पर दुखद विषय पर चर्चा कर रहे हैं। जिन नौ सदस्यों के बारे में हम चर्चा कर रहे हैं लगभग सभी सदस्य विधायक रहे हैं।

श्री गुलाब सिंह जी के साथ में हम सबको काम करने का अवसर मिला।

श्री सोमप्रकाश गिरि जी का व्यक्तित्व एक अलग प्रकार का था। वे संघर्षशील थे, दृणनिश्चयी थे, उन्होंने श्रमिकों, किसानों के क्षेत्र में भी काम किया। एक बार की घटना मुझे याद आती है कि मध्यप्रदेश के विधानसभा में मैंने उनको कहा कि आप जूस पी लीजिए तो बोले कि मैं जितना पीऊंगा उतना पिलाओगे। मैंने कहा हव तो फिर उन्होंने एक बाल्टी में पूरा जूस भरवाया और वे पूरा जूस पी गये। उनके बारे में एक कहावत थी, उन्होंने 42 गिलास जूस पीया। उनको कोई भोजन करने के लिए भी कहता था तो मैं जितना करूंगा उतना करवाओगे, एक टिफिन भरकर अगर रोटी हो तो उसको भी खा लेते थे। एक जिंदादिल व्यक्तित्व सोमप्रकाश गिरि जी का था। वे हमारे साथ विधायक रहे।

श्री बालाराम वर्मा जी, उनको कभी गुस्सा होते हुए नहीं देखा। उन्होंने हमेशा धोती पहनकर विधानसभा अटेंड की। एक कृषिकाय, एक सीधे-साधे व्यक्तित्व के धनी थे।

श्रीमती करूणा शुक्ला जी, हम सबके बीच में नहीं हैं, एक तेज तर्रार व्यक्तित्व था। अटल जी की भतीजी थी परंतु उन्होंने इसको कभी सो नहीं किया कि वे अटल जी की भतीजी हैं। हम लोग उनको बहुत बार देखते थे कि चाहे सांसद की टिकट का मामला हो चाहे विधायक की टिकट का मामला हो, इनको तो टिकट मिलेगी ही परंतु जब उनके निर्णय का मामला आता था तब कभी भी उन्होंने न अटल जी की भतीजी होने का मामला सामने लाया न अटल जी ने कभी उनके लिये कहा। ऐसे व्यक्तित्व की धनी हम नहीं सोचते थे कि वे हमारे बीच में नहीं रहेंगी और वे बहुत जल्द हमारे बीच से चली गयी। उनका जाना निश्चित रूप से छत्तीसगढ़ प्रदेश के लिये एक अच्छे नेतृत्व का चला जाना है।

श्री बद्रीधर दीवान, इस विधानसभा के शायद सबसे वरिष्ठ विधायक रहे हैं, विधानसभा के उपाध्यक्ष रहे हैं और जितने लंबे समय तक उन्होंने सेवा की। भारतीय जनसंघ के संस्थापक दीन दयाल उपाध्याय जी के साथ उन्होंने काम किया, दीन दयाल उपाध्याय जी उनके घर में आये हैं। अभी मैं पिछले दिनों गया तो दीन दयाल उपाध्याय जी के साथ में उनके घर में छायाचित्र लगा हुआ है। ऐसे

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

वरिष्ठ विधायक ऐसे वरिष्ठ नेता आज शायद उस उम्र में कोई दोबारा विधायक बन पाये इसकी हम कल्पना नहीं कर सकते परंतु इस उम्र में वे विधायक रहकर लगातार सक्रिय रहे।

डॉ. शक्राजीत नायक जी, हमें इस बात की खुशी है कि उनके सुपुत्र आज हम सबके साथ में है। परंतु उनका चला जाना दुखद है। कृषि के क्षेत्र में उन्होंने एक अद्‌वितीय काम किया है। कृषि की चर्चा कभी भी सदन में होती थी, उनको चलने में तकलीफ होती थी उसके बाद भी उनको कृषि में क्या काम करना चाहिए। कैसा होना चाहिए इसका सुझाव देने के लिए वे लगातार आते थे।

श्री रामाधार कश्यप जी के साथ भी हम सबको काम करने का अवसर मिला। वे भी एक सीधे-साधे सरल व्यक्तित्व थे। हमारे विधानसभा में वे ऐसे सामान्य व्यक्ति की तरह यहां पर प्रवेश करते थे और सभी से मिलते-जुलते थे । श्री बलराम सिंह बैस जी के साथ भी हम सभी को काम करने का अवसर मिला, उनका एक दबंग व्यक्तित्व था । उनकी आवाज में दम था, वे जब बोलते थे और मुझे लगता है कि बिलासपुर संभाग में भी उनका जो सम्मान था, उसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते । श्री खेलनराम जांगड़े जी के साथ भी हमको काम करने का अवसर मिला । इन सभी व्यक्तित्व को आज हम यहां पर श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं, मैं इस बात की कामना करता हूं कि हम इन सभी व्यक्तित्व से कुछ न कुछ सीखें । सभी के व्यक्तित्व में कुछ न कुछ सीखने लायक था, मैं अपनी तरफ से और अपने सभी उनको जानने और मानने वालों की तरफ से उनके प्रति श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं । इसके साथ ही माननीय मुख्यमंत्री जी ने चर्चा की कि इस देश के अजातशत्रु श्री अटल बिहारी बाजपेयी जी ने कारगिल युद्ध में जिन्होंने पूरे विश्व में इस देश की एक साख बढ़ायी और हमारे जवानों ने माइनस टेम्परेचर में भी पाकिस्तान को सबक सिखाया । ऐसे कारगिल के योद्धाओं को भी हम श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं और प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि उनके परिवार को इस दुख को सहन करने की शक्ति दे और हम सभी को कुछ न कुछ सीखने का अवसर दे । ओम शांति ।

श्री अजय चंद्राकर (कुरूद) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सार्वजनिक जीवन के बहुत महत्वपूर्ण हस्ताक्षरों को हमने खोया है जिसकी भरपाई संभव नहीं है । सम्माननीय गुलाब सिंह जी हमारे साथ दो बार विधायक रहे और विशेष रूप से मैं जिनके लिये खड़ा हूं । मेरे क्षेत्र से वर्ष 1990 से 1993 के बीच विधायक रहे और वे काफी जुझारू एवं संघर्षशील व्यक्ति थे । राजनीतिक तौर पर वे किसी से कोई भी बात करते रहूं, मेरे खिलाफ भाषण भी दें तो जब नीचे उतरते थे और कोई व्यक्तिगत समस्या आती थी तो वे मुझको ही फोन करते थे, चाहे वह घरेलू संबंध में हो या किसी भी विषय में हो कि आज तुम मेरे घर आना, मैं मंत्री था उस समय भी वे मुझे फोन करते थे और दूसरे दिन मेरी शिकायत करने भी जाते थे, यह बात भी उतनी ही सत्य है लेकिन वे मेरे पिता तुल्य थे, मैंने बचपन से उनके साथ काम किया था । सन् 1984 में जब भाजपा की टिकट से पहली बार लड़े, वे और भी लड़ चुके थे तो मैं यह समझ लूं कि यह उनके निर्वाचन का एक महत्वपूर्ण अंग था । श्री बालाराम जी के साथ काम करने का अवसर

विधायक के तौर पर तो नहीं लेकिन दलीय तौर पर उनसे काफी निकटता से काम करने का अवसर मिला । श्रीमती करूणा शुक्ला जी के व्यक्तित्व के बारे में काफी कुछ बात की गई । माननीय मुख्यमंत्री जी ने, माननीय नेता प्रतिपक्ष जी ने जो बातें कही निश्चित रूप से मैं उनसे सहमत हूं । श्री बद्रीधर दीवान जी भी बहुत ही वरिष्ठतम् सदस्य, दो बार उपाध्यक्ष और उनके बारे में जो बातें कही गईं, एक रिक्तता सार्वजनिक जीवन में आई । डॉ. शक्राजीत नायक जी के साथ हम लोग दो बार विधायक रहे । जो मिनीमाता के बांयी तट नहर प्रणाली के लिये यानी उसको बनाने के लिये उनके योगदान को जाना जायेगा । श्री रामाधार कश्यप जी के बारे में जैसा कि आपने कहा छत्तीसगढ़ आंदोलन के प्रमुख हस्ताक्षरों में से एक थे, श्री बलराम सिंह बैस जी के बारे में भी, अपेक्स बैंक या सहकारिता आंदोलन के महत्वपूर्ण लोगों में से रहे । श्री खेलनराम जांगड़े जी जब पीएससी में थे तो उनसे कई विषयों में कई बार मुलाकात होती थी, पहली बार हम लोग इतने लंबे इतने महत्वपूर्ण लोगों को श्रद्धांजलि दे रहे हैं यह बड़ा दुखद क्षण है कि छत्तीसगढ़ के सार्वजनिक जीवन के बहुत महत्वपूर्ण लोगों को हमने खोया है । भगवान उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे ।

डॉ. विनय जायसवाल (मनेन्द्रगढ़) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जितने भी 09 माननीय सदस्य दिवंगत हुए हैं उनको मैं अपनी अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। श्री गुलाब सिंह जी जो कि अविभाजित मध्यप्रदेश विधानसभा और छत्तीसगढ़ विधान सभा के पूर्व सदस्य रहे हैं । चूंकि मैं उन्हीं की विधानसभा से इस सदन का सदस्य चुनकर आया हूं और उनके साथ काम करने का भी अवसर प्राप्त हुआ है । उनके विषय में, उनके जीवन परिचय के बारे में माननीय मुख्यमंत्री जी और जितने भी माननीय सदस्यों ने प्रकाश डाला है । यदि कोरिया जिले में दो ध्रुव की बात करें तो दूसरे ध्रुव के रूप में माननीय गुलाब सिंह जी को सदैव याद किया जाएगा, कोरिया के लोग उनको याद करेंगे । स्व. रामचन्द्र सिंहदेव जी, जिन्हें हम सब कुमार साहब के नाम से जानते थे, वाटर मैनेजमेंट और इरिगेशन के लिए न केवल राज्य बल्कि पूरे देश के लोग उन्हें जानते हैं। उसी प्रकार से अगर गुलाब सिंह जी के बारे में अगर थोड़ी बात करना चाहूं तो जितनी सरलता, सहजता और मिलनसारिता माननीय गुलाब सिंह जी में हम लोगों ने देखी है कि एक आदिवासी नेता के रूप में और एक ट्राइबल का कैसे विकास हो। उनके नॉलेज की अगर बात करें, हम लोग बीच-बीच में उनके घर जाया करते थे। उनकी तबीयत थोड़ी खराब रहा करती थी तो उनका बंजारीडांड में उनका घर, जो उनका पैतृक निवास था, जहां वे निवास करते थे, वहां जाकर देखें तो उनका जो घर है वह अभी भी मिट्टी का घर है और उस मिट्टी के घर में इतनी सारी किताबें थीं, किसी भी धर्म के बारे में चाहे वह सिख धर्म हो या मुस्लिम धर्म हो, ईसाई धर्म हो, उनका धर्मों के प्रति जो नॉलेज था, वह ज्ञान मुझे नहीं लगता कि आमतौर पर मैंने किसी में देखा हो। मैंने नहीं देखा। दूसरी बात, जिस प्रकार से कुमार साहब को कोरिया के लोग वाटर मैनेजमेंट के लिए जानते है, वैसे ही अगर गुलाब सिंह जी के बारे में बात करें तो कोरिया के लिए उनका एक बड़ा

योगदान था कि जितने भी रपटा थे, अगर जनकपुर से कोटाडोल तक की अगर हम बात करें तो पूरे रपटा को चेंज करके उन्होंने आवागमन के लिए जो बड़े-बड़े पुल का निर्माण किया, उसके लिए निश्चित रूप से कोरिया की जनता उन्हें हमेशा याद रखेगी। कोरिया के आवागमन के लिए खासकर पुलों का निर्माण के लिए उन्हें चिरकाल तक याद किया जायेगा। मैं एक बात आपको बताना चाहूंगा। आप भी जानते हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय, आप भी उस क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। जो देवाडांड और देवाडांड के इधर बरसात के समय में उसे काले पानी के रूप में उसे जानते थे। पूरे बरसात में लगभग 25 से ज्यादा जो पंचायत थे, वे आवागमन से महरूम थे। उन्होंने देवाडांड का जो पुल बनवाया और जिस तरह से उसके लिए आवाज उठाया और देवाडांड का जो पुल बना, वह एक उदाहरण है कि किस तरह से विकास के प्रति उनकी सोच थी? आवागमन के प्रति उनकी जो सोच थी, आदिवासियों के प्रति उनकी जो सोच थी, निश्चित रूप से मैं उसकी जितनी भी प्रशंसा करूं, वह निश्चित रूप से कम है। मैं उन्हें अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए और जितने भी हमारे दिवंगत सदस्य हैं, उन्हें अपनी श्रद्धांजलि प्रकट करता हूं और कारगिल दिवस के रूप में जितने भी हमारे वीर शहीद हमारे सैनिक हैं, उन्हें भी मैं अपनी सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। अध्यक्ष महोदय, बहुत-बहुत धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय :- धर्मजीत सिंह जी।

श्री धर्मजीत सिंह (लोरमी) :- आदरणीय अध्यक्ष महोदय, आपके द्वारा उल्लिखित सभी महापुरूषों को मैं अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। अध्यक्ष महोदय, श्री गुलाब सिंह सन् 1998 में पहली बार जब वे निर्वाचित हुए थे तो हम लोग भी उन्हीं के साथ निर्वाचित हुए थे। वे बहुत ही विद्वान व्यक्ति थे। डॉ. जायसवाल बिल्कुल ठीक बोल रहे हैं। वे इतिहास के बारे में बहुत जिक्र करते थे। जब चर्चा होती थी तो वे कई उदाहरण देते थे। उनके संग जब भी कभी विदेश जाने का अवसर मिला तो वे मेरे ही रूम पार्टनर हुआ करते थे। वे बहुत अच्छे आदमी थे। उनसे बहुत अच्छी दोस्ती थी। उनके निधन से हम सब लोग बहुत व्यथित और दुखी हैं। गिरि जी भी बहुत वरिष्ठ नेता थे। उनसे भी मुलाकात होती थी। संयोग से श्री बालाराम वर्मा जी से कभी मुलाकात नहीं हुई। उनके निधन से भी हम दुखी हैं। श्रीमती करूणा शुक्ला जी बहुत ही प्रखर वक्ता और वरिष्ठ नेता थीं। उनके निधन से भी हम सब लोग बहुत दुखी हैं। श्री बद्रीधन दीवान जी हमारी विधान सभा के बहुत ही आदरणीय सदस्य थे। उनका पूरा विधान सभा, पक्ष-विपक्ष सभी सम्मान करते थे। जब डॉ. साहब मुख्यमंत्री थे और यहां से जब हम लोगों को उनके खिलाफ कुछ बोलना रहता था तो बोलते थे और दीवान जी हुंकारू भरवाते थे । दीवान जी बताइए ये सही बोल रहे हैं या नहीं तो वे बोल देते थे कि हां ठीक, सही बोल रहे हो। उनके दोनों पैरों के बीच से गोली भी चली हुई थी, उस बात का ज़िक्र भी मैं और अजय चन्द्राकर जी अक्सर किया करते थे । लेकिन वे हम लोगों को पुत्रवत् स्नेह में रखते थे, वे हमारे पिता तुल्य थे । मैं यह कह सकता हूं कि जब जनसंघ पार्टी की सभा में बहुत कम लोग आते थे, वे उस ज़माने के नेता हैं । वे जनसंघ और बीजेपी के भी फाउंडर

मेम्बर हैं । लेकिन उन्होंने न तो कभी पावर का ग़लत इस्तेमाल किया और न कभी उनके मन में घमंड आया और वैसे भी वे बिलासपुर में अजातशत्रु थे । सारे लोग उनका बहुत सम्मान करते थे । उनके निधन से हम लोग व्यक्तिगत् रूप से बहुत ज़्यादा दुखी हैं ।

डॉ. शक्राजीत नायक आज भले ही न हों, लेकिन जांजगीर-चांपा जिले का हर किसान उन्हें अपने दिल में बसाकर रखा है । जब जोगी जी मुख्यमंत्री थे, वे उनके सिंचाई मंत्री हुआ करते थे । छत्तीसगढ़ में पहली बार टर्न-की सिस्टम लागू हुआ था। टर्न-की पद्धति से बांगों की नहरों का जाल बिछाना था, उस समय बहुत से आरोप-प्रात्यारोप भी लगे । कालान्तर में वे आरोप-प्रत्यारोप सब ग़लत साबित हुए । लेकिन आज डभरा, चन्द्रपुर, सक्ती, जांजगीर जिले में जो सम्पन्नता दिखाई दे रही है । उसमें डॉ. शक्राजीत नायक जी का बहुत बड़ा हाथ है और विधायक के रूप में विधान सभा में ठीक 11 बजे आते थे और विधान सभा की पूरी कार्यवाही के बाद ही जाते थे । कहने का आशय यह है कि वे विधान सभा की सभी गतिविधियों में भागीदारी करते थे । एक अच्छे नेता आज हमारे बीच नहीं है ।

रामाधार कश्यप जी को तो राज्य सभा का सम्मान मिला था । लेकिन वे छत्तीसगढ़ निर्माण में पहले भी सक्रिय रहे, सामाजिक गतिविधियों में सक्रिय रहे, राज्य सभा सदस्य बनने से उन्हें कोई बहुत फ़र्क नहीं पड़ा । लोग उन्हें अपने परिवार के सदस्य के समान स्नेह करते थे, सम्मान देते थे । बलराम सिंह बैस जी से भी बहुत से मौकों पर मुलाक़ात हुई । वे वरिष्ठ नेता थे, 3-3 बार मध्यप्रदेश के समय विधायक रहे । हमारे कवर्धा जिले के ही रहने वाले हैं और वे अभी भी अपने सामाजिक और धार्मिक कार्यों का पालन भी पूरी तरह से कर रहे थे । उनक निधन से भी हम दुखी है ।

खेलनराम जांगड़े से भी मेरा बहुत ही व्यक्तिगत् और पारिवारिक संबंध रहा है। खेलनराम जांगड़े जी के लिए हम लोगों ने हमेशा काम किया । जांगडे जी हरफ़न मौला आदमी थे । उन्होंने कभी भी सांसद या विधायक की गर्मी नहीं दिखायी । जब भी उनके पास दिल्ली में कोई भी गया । न सिर्फ अपने घर में ठहराते थे बल्कि उनके खाने-पीने की भी चिंता करते थे । वे कहीं पर भी, किसी के घर भी कुछ भी खा-पी लेते थे, उन्हें कोई भी तकलीफ नहीं होती थी । वे एक सहज सरल आदमी थे, उनके निधन से तो व्यक्तिगत् पारिवारिक क्षति हुई है । उनका गांव मेरे ही विधान सभा क्षेत्र में है । करूणा शुक्ला जी का भी ससुराल लोरमी विधान सभा के लीलापुर गांव में है । मूलत: जब शादी के बाद उनका आगमन हुआ था, तो लीलपुर गांव में हुआ था । जब वे चुनाव लड़ रही थीं तो उनको साथ लेकर लीलापुर गांव भी गया था और उस गांव में शुक्ल परिवार प्रतिष्ठित परिवार हुआ करता था, अब वे लोग मुंगेली और बलौदाबाजार में आ गए हैं । इन सभी विभूतियों के न रहने से छत्तीसगढ़ की धरती को अपूरणीय क्षति हुई है । इनके निधन से रिक्तता आई है, इनके निधन से सामाजिक गतिविधियों को अंजाम देने वाले लोग नहीं रहे । इनके निधन से राजनीति में आदर्श स्थापित करने वाले लोग नहीं रहे, इनके निधन से हम सब स्तब्ध भी हैं, दुखी भी हैं और उन्हें शोकान्जलि अर्पित कर रहे हैं ।

अध्यक्ष महोदय, आज 26 जुलाई को पूरा टी.व्ही. चैनल कारगिल युद्ध की खबरों से पटा पड़ा है । 26 जुलाई को कारगिल विजय दिवस के रूप में मनाया जाता है, आज हमारे सेना के जवान वहां परेड कर रहे हैं, कई जवान जो वहां शहीद हुए हैं, उनकी विधवाएं, उनकी बहनें उनकी माएं वहां पर हैं । मैं आपसे विनम्र अपील करना चाहता हूं कि इसका उल्लेख कार्यसूची में तो नहीं है लेकिन अगर आप विशेषाधिकार से इसको भी कार्यसूची में जोड़कर श्रद्धांजलि देंगे तो हमारे देश को जवानों के लिए एक अच्छा संदेश जाएगा । कारगिल युद्ध में जिन्होंने अपनी जान की बाजी लगाकर देश की सुरक्षा और अखंडता की रक्षा की है । इन सभी महापुरूषों को और वीर जवानों को अपनी श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूं धन्यवाद्।

समय :

12:00 बजे

श्री शिवरतन शर्मा (भाटापारा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हम आज सदन में सार्वजनिक जीवन में काम करने वाले 9 व्यक्तियों को श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं। इन 9 सदस्यों में से 3 सदस्यों आदरणीय गुलाब सिंह जी, आदरणीय बद्रीधर दीवान जी और आदरणीय शक्राजीत नायक के साथ इस सदन में हमें काम करने का अवसर मिला । आदरणीय बद्रीधर दीवान जी के बारे में बृजमोहन जी ने बहुत सी बातें कहीं। दीवान जी मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ में चार बार विधान सभा के सदस्य चुने गए । इसके पूर्व भी उन्होंने लोकसभा और विधान सभा के चुनाव भी बहुत ज्यादा बार लड़े और उस अवधि में लड़े, जिस अवधि में जनसंघ की स्थापना हुई थी और यह माना जाता था कि जीतने के कोई चांस नहीं हैं, जमानत बच जाएगी तो एक बड़ी उपलब्धि होगी, उस अवधि में एक विचारधारा के लिए समर्पित होकर वे चुनाव में मैदान में उतरते थे ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, श्रीमती करूणा शुक्ला जी 1993 में बलौदाबाजार विधान सभा क्षेत्र से मध्यप्रदेश विधान सभा की सदस्य चुनी गईं और पहली बार चुने जाने के बाद ही उनको मध्यप्रदेश विधान सभा में उत्कृष्ट विधायक का भी पुरस्कार प्राप्त हुआ, सभापति तालिका की सदस्य भी रहीं । बलौदाबाजार विधान सभा परिसीमन के पहले भाटापारा ब्लॉक का आधा हिस्सा बलौदाबाजार विधान सभा क्षेत्र में आया करता था । एक पार्टी में और ब्लॉक का काम होने के कारण लगातार उनसे मेरा सम्पर्क रहा । उनका स्नेह भी प्राप्त हुआ, आक्रोश भी झेला, पर मुझे यह कहने में संकोच नहीं है कि सार्वजनिक जीवन में दृढ़ता के साथ अपनी बातों को रखने की क्षमता श्रीमती करूणा शुक्ला में जितनी थी, बहुत कम लोग इस प्रवृत्ति के होते हैं, नहीं तो लोग थोड़ा सा लाभ देखकर अपने मन की बात को व्यक्त नहीं कर पाते । चाहे कहीं कोई भी व्यक्ति हो, जो उनके मन में बात है, उस बात को वे दृढ़ता के साथ रखती थीं । जब उन्होंने दल-बदल किया और कांग्रेस की सदस्य बनीं तो मैं व्यक्तिगत रूप से उनसे बातचीत करता था तो मैं उनको बोलता था कि आपका निर्णय गलत हो गया तो वे अपने पक्ष को रखते हुए

कहती थीं कि शिवरतन, कुछ बातें जो भारतीय जनता पार्टी से मैंने सीखी है, उसको मैं कांग्रेस में लागू करने का प्रयास कर रही हूं और मैंने उस मैंनेजमेंट के प्रशिक्षण का अभियान चलाया है और कांग्रेस को इस काम को करने के लिए मैंने प्रेरित किया था, यह मुझे वे बोला करती थीं । आज वे हमारे बीच में नहीं हैं, मैं उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय सोमप्रकाश गिरि हमारे जिले के बहुत ही वरिष्ठ नेता थे, संघर्षशील नेता थे । संघर्ष करने के साथ-साथ उनकी एक बड़ी खासियत यह थी कि वे छत्तीसगढ़ी का हाना बहुत जोरदार सुनाते थे । माने उनके साथ कोई व्यक्ति प्रवास पर रहता था तो हाना सुना-सुनाकर वे इतना हंसा डालते थे कि किसी व्यक्ति को समय का अहसास नहीं होता था । दूसरी खासियत संघर्ष करने की क्षमता तो उनके साथ थी ही ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय रामाधार कश्यप जी इस सदन के लिए निर्वाचित हुए, पर शपथ नहीं ले पाये क्योंकि राज्यसभा में रहना उन्होंने ज्यादा पसंद किया ।

माननीय अध्यक्ष जी, माननीय खेलनराम जांगड़े जी के साथ सदन में कभी काम करने का अवसर नहीं मिला, पर ट्रेन में इनके साथ कई बार मेरी मुलाकात होती थी, बातचीत होती थी । इन सबके प्रति मैं विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं । परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता हूं कि इन्हें अपने श्रीचरणों में स्थान दें ।

श्री मोहन मरकाम (कोण्डागांव) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, श्री गुलाब सिंह जी, श्री सोमप्रकाश गिरि जी, श्री बालाराम वर्मा जी, श्रीमती करूणा शुक्ला जी, श्री बद्रीधर दीवान जी, डॉ. शक्राजीत नायक जी, श्री रामाधार कश्यप जी, श्री बलराम सिंह बैस जी, श्री खेलनराम जांगड़े जी को मैं श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, गुलाब सिंह जी छात्र जीवन से ही राजनीति के गलियारों में चल पड़े थे । उन्होंने अविभाजित मध्यप्रदेश के भिंड से बी.ए. की पढ़ाई की थी । गोहद महाविद्यालय से अध्यक्ष के पद पर भी रहे । उनके राजनीतिक जीवन काल की बात की जाये तो 1994 में राजनीतिक गलियारों पर अपना पहला कदम रखना शुरू किया, इस दौरान जनपद पंचायत और जिला पंचायत के दोनों चुनाव लड़े और जीते, इसके बाद जनपद से इस्तीफा देकर जिला पंचायत में रहे, इसके बाद विधायक भी बने ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, रामाधार कश्यप जी छात्र जीवन से ही राजनीति में सक्रिय थे । छत्तीसगढ़ राज्य के गठन की मांग को लेकर मध्यप्रदेश विधान सभा में पर्चा फेकते हुए पकड़े गए और सजा भी हुई, लेकिन इस घटना ने रामाधर कश्यप जी को सुर्खियों में ला दिया । छत्तीसगढ़ का गठन हुआ तो तत्कालीन मुख्यमंत्री अजीत जोगी जी ने वर्ष 2002 में उन्हें राज्यसभा भेजा । सांसद रहते हुए भी उन्हें सन् 2003 में अकलतरा विधानसभा के लिए टिकट भी मिली और उन्हें जीत भी मिली।



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

माननीय अध्यक्ष जी, करूणा शुक्ला जी छत्तीसगढ़ शासन में समाज कल्याण बोर्ड की अध्यक्षीय पद के दायित्वों का निर्वहन करते हुए, कोरोना संक्रमित होने के कारण दिनांक 27 अप्रैल, 2021 को निधन हो गया। वे सन् 1993 में पहली बार मध्यप्रदेश विधानसभा में सदस्य रहीं। उसके बाद 14वीं लोकसभा में सदस्य के रूप में समाज सेवा की। सन् 2013 से 2018 के बीच तत्कालीन प्रदेश अध्यक्ष और माननीय मुख्यमंत्री जी के साथ कंधे से कंधा मिलाकर छत्तीसगढ़ में कांग्रेस पार्टी के लिए लड़ाईयां लड़ीं। हमारे जितने भी संकल्प शिविर हुआ करते थें, उसमें हमारे कार्यकर्ताओं को रिचार्ज करने का काम करती थीं। जब हम सन् 2018 में सरकार में आये तो कहीं न कहीं एक टीम भावना के साथ माननीय मुख्यमंत्री जी के साथ काम किया है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, डॉ. शक्राजीत नायक जी प्रोफेसर की नौकरी छोड़कर राजनीति में आये और कांग्रेस की सरकार में जल संसाधन मंत्री रहें। हमारे पूर्व वक्ताओं ने उनके बारे में विस्तार से बताया है। हम उनके योगदान को भी नहीं भूल सकते हैं। सोमप्रकाश गिरि जी का जन्म 01 दिसम्बर, 1932 को हुआ। उन्होंने सन् 1990 में कुरूद विधानसभा सीट से भारतीय जनता पार्टी की टिकट से विधायक बनें और 1993 में कांग्रेस के टिकट से विधायक बनें। जब वे जीवित थे, तब हम लोगों को उनसे मिलने का मौका मिला था। उनका जिंदादिल देखकर हमें भी बहुत कुछ सीखने का मौका मिला। माननीय बद्रीधर दीवान जी, जो पिछले विधानसभा में विधानसभा उपाध्यक्ष रहें। उनका अनुभव और उनके उस उम्र में भी सक्रियता देखकर हम जैसे विधायकों को बहुत कुछ सीखने का मौका मिलता है। माननीय अध्यक्ष जी, मैं सभी दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए अपनी बातों को समाप्त करता हूं।

श्री पुन्नूलाल मोहले (मुंगेली) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे सभी मृत आत्मओं के निधन पर दु:ख व्यक्त करता हूं। माननीय गुलाब सिंह जी, माननीय सोमप्रकाश गिरि जी, माननीय बालाराम वर्मा जी, माननीय श्रीमती करूण शुक्ला जी, माननीय बद्रीधर दीवान जी, माननीय शक्राजीत नायक जी, माननीय रामाधार कश्यप जी, माननीय बलराम सिंह बैस जी, माननीय खेलनराम जांगड़े जी, मैं इन सभी को अपनी श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं। इनमें से बहुत से ऐसे माननीय सदस्य हैं, जिनके साथ मुझे विधानसभा और लोकसभा में काम करने का अवसर मिला। हमारे सोमप्रकाश गिरि जी मध्यप्रदेश विधानसभा के सदस्य रहे हैं। मैं सोमप्रकाश जी के बारे में बताना चाहूंगा कि उस समय तत्कालीन मुख्यमंत्री माननीय पटवा जी थे। पटवा जी के साथ मीटिंग चल रही थी और मीटिंग में झड़प हो गई। मीटिंग में काफी तीखी बात कही, पटवा जी तो वैसे ही सशंकित व्यक्ति थे और तीखे थे। उस मीटिंग में सभी लोग आश्चर्य हो गये। आखिर में मैंने पटवा जी और सोम प्रकाश जी, दोनों के बीच में जाकर कहा कि पटवा जी, वह जो बोल रहे हैं, वह सही है। इसके बारे में गंभीरता से सोचिये। हम लोग छत्तीसगढ़ से आते हैं और आपको छत्तीसगढ़ वालों की बोली और भाषा को समझना चाहिए और सहानुभूति रखना

चाहिए। आखिर में पटवा जी मान गये, वे बोले कि ठीक है हम भविष्य में दोनों की बातों को विचार में लायेंगे। मेरे कहने का मतलब यह है कि वे ऐसे थे, जो मुख्यमंत्री जैसे व्यक्ति से भी डरते नहीं थे। अगर मैं करूणा शुक्ला जी बारे में बात करूं तो करूणा शुक्ला जी, हमारे साथ सांसद थीं। हम उनको भाभी के नाम से जानते थे। क्योंकि वह मुंगेली विधानसभा क्षेत्र की थीं। वह बहुत ही अच्छी प्रतिक्रियावादी थीं। जब वह भाषण करती थीं तो लोगों को रिझा देती थीं। हम लोग भी दौरे में जाते थे। उनकी राजनीति में सक्रिय थीं और मुंगेली विधानसभा क्षेत्र में सक्रिय रहीं और हमें उनका प्यार मिलते रहा। मैं उनको श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, बद्रीधर दीवान जी, हमारे पितातुल्य थे। वे बिलासपुर के थे और बिलासपुर के सांसद होने के नाते हमें उनसे बहुत प्यार मिला और उन्होंने हमें जिताने में बहुत सहयोग दिया। वे हमारे पालक के रूप में थे, जैसा कौशिक जी ने कहा। हम अपने आप को बालक समझते थे और वे पालक थे। भारतीय जनता पार्टी को आगे बढ़ाने में उनका योगदान रहा। उस समय के तत्कालीन सांसद माननीय केशरवानी जी थे, वे मुंगेली से थे। वे जिला के जिलाध्यक्ष थे और सक्रिय रहकर मुंगेली जिला और पूरे छत्तीसगढ़ में भारतीय जनता पार्टी को आगे बढ़ाने का काम किया। मैं उनको श्रद्धासुमन अर्पित करता हूँ । डॉ.शक्राजीत नायक जी, हम लोग भाई चारे के साथ काम करते थे, पहले हम एक ही पार्टी में रहे, वे दो बात बोलते थे, हम लोग भी प्रश्न में फुलझड़ी करके चर्चा करते थे । लोगों में अच्छे विचार विधान सभा में पैदा होती थी । मैं उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित करता हूँ । कृषि के क्षेत्र में कार्य किया, वैज्ञानिक के क्षेत्र में कार्य किया, उनको मैं नमन करता हूँ । रामाधार जी कश्यप, पूर्व सांसद थे, पारिवारिक संबंध रहा । हर समय उनके परिवार से जुड़े रहते थे, आते-जाते थे, और बहुत सी उन्होंने शिक्षा दी कि आपको यह करना है, समाज के बीच में रहना है, इस तरह से कार्य करते थे, इसके लिए मैं बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूँ । श्री खेलनराम जांगडे, उनका मैं एक ही उदाहरण दूंगा, वे हमारे साथ चुनाव लड़े । जब हम एक साथ चुनाव लड़े, एक साथ प्रचार करते थे, खेलन राम जी बोलते थे, चलो मोहिले जो हम लोग एक गाड़ी में बैठते हैं, जनता जिसको वोट देना है, देंगे । लुक छिपकर हम लोग रहते थे, कि इस पार्टी से हैं या उस पार्टी से हैं । उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा थी, जब किसी समाज में झगड़ा हो जाता था, दोनो मिलकर जाते थे, कहते थे, वहां जाना है, चलना है । उन्होंने वहां पर सामाजिक वातावरण बनाने का बहुत अच्छी कोशिश किये । उनको बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूँ, उनकी आत्मा को शांति मिले । उनको श्रद्धासुमन अर्पित करते हुये अपनी वाणी को विराम देता हूँ । धन्यवाद । जय हिन्द, जय भारत, जय छत्तीसगढ़ ।

अध्यक्ष महोदय :- रजनीश सिंह जी । संक्षिप्त में अपनी बात रखें ।

श्री रजनीश सिंह (बेलतरा) :- अध्यक्ष महोदय, जिन 9 विभूतियों को आज हम यहां श्रद्धांजलि दे रहे हैं, वह इस सदन के नहीं, बल्कि पूरे छत्तीसगढ़ के राजनीतिक क्षेत्रों में काम करने वालों के प्रेरणा

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

के केन्द्र बने रहेंगे । मैं जिस विधान सभा से निर्वाचित हुआ हूँ, श्री बद्रीधर जी दीवान, 1990 में सीपत विधान सभा से चुनाव लड़ रहे थे, उस समय नया-नया कुछ वर्ष काम करते हुआ था, उसके बाद वर्ष 2018 तक सभी चुनावों में माननीय दीवान जी के साथ रहा । चुनाव में सहयोगी के रूप में काम किया । 25-27 सालों में बहुत संस्मरण है । माननीय दीवान जी, सहज और सरल होने के साथ, लीडर के रूप में भी रहते थे, ऐसा बेबाक अपनी बात रखते थे । संस्मरण बहुत है, एक छोटा संस्मरण याद आता है, प्रेरणा भी देता है । छत्तीसगढ़ बनने के बाद वर्ष 2003 में जब चुनाव हो रहा था, सीपत विधान सभा में चतुष्कोणीय मुकाबला था, बहुत नेट टू नेट था । छठवें, सातवें चरण के चुनाव तक भारतीय जनता पार्टी के माननीय दीवान जी चौथे नंबर पर थे, उसके बाद भी जब मैं नजदीक आता था, तो बोलते थे कि इस बार चेंज होगा, चुनाव जीत जाबो अइसे लागथे, उनका जो आत्म विश्वास और धैर्य वहां पर जो आगे पीछे हो  रहे थे, तीनों उम्मीदवारों को देखता था, माननीय दीवान जी के चेहरे को देखता था, बिल्कुल एकदम धैर्य के साथ, कहीं कोई चेहरे पर शिकन नहीं । माननीय दीवान जी 299 वोट से वह चुनाव जीते । एक ऐसे आत्मविश्वास और धैर्य रखने वाले, जीवट नेता थे, उनका हमेंशा पुत्रवत सम्मान मिला । आदरणीय करूणा शुक्ला जी, वर्ष 2004 से 2009 तक सांसद रही । तब भी पांच-छै: साल उनके साथ बहुत दौरा किये, करूणा शुक्ला जी तो दीपावली के दिन भी रात को 11-12 बजे तक दौरा करती थी । गांव में जाते थे तो वहां लोग परेशान हो जाते थे कि दीपावली के दिन आप 10 बजे, 11 बजे, दौरा करती है । इतना दौरा और इतना संघर्षशील करने वाली नेता का निधन हुआ है, निश्चित रूप से हमारे प्रदेश के 9 जो प्रतिभाशाली जनप्रतिनिधि थे, उनके निधन से हम सब को अपूरणीय क्षति हुई है । मैं उनको श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ और कारगिल के जवानों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुये अपनी बात समाप्त करता हूँ ।

अध्यक्ष महोदय :- श्री नारायण चंदेल ।

श्री नारायण चंदेल (जांजगीर)  :- माननीय अध्यक्ष महोदय, 9 राजनेताओं का, विधायकों का, सांसदों का उल्लेख, आपने किया है, आपकी भावनाओं से हम अपने आपको समाहित करते हैं । माननीय अध्यक्ष जी, माननीय करूणा शुक्ला जी, जांजगीर लोक सभा क्षेत्र से सांसद थे । उनका चुनाव संचालक भी उस समय मैं था। लेकिन वह प्रखर व्यक्तित्व की धनी थी । मुखरता के साथ में अपनी बात को रखना, निर्भिकता के साथ में अपनी बात को रखना, यह करूणा शुक्ला जी की विशेषता थी। माननीय बद्रीधर दीवान जी भी जांजगीर लोकसभा क्षेत्र से प्रत्याशी रहे। वह बाद में विधानसभा उपाध्यक्ष बने। वह एक बार मध्यप्रदेश विधानसभा में और 3 बार इस सदन के सदस्य निर्वाचित हुए। माननीय रामाधार कश्यप जी जांजगीर के पालसी चोरभट्टी गांव के रहने वाले थे और वह एक फक्कड़ राजनेता थे। उनका जो एक छत्तीसगढ़िया स्वभाव था, सहजता, सरलता, विनम्रता के साथ सबसे मिलना, बातचीत करना,

चर्चा करना उनके स्वभाव में था। अभी जब उनका निधन हुआ तो उनके शोक कार्यक्रम में हम सब लोग शामिल हुए थे।

माननीय अध्यक्ष महोदय, डॉ. शक्राजीत नायक जी के बारे में धर्मजीत सिंह जी ने निश्चित रूप से जिस चीज का जिक्र किया, टर्न-की पद्धति उनकी देन थी। माननीय जोगी जी जिस समय मुख्यमंत्री थे, उन्होंने टर्न-की पद्धति से जांजगीर-चांपा जिले में नहर का निर्माण कराया। बहुत कम समय में बहुत सी बातें भी हुईं। हम लोग विपक्षी विधायक के रूप में उस नहर की जांच कमेटी में जांच करने भी गये थे। लेकिन अत्यन्त अल्प समय में उस नहर का निर्माण हुआ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आज कारगिल दिवस है। कारगिल में जो जवान शहीद हुए हैं, पूरा देश उनको नमन करता है। उनके श्री चरणों को प्रमाण करता है। उनके प्रति हम सब लोग विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। आपने जिन 9 राजनेताओं का जिक्र किया, आज वह हमारे बीच में नहीं हैं। हम सभी को श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने बोलने का अवसर दिया, उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री केशव प्रसाद चन्द्रा (जैजेपुर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमने 9 विभूतियों श्री गुलाब सिंह जी, श्री सोमप्रकाश गिरि जी, श्री बालाराम वर्मा जी, श्रीमती करूणा शुक्ला जी, श्री बद्रीधर दीवान जी, डॉ.शक्राजीत नायक जी, श्री रामाधार कश्यप जी, श्री बलराम सिंह बैस जी, श्री खेलनराम जांगड़े जी को खोया है, जिनका जिक्र आज छत्तीसगढ़ विधानसभा में हो रहा है। यह राजनीतिक और सामाजिक जीवन में पूरे सक्रिय रहे और राजनीति में जनप्रतिनिधि के रूप में चुन करके लोगों के हित में इन्होंने काम किया है। आज इनके नहीं रहने से निश्चित रूप से छत्तीसगढ़ के सभी क्षेत्रों में क्षति हुई है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं विशेष रूप से डॉ. शक्राजीत नायक जी का जिक्र करना चाहता हूं। जब माननीय जोगी के निधन का जिक्र हुआ था, उस दिन भी मैंने इस बात का जिक्र किया था कि उनके कार्यकाल में हंसदो बाईं तट केनाल का निर्माण हुआ था। मात्र 16 महीने में टर्न-की पद्धति से वह केनाल का निर्माण पूरा हुआ। आज बाईं तट केनाल पर रहने वाले लोगों के खेतों में अगर पानी जा रहा है तो वह इनके कार्यकाल की देन है। मैंने सभी व्यक्तियों के साथ सदन में कभी काम नहीं किया, लेकिन एक दिन डॉ. शक्राजीत नायक जी से मंत्रालय में मुलाकात हो गई। मैंने उनको बताया कि मैं केशव चन्द्रा हूं। उनको प्रणाम किया। वह मेरे को केन्टीन में बुला करके चाय पिलाये। वह बोले कि जब आप बोलते हैं तो किसानों के हित में आपकी बात रहती है। किसानों के प्रति उनका इतना ज्यादा लगाव था, उन्होंने कहा कि सदन में जब तक रहोगे, निश्चित रूप से छत्तीसगढ़ के किसानों के हक पर आपकी बात प्रमुखता से होनी चाहिए। यह उनका किसानों के प्रति प्रेम था। मैं सभी 9 विभूतियों को अपने दल की तरफ से, अपनी तरफ से श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं। माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने बोलने के लिए समय दिया, उसके लिए धन्यवाद।

डॉ. रमन सिंह (राजनांदगांव) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने जिन 9 विभूतियों के निधन का उल्लेख किया, आपके विचार से मैं अपने आपको संबद्ध करता हूं। कोविड काल में हमने बहुत वरिष्ठ साथियों को खोया है। श्री गुलाब सिंह जी, श्री सोमप्रकाश गिरि जी, श्री बालाराम वर्मा जी, श्रीमती करूणा शुक्ला जी, श्री बद्रीधर दीवान जी, डॉ.शक्राजीत नायक जी, श्री रामाधार कश्यप जी, श्री बलराम सिंह बैस जी, श्री खेलनराम जांगड़े जी, इन सबके साथ कहीं न कहीं जुड़कर काम करने का राजनीतिक जीवन में अवसर मिला। इनसे बहुत कुछ सीखने का भी अवसर मिला। आज ईश्वर से कामना करता हूं कि इन विभूतियों को अपने चरणों में स्थान दे। आज कारगिल दिवस के अवसर पर शहीदों को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

अध्यक्ष महोदय :- मैं सदन की ओर से शोकाकुल परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता हूं। कारगिल विजय दिवस के अवसर पर मैं भारत के शहीद सपूतों के परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करते हुए सभी दिवंगत आत्माओं के सम्मान में सदन 02 मिनट के लिए मौन धारण करेगा।

**(सदन द्वारा खड़े रहकर दो मिनट का मौन धारण किया गया)**

अध्यक्ष महोदय :- दिवंगतों के सम्मान में सदन की कार्यवाही 10 मिनट के लिए स्थगित।

**(12.22 से 12.40 बजे तक कार्यवाही स्थगित रही)**

समय :
12:40 बजे **(अध्यक्ष महोदय (डॉ.चरणदास महंत) पीठासीन हुए)**

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, पूरे देश के इतिहास में पहली बार इस सदन के दो सदस्यों ने, एक सदस्य ने आरोप लगाया कि एक मंत्री मेरी हत्या करवाना चाहता है। (शेम-शेम की आवाज) आज तक इतनी दुर्भाग्यजनक घटना नहीं हुई है। वह दोनों इस सदन के सदस्य हैं।

अध्यक्ष महोदय :- यह तो हो जाने दीजिए। मैं आपकी बात सुनूंगा। यह शासकीय कार्य हो जाने दीजिए।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इससे महत्वपूर्ण विषय कुछ नहीं है। अगर सदन के सदस्यों की ही जान सुरक्षित नहीं है तो फिर सदन की बाकी कार्यवाही करने का औचित्य क्या है?

अध्यक्ष महोदय :- मैं आपकी बात सुनूंगा।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, और इस सदन के दोनों सदस्य हैं और एक के ऊपर आरोप लगा है कि मेरी हत्या करवाना चाहते हैं। कहते हैं कि हत्या, यह मंत्री करवाना चाहते हैं।



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अध्यक्ष महोदय :- एक मिनट। आप मेरी बात सुनिए।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह बहुत महत्वपूर्ण बात है और बहुत दुर्भाग्यजनक है। देश के इतिहास में ...।

अध्यक्ष महोदय :- एक मिनट। अभी सदन में दोनों नहीं है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- देश के इतिहास में, इससे ज्यादा महत्वपूर्ण और कोई विषय नहीं हो सकता।

श्री सौरभ सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, विधायक ही सुरक्षित नहीं हैं।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह बहुत दुर्भाग्यजनक है।

अध्यक्ष महोदय :- आप मेरी बात तो सुन लें। (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इस सदन में उस घटना से (व्यवधान) नहीं जाना चाहिए।

अध्यक्ष महोदय :- अभी सदन में दोनों नहीं है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- नहीं। वह मत रहें, वह सदन में न रहें। परंतु हमको तो चिंता है।

अध्यक्ष महोदय :- मैं अभी इस विषय को लेता हूँ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :-माननीय अध्यक्ष जी सदन की कार्यवाही आगे बढ़ने से पहले उस विषय के ऊपर में निर्णय होना चाहिए। अगर इस सदन के सदस्य ही सुरक्षित नहीं हैं तो हम सदन में क्या बात करेंगे?

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय,यह मामला एक मंत्री के ऊपर है। सत्तारूढ़ पार्टी के विधायक ने लगाया है।

श्री अमितेष शुक्ल :- माननीय अध्यक्ष महोदय,सदस्य को तो आने दीजिए। वह सदन में आ जाये, उसके बाद चर्चा चालू करे।(व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, विधायक ने मंत्री के ऊपर आरोप लगाया है।

श्री अमितेष शुक्ल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य को तो आने दीजिए। वह सदन में आ जाये, उसके बाद चर्चा चालू करे।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यदि इस प्रदेश में विधायक सुरक्षित नहीं हैं तो यह मंत्रीगण किसी के साथ भी ऐसा करवा सकते हैं। (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सिंहदेव कराना चाहते हैं मेरी हत्या, (शेम-शेम की आवाज) बृहस्पत, विधायक बृहस्पत सिंह ने किए सिंहदेव पर गंभीर आरोप, कहा कि महाराजा मेरी हत्या कराना चाहते हैं। यह राष्ट्रीय पेपर में छपा है छत्तीसगढ़ कांग्रेस में खटपट, स्वास्थ्य मंत्री श्री टी.एस.सिंहदेव ने मुझ पर कराया जानलेवा हमला।



अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री नारायण चंदेल :- यह बहुत लज्जाजनक है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इससे ज्यादा लज्जाजनक घटना नहीं हो सकती।

अध्यक्ष महोदय :- मैंने तो यह नहीं कहा।

श्री नारायण चंदेल :- यह बहुत लज्जाजनक है।जउहर होगे।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप भी लोकसभा के सदस्य रहे हैं। देश के इतिहास में आज तक किसी सदन में किसी सदस्य ने अपने मंत्री के ऊपर में आरोप लगाया हो कि मेरी हत्या करवाना चाहते हैं। इससे गंभीर विषय कोई नहीं हो सकता। हम चाहते हैं।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय,अपनी ही के विधायक ने आरोप लगाया है। (व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप इस सभा के संरक्षक हैं। एक विधायक एक माननीय मंत्री के ऊपर कहा है सभी राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय सभी मीडिया में यह बात है और यह बहुत ही गंभीर विषय है। कोई नियम प्रक्रिया का कोई औचित्य नहीं है। यदि विधायक संरक्षित नहीं हैं तो और यदि मंत्री के ऊपर आरोप सही है तो मंत्री के द्वारा कोई भी (व्यवधान)उपलब्ध करवा दें। कोई भी मंत्री किसी भी सदस्य के साथ यह प्रक्रिया अपना सकता है फिर यह परंपरा बन जाएगी।

श्री अरूण वोरा :- माननीय चंद्राकर जी ज्यादा ही हो रहा है।

श्री अजय चन्द्राकर :- कोई भी मंत्री किसी भी सदस्य के बोलने पर ऐसी धमकी देगा।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय,यह विधायिका पर खतरा है।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, दूसरी जो राजनीतिक स्थिति है इस में कोई कांसपरेंसी तो नहीं है। (व्यवधान)

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय,नहीं, यह विधायिका पर खतरा है।

श्री अजय चन्द्राकर :- हमारा कोई विधायक, मंत्री कांसपरेंसी का शिकार तो नहीं है।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आज से विधान सभा शुरू हो रही है और कल माननीय विधायक के ऊपर हमला होता है। यह विधायिका पर हमला है।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपको स्वत: संज्ञान लेना चाहिए। यह सदस्यों और विधायिका का मामला है। इसमें आपकी व्यवस्था आनी चाहिए।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप सरकार को निर्देशित करिए। इसमें सरकार का वक्तव्य आना चाहिए।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप सदन की समिति से जांच करवाईये।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सरकार का वक्तव्य आये।



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सरकार का वक्तव्य आये।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सदन की समिति से जांच करवाईये।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मंत्री विधायकों की कोई सरकार एजेंसी जांच नहीं कर सकती तो उसकी न्यायिक जांच होनी चाहिए।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय,आप सदन की कमेटी से जांच करवाईये।

संसदीय कार्यमंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- माननीय अध्यक्ष महोदय,...।

अध्यक्ष महोदय :- एक मिनट। मैं पुराने गृहमंत्री जी से सुनना चाहता हूँ। गृहमंत्री जी से सुन लेते हैं कि वह क्या बोलते हैं ? ननकीराम जी बोलिए, आपको क्या बोलना है ?

श्री ननकीराम कंवर :- माननीय अध्यक्ष महोदय,आप ही हमारे संरक्षक हैं। अगर हम आपके रहते, अगर संरक्षित न हों तो निश्चित रूप से प्रदेश का दुर्भाग्य है इसलिए मेरा मानना है कि आप इसको डायरेक्ट संज्ञान में लें और कार्यवाही करवाएं और आज की कार्यवाही स्थगित करें।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सदन के सत्तारूढ़ पार्टी के सदस्य ने एक वरिष्ठ मंत्री पर आरोप लगाया कि वह मेरी हत्या कराना चाहते हैं। वह दोनों इस सदन के सदस्य हैं। कोई जांच एजेंसी इसकी जांच नहीं कर सकती। हम आपसे निवेदन करना चाहते हैं कि इस विषय पर सदन की जांच समिति गठित कर जांच कराने की कृपा करें।

अध्यक्ष महोदय :- माननीय मंत्री जी।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अगर आप चाहें तो मेरे पास माननीय विधायक जी का विडियो है जिन्होंने आरोप लगाया है, आप कहें तो मैं सदन के पटल पर रख देता हूँ। मेरे पास विडियो है। इस विडियो ने उन्होंने कहा है कि टी.एस. सिंहदेव मेरी हत्या करवाना चाहते हैं। इससे बड़ा दुर्भाग्य नहीं हो सकता। सदन का इससे बड़ा विषय नहीं हो सकता। आापको स्वयं संज्ञान लेकर सदन की कमेटी बनाकर इसकी जांच की घोषणा करनी चाहिए और उससे पहले अगर सदन चलता है तो मुझे लगता है कि सदन के चलने का कोई औचित्य नहीं है। अगर इस सदन के सदस्य सुरक्षित नहीं है। मंत्री के ऊपर आरोप लगता है तो इससे भी लज्जाजनक घटना कभी देश के इतिहास में नहीं हुई है। माननीय अध्यक्ष महोदय, इसके बारे में हम उनका कुछ नहीं सुनना चाहते हैं, हम आपसे निर्णय चाहते हैं।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आसंदी से जांच कमेटी की घोषणा हो जाए। यह विधायिका पर हमला है। मध्यप्रदेश के इतिहास में आज तक ऐसा नहीं हुआ है। (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- इनसे क्या सुनेंगे ? (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- चलिये।

श्री अजय चंद्राकर :- आज तक राजनीतिक इतिहास में नहीं हुआ है।(व्यवधान) मध्यप्रदेश के राजनीतिक केस के तहत किसी भी इतिहास में नहीं हुआ है। आज तक एक मंत्री के ऊपर हत्या का आरोप, हत्या की कोशिश का आरोप लगाया जाए। (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- देखिए, मैं सभी विधायकों से आह्वान करना चाहता हूं, ये विधायकों की जान की कीमत के ऊपर में इस सदन में अगर चर्चा होगी तो कोई विधायक सुरक्षित नहीं रहेगा। हमने मध्यप्रदेश में देखा है। (व्यवधान)

श्री अजय चंद्राकर :- यह परंपरा बन जाएगी। हम स्वतंत्र रूप से बात नहीं कर पाएंगे।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- हमने मध्यप्रदेश में देखा है। किसी विधायक के किसी की बात हो तो पूरे विधायक एक हो जाते हैं और सदन से जांच का आह्वान कराते हैं। (व्यवधान) लेकिन आज इनको हो गया है, कल हमको होगा, नरसों अध्यक्ष को होगा..। (व्यवधान)

श्री अजय चंद्राकर :- ये हमको भी धमकी देते हैं। (व्यवधान) सदन में हम अपनी बात नहीं कह पाएंगे। हम लोगों की जान को भी खतरा है। (व्यवधान)

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हम सारे विधायकों की जमीर को जगाना चाहते हैं। यह विधायिका पर हमला है। सत्तू भैया आप चुप बैठिए। (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अब तक विधायकों को दूसरे लोगों ने धमकी दी, इस सदन में विषय चर्चा पर आया। पहली बार जब सत्ता रूढ़ दल के विधायकों ने ..। (व्यवधान)

श्री अजय चंद्राकर :- हमने आरोप नहीं लगाया है। माननीय अध्यक्ष महोदय (व्यवधान) परंपरा बनेगी। स्वतंत्रतापूर्वक विधायिका काम नहीं कर पाएगी।

श्री शिवरतन शर्मा :- हमने आरोप नहीं लगाया है। सत्ता रूढ़ पार्टी के विधायक ने आरोप लगाया है। इस पर सदन की कमेटी से जांच कराई जानी चाहिए। (व्यवधान)

श्री अजय चंद्राकर :- सत्ता रूढ़ बल के दबाव में मंत्रियों के दबाव में यह सदन चलेगा और हम यदि विरोध करेंगे तो वही सोच ढूंढने को मिलेगा जो सोच बृहस्पत सिंह जी की है।

श्री नारायण चंदेल :- तत्काल जांच समिति की घोषणा हो जाये। तत्काल संघ की (व्यवधान) घोषणा हो जाये। (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- माननीय संसदीय कार्य मंत्री जी आप कुछ कह रहे हैं।

श्री ननकीराम कंवर :- आप जांच करा रहे हो कि नहीं जवाब दे दो। आप जांच कराने का आदेश दे दीजिए। (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, विधानसभा सदस्यों के आह्वान करने के बाद तीन दिन पहले ऐसी घटना होना मतलब कहीं न कहीं विधायकों के साथ में उनको भयभीत कर-कर, बृहस्पत सिंह जी विधानसभा में बहुत बोलते हैं तो उनका मुंह बंद करवाने के लिए ऐसी घटना की गयी



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

है और विधायक  सक्षम आरोप लगा रहे हैं। उसके बाद भी अब सरकार क्या जवाब देगी, हम तो चाहते हैं कि आपकी जिम्मेदारी है, आप उसका निर्णय करें और सदन की कमेटी से इसकी जांच की घोषणा करें।

श्री ननकीराम कंवर :- माननीय मंत्री जी जवाब दे रहे हैं। माननीय मंत्री जी जांच करवाएंगे। जांच करवाईये।

श्री अजय चंद्राकर :- हम तो आपसे चाहते हैं, आप व्यवस्था दे दें। स्वतंत्रतापूर्वक काम कर सकें। अपनी भूमिका निभा सके। मंत्री लोग किसी को धमका मत सके।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह विधायकों के विशेषाधिकार का मामला है। यह विशेषाधिकार का मामला है। (व्यवधान)

नेता प्रतिपक्ष (श्री धरमलाल कौशिक) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह जो घटना है मुझे लगता है कि राजनीतिक इतिहास में हम लोगों की जानकारी में पहली घटना है। मध्यप्रदेश की विधानसभा में भी हम लोग रहे हैं और छत्तीसगढ़ के विधानसभा में भी रहे हैं, जोगी जी भी मुख्यमंत्री रहे हैं, डॉ. रमन सिंह भी मुख्यमंत्री रहे हैं, भूपेश बघेल जी मुख्यमंत्री हैं। यह घटना न केवल कांग्रेस के लिए दुर्भाग्यजनक है वरन् छत्तीसगढ़ के लिए दुर्भाग्यजनक है। पूरे हिन्दुस्तान में इस प्रकार की घटना कि सत्ताधारी दल के मंत्री के ऊपर सत्ताधारी दल के वरिष्ठ विधायक आरोप लगाए। वास्तविक में हम लोगों के बोलने के पहले ही सो-मोटो इसमें  कथन होना चाहिए था लेकिन इंतजार करने के बाद भी कोई बोलने को तैयार नहीं है और अपेक्षा आपसे है। यदि ऐसी घटना में उसमें सूक्ष्म जांच नहीं होगी और कल यदि किसी प्रकार की घटना घट गयी तो जवाबदारी किसी की रहे या न रहे हाऊस के अंदर आसंदी की जवाबदारी सुनिश्चित होती है। यहां विधायकों का संरक्षण आपको प्राप्त है। आपके संरक्षण में विधायक अपना विषय यहां पर रखते हैं। यदि जनप्रतिनिधि सुरक्षित नहीं है तो किसके आश्रय में जनप्रतिनिधि आ करके अपनी बात सदन में रखेंगे और किसका संरक्षण प्राप्त होगा ? इसलिए हम सभी की मांग है कि सदन की कमेटी से इसकी जांच होनी चाहिए तह तक जानी चाहिए कि दोबारा ऐसी घटना न हो, ऐसी प्रवृत्ति पर रोक लगे और ऐसी दमनात्मक नीति न हो, यह हम आपसे अपेक्षा करते हैं और मुझे उम्मीद है कि इस घटना को हल्के-फूल्के में लेने की आवश्यकता नहीं है बल्कि घटना के तह तक जाने की आवश्यकता है। यह गंभीर मामला है। हम लोग उसको समाचार पत्र में पढ़ रहे हैं, हम उसको टी.व्ही. में देख रहे हैं कि इस प्रकार की घटना हो गयी है। क्या यह आवश्यक नहीं था कि सबसे पहले इस विषय पर चर्चा हो जाए और जानकारी दी जाए ? हमको टी.व्ही. के माध्यम से जानकारी मिली है कि हमारे विधायक साथी के ऊपर में यह आक्रमण किया जा रहा है। इस प्रकार से उनके जान को खतरा है। माननीय अध्यक्ष महोदय, आपके संरक्षण में चाहते हैं कि न केवल विपक्ष बल्कि आप सत्ताधारी दल के सदस्य के ऊपर में यह जो बातें आई है, विपक्ष के बारे में कई बार जब इस प्रकार की बातें आई तो उस बात को हमने



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

उठाया, लेकिन यह बहुत संगीन मामला है, आप इसमें सदन की कमेटी से जांच की घोषणा कर दीजिये । दूध का दूध और पानी का पानी हो जाए । विधायक को भी न्याय मिले और यदि मंत्री ने गलत किया है तो उसके ऊपर भी और यदि नहीं किया है तो जो भी मामले आये हैं लेकिन आने वाले समय में निश्चिंत होकर के जनप्रतिनिधि अपना काम कर सकें अत: इसमें आपके संरक्षण की आवश्यकता है ।

अध्यक्ष महोदय :- मैंने आपकी पूरी बात सुन ली ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय ।

अध्यक्ष महोदय :- मैंने आपकी बात सुन ली न ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह केवल प्रदेश ही नहीं बल्कि पूरे देश में हमारी विधानसभा का अर्थात् हमको [XX] स्थिति का सामना करना पड़ रहा है । यह [XX][1] स्थिति हो रही है । (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- मैंने आपकी पूरी बात सुन ली और माननीय नेता प्रतिपक्ष जी को भी सुन लिया ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह [XX] स्थिति हो रही है । (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- यहां गृहमंत्री जी भी बैठे हैं, संसदीय कार्यमंत्री जी भी बैठे हैं । (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- हमारी विधानसभा के जितने उच्च हमारे मानदंड बने हैं, आज हमारे छत्तीसगढ़ की विधानसभा के लिये यह ठीक नहीं है । (व्यवधान)

श्री अजय चंद्राकर :- विशेषाधिकार का मामला बनता है । (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- मैंने आपकी बात सुन ली, आप लोग मेरी बात भी तो सुन लीजिये । (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, श्री बृहस्पत सिंह जी की रिपोर्ट के बाद इस सदन के 20 सदस्य उनके घर भी गये, उनके घर में जाकर उनका समर्थन व्यक्त किया । (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- मैं बात की गंभीरता को समझ रहा हूं । मैं आपकी पूरी बात की गंभीरता को समझ रहा हूं ।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, कल हम प्रश्न लगायेंगे, यदि हमको कल कोई मंत्री धमकी देता है तो यह तो विशेषाधिकार का मामला बनता है ।

---

[1][XX] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया ।



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अध्यक्ष महोदय :- यहां गृहमंत्री जी बैठे हैं और माननीय संसदीय कार्यमंत्री जी बैठे हैं, उनका कुछ तो सुनना पड़ेगा । (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ये लोग क्या बोलेंगे, ये तो खुद आपस में लड़ रहे हैं ।

अध्यक्ष महोदय :- जो भी हो लेकिन आप लोगों को सुनना तो पड़ेगा । सुनना पड़ेगा कि नहीं यह बता दीजिए ? (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ये तो खुद लड़ रहे हैं, हम क्या इनकी बातों को सुनेंगे ?

अध्यक्ष महोदय :- आप परम्परा की बात कर रहे हैं, आप यह बता दीजिये कि मैं इनकी सुनूं कि नहीं सुनूं ?

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप सुनने की बात कर रहे हैं । यहां पर तो मंत्रियों के बीच में आज स्थिति यह हो गई है कि पत्राचार के माध्यम से अवगत कराया जाता है, चिट्ठी से बात होती है और चिट्ठी के माध्यम से व्यवहार हो रहा है तो एक मंत्री दूसरे मंत्री के बारे में क्या बोलेंगे ? छत्तीसगढ़ में यह स्थिति बन गई है ।

श्री अजय चंद्राकर :- दोनों एक-दूसरे को चिट्ठी लिखते हैं ।

श्री नारायण चंदेल :- ये एक-दूसरे को कबूतर भेज रहे हैं, चिट्ठी को कबूतर पहुंचा रहा है ।

अध्यक्ष महोदय :- चलिए, चौबे जी आप कुछ कहेंगे ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हम आपसे व्यवस्था चाहते हैं ।

अध्यक्ष महोदय :- मैं दूंगा न भई, क्या अभी तक किसी एक पक्ष को सुनकर कोई व्यवस्था दी गई है, क्या कभी दी गई है ? क्या ऐसी कोई परंपरा है ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सबसे पहले तो आप दोनों सदस्यों को बुलाईये । पहले उनकी बातों को सुनेंगे । यह व्यवस्था का का प्रश्न है । (व्यवधान)

श्री नारायण चंदेल :- आप दोनों सदस्यों को बुला लीजिए ।

संसदीय कार्यमंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- क्या आप निर्देशित करेंगे ? (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आप उन दोनों को बुलाईए ।

श्री रविन्द्र चौबे :- क्या माननीय अध्यक्ष जी को आप निर्देशित करेंगे ? (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- हम आग्रह कर सकते हैं । हम दोनों को सुनना चाहते हैं । (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- मैं निवेदन करना चाहता हूं कि श्री बृहस्पत सिंह जी के यहां कल जो 18 विधायक गये थे, उनको भी बोलने का अवसर देना चाहिए । (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- पहले सुन लीजिए । (व्यवधान)

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री नारायण चंदेल :- उनको बुलवाया जाये ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, किसी मंत्री पर आरोप है तो मंत्री क्या जवाब देंगे ? उसका निर्णय आपको करना है । मंत्रिमण्डल की सामूहिक जिम्मेदारी है, एक मंत्री पर आरोप है मतलब सभी मंत्रियों पर आरोप है और इसलिए वे जवाब नहीं दे सकते । आप श्री बृहस्पत सिंह जी को बुलाईये, आप श्री टी.एस.सिंह देव जी को बुलाईए । आप उन 18 विधायकों को बुलाईये जो कल श्री बृहस्पत सिंह जी के साथ में गये थे । (व्यवधान)

वन मंत्री (श्री मोहम्मद अकबर) :- वे आ रहे हैं ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आसंदी से व्यवस्था आनी चाहिए । आप लोग उन्हें समझा-बुझाकर ला रहे हैं ।

श्री मोहम्मद अकबर :- आ रहे हैं भई, आ रहे हैं । चिंता मत करिए, सब आ रहे हैं । (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- सदन में पढ़ा-लिखाकर नहीं लाते । जब इतनी गंभीर घटना है तो दोनों सदस्य क्यों नहीं आये ? (व्यवधान)

श्री मोहम्मद अकबर :- आ रहे हैं, थोड़ा सा इंतजार करिए । बस पहुंच ही रहे हैं । (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- पहले श्री टी.एस. सिंहदेव जी के ऊपर आरोप लगा और माननीय मुख्यमंत्री जी और अकबर जी आप दोनों पर दबाव डालकर बयान दिलवाने वाले हैं, आप दोनों पर दबाव डालकर उनको पढ़ा-लिखाकर बयान दिलवाने वाले हैं । (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- पूरे मीडिया के माध्यम से देखा है, इलेक्ट्रानिक मीडिया में है । माननीय बृहस्पत सिंह जी का पूरा कथन है, आप कहें तो हम प्रस्तुत करने को तैयार हैं । हम पटल पर रखने को तैयार हैं । (व्यवधान)

श्री धरमलाल कौशिक :- श्री बृजमोहन जी, आप यह कह रहे हैं कि ये डरा-धमकाकर बयान दिये । श्री बृहस्पत सिंह जी तो यही बोल रहे हैं मुख्यमंत्री बनने के लिये विधायक का कत्ल कराना चाहते हैं ।

**(श्री बृहस्पत सिंह, सदस्य का सदन में आगमन होने पर)**

श्री मोहम्मद अकबर :- आ गये, आ गये ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अभी सिखा-पढ़ाकर ला रहे हैं । (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- हम सदन के पटल पर रखने को तैयार हैं । (व्यवधान)

श्री नारायण चंदेल :- जांच कमेटी बन जाये ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष जी, सरकार के ऊपर में चूंकि आरोप है इसलिए निर्णय आपको करना चाहिए । सदन की कमेटी से जांच की घोषणा हो और एक समयलिमिट में उसकी

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

जांच होकर सामने आ जाये यह महत्वपूर्ण है  क्योंकि सरकार के ऊपर ही आरोप है। सरकार के मंत्री पर आरोप है। उनकी सामूहिक जिम्मेदारी है।

अध्यक्ष महोदय :- अग्रवाल जी, आप बताइए कि किसी एक पक्ष को सुनकर निर्णय दिया जाता है क्या? आप मुझे बता दीजिए कि कहीं भी एक पक्ष को सुनने के बाद निर्णय होता है क्या? जब तक मैं दूसरे पक्ष को नहीं सुन लूं..।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- नहीं, दूसरा पक्ष तो सार्वजनिक है। समाचार पत्रों में है। वीडियो में है।

अध्यक्ष महोदय :- ऐसा थोड़े न होता है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- वह आरोपी हैं। आरोपी से आप क्या सुनेंगे?

श्री अजय चन्द्राकर :- जिन लोग घटना में शामिल हैं, उनसे क्या सुनेंगे (व्यवधान)

श्री कुलदीप जुनेजा (रायपुर नगर उत्तर) :- अभी आपने कहा कि विधायक जी को बुलाओ, तो विधायक जी तो आ गये हैं।

अध्यक्ष महोदय :- माननीय चौबे जी। (व्यवधान)

श्रम मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- माननीय अध्यक्ष जी, ये वीडियो वीडियो बोलते हैं। ननकीराम कंवर जी गृहमंत्री थे और दारू वाले उनका अपहरण करके ले गये थे। मालूम है? उसका भी वीडियो है या नहीं है? (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- जो आरोपी है, वह जवाब दे, यह उचित थोड़े न है। इसका निर्णय आपको करना चाहिए।

कृषि मंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी बृजमोहन जी ने व्यवस्था का प्रश्न उठाया। माननीय नेता प्रतिपक्ष जी ने व्यवस्था का प्रश्न उठाया। आपने अपनी बात अखबारों की कतरन के आधार पर सदन में कह दी, लेकिन सरकार का पक्ष सुन ही नहीं रहे हैं। (व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- वीडियो है। (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- वीडियो है। हम सदन के पटल पर रख देंगे। (व्यवधान)

श्री रविन्द्र चौबे :- सरकार का पक्ष सुनेंगे।

श्री अजय चन्द्राकर :- सरकार तो आरोपी है। आप व्यवस्था की क्या बात करते हो। आप क्यों बता रहे हो ?(व्यवधान)

श्री सौरभ सिंह (अकलतरा) :- सरकार आरोपी है। एक सम्मानित विधायक का आरोप है। (व्यवधान)

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष महोदय, इस पर जवाब आना चाहिए। किसी मंत्री पर विधायक आरोप लगाता है, [XX][2]। (शेम-शेम की आवाज) यह सदन के लिए [XX]। किसी मंत्री पर आरोप लगाया जाये।(व्यवधान) [XX]।

श्री रविन्द्र चौबे :- आप बात तो सुनें। (व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- आरोपी की बात क्यों सुनेंगे? (व्यवधान)

श्री रविन्द्र चौबे :- लेकिन आपने जो कहा तो आपको सुनना तो पड़ेगा।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, व्यवस्था आ जाये। (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- [XX]। हम आपसे व्यवस्था चाहते हैं। (व्यवधान)

श्री नारायण चंदेल (जांजगीर-चांपा) :- आपकी व्यवस्था आ जाये।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मंत्री जी की जब बात है तो यहां पर संवेदनहीनता इतनी है। यहां संवादहीनता है। ऐसे मंत्री क्या जवाब देंगे कि एक केबिनेट मंत्री दूसरे केबिनेट मंत्री को पत्राचार करे और आजू-बाजू बैठकर उसका जवाब दे।

श्री अजय चन्द्राकर :- आजू-बाजू बैठने वाले हैं।

श्री शिवरतन शर्मा :- मुख्यमंत्री जी को पत्राचार कर रहे हैं। यहां भी संवादहीनता है। (व्यवधान)

श्री धरमलाल कौशिक :- इस मंत्रिमंडल में यह संवादहीनता की स्थिति है और जिस प्रकार से यह सरकार चल रही है, आज उसका परिणाम सामने है कि विधायक सुरक्षित नहीं है।

श्री अजय चन्द्राकर :- आरोप यह आया है कि मेरी हत्या से मुख्यमंत्री बन सकते हैं।

श्री सौरभ सिंह :- हां, यह आरोप लगाया है कि मेरी हत्या से मुख्यमंत्री बन सकते हैं। (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- चूंकि यह आरोप मुख्यमंत्री पद से जुड़ा हुआ आरोप है।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय सदस्य आ गये हैं।

श्री सौरभ सिंह :- माननीय सदस्य की पीड़ा है।

श्री धरमलाल कौशिक :- यह बहुत गंभीर मामला है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- मुख्यमंत्री पद जो हैं, वह हत्या के कटघरे में है और जब मुख्यमंत्री पद हत्या के कटघरे में हो कि मुख्यमंत्री बनने के लिए मेरी हत्या करवा सकते हैं तो ऐसे विषय पर फिर सरकार कैसे जवाब देगी। (व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- हम आपसे हाथ जोड़कर आग्रह करते हैं।

श्री सौरभ सिंह :- हाथ जोड़कर आग्रह करते हैं।

श्री शिवरतन शर्मा :- हाथ जोड़ते हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- बृजमोहन जी, हाथ जोड़कर आग्रह करते हैं।

---

[2] [XX] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री नारायण चंदेल :- सदन की कमेटी बनाकर जांच करानी चाहिए। आपसे साहेब बंदगी है।

सौरभ सिंह :- सरगुजा जाने में डर लगेगा।

श्री रविन्द्र चौबे :- अध्यक्ष जी, आप निर्णय करेंगे कि इस पक्ष को सुनेंगे न।

अध्यक्ष महोदय :- सुनेंगे भाई, वे तो मानते ही नहीं है न।

श्री अजय चन्द्राकर :- आपके ऊपर तो आरोप है।

श्री नारायण चंदेल :- साहेब बंदगी है।

श्री अजय चन्द्राकर :- आपके मंत्री पर आरोप है। मुख्यमंत्री बनने के लिए हत्या का आरोप है। मुख्यमंत्री बनने के लिए उनकी हत्या हो रही है। (व्यवधान)

श्री रविन्द्र चौबे :- आप जांच चाहते हैं, इसका निर्णय कौन करेगा। (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- नेता जी, क्या एक पक्ष को ही सुनकर कोई निर्णय आता है या दिया जाता है?

श्री धरमलाल कौशिक :- अध्यक्ष जी..।

अध्यक्ष महोदय :- नहीं, होता है क्या? (व्यवधान)

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी (मस्तूरी) :- एक पक्ष नहीं है तो दूसरे पक्ष बृहस्पत सिंह जी को सुनो। (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- दूसरा पक्ष टी.एस. सिंहदेव आरोपी है। (व्यवधान)

श्री धरमलाल कौशिक :- जिस प्रकार की घटना हुई है, बाकायदा प्रेस बुलाकर प्रेस के माध्यम से उन्होंने सूचित किया है। सारी जानकारी आपके बीच में है, हमारे बीच में है और आपके बीच में है।

अध्यक्ष महोदय :- मैं सिर्फ इतना पूछ रहा हूं कि..।

श्री धरमलाल कौशिक :- उन्होंने प्रेस बुलाकर, संवाददाताओं के सामने कहा है कि मेरी जान को खतरा है।

श्री शिवरतन शर्मा :- उन्हें खतरा है।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय सदस्य ने प्रेस बुलाकर कहा है कि मेरी जान को खतरा है।

अध्यक्ष महोदय :- ठीक है।

उद्योग मंत्री (श्री कवासी लखमा) :- नेता जी बोल रहे है। उनको आप लोग बोलने नहीं देते। बार-बार खड़े हो जाते हैं।

श्री शिवरतन शर्मा :- हम अपने नेता की सुरक्षा के लिए खड़े हैं।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- नेता जी, बोल रहे हैं। आप लोग बैठ तो जाओ।

अध्यक्ष महोदय :- आप लोगों ने विधान सभा में अपनी बात कही..।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री धरमलाल कौशिक :- और बुलाकर कहने के बाद मैं तो यह चाहता हूं कि बृहस्पत सिंह जी को बोलने का अवसर दिया जाये। मंत्री, टी.एस. सिंहदेव जी को बोलने का अवसर दिया जाये। इनको सुनने के बाद आप निर्णय करेंगे तो ज्यादा अच्छा रहेगा।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव (सिहावा) :- आप लोग तो संवाद करने ही नहीं दे रहे हैं। सामने की बात सुनिए न।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मंत्री जी पर आरोप है।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- अपन नेता जी ला बोलन देना।

श्री धरमलाल कौशिक :- जिनको आप सुनने के लिए बोल रहे हैं कि उनका पक्ष सुन लो। उनके बीच तो संवादहीनता हैं। वे पत्राचार करते हैं। उनको सुनने के बजाय आप 18 विधायकों को सुन लें। आप बृहस्पत जी को सुन लें। टी.एस. बाबा जी को सुन लें। उसके बाद निर्णय करें।

श्री सौरभ सिंह :- उसके बाद आप निर्णय करें।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय अध्यक्ष जी, आपके नेता बोल रहे हैं। (व्यवधान)

श्री अमितेश शुक्ल (राजिम) :- अध्यक्ष जी बोल रहे हैं। नेता जी बोल रहे हैं। आप लोग बैठिए न। (व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय..।

**(नगरीय प्रशासन मंत्री, डॉ. शिवकुमार डहरिया के खड़े होने पर)**

अध्यक्ष महोदय :- चलिए न महाराज, कुछ बोलिए न आप ।

श्री अजय चन्द्राकर :- चूंकि विधान सभा नोटीफाइड हो चुकी थी और यह सदस्य और मंत्री का मामला है । आग्रह है कि आप इसको गंभीरता से लीजिए अन्यथा ऐसी घटनाएं हम लोगों के साथ भी होंगी । (व्यवधान) यदि हम स्वतंत्रतापूर्वक काम नहीं कर पाएंगे । संसदीय विशेषाधिकार का भी मामला बनता है। यह आपके संज्ञान में लेने लायक विषय है । सरकार से पूछने वाला विषय नहीं है । यह आपके निर्णय का विषय है । सारे विधायक आपके संरक्षण में काम करते हैं ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- सबसे पहले तो जो आरोप लगाने वाले विधायक हैं उनकी बात सुनना चाहिए, फिर जिन मंत्री जी के ऊपर आरोप लगा है उनकी बात सुनने के पश्चात् विधायक जी के साथ जो 18 विधायक गए थे कि हमारे विधायक सुरक्षित नहीं हैं । उनको सुनें और उनको सुनने के बाद फिर आप निर्णय करें क्योंकि जो आरोपी है और जिन पर आरोप लगाया गया है, इन दोनों को सुनना और 18 विधायकों को सुनना जरूरी है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- इसमें मुख्यमंत्री पद भी जुड़ा है ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष जी, माननीय सदस्य ने कहा है कि मैं चाहता हूं कि भूपेश बघेल जी मुख्यमंत्री बने रहें, इसलिए टी.एस.सिंहदेव मुख्यमंत्री बनने के लिए मेरी हत्या करवाना चाहते हैं ।

श्री नारायण चंदेल :- बहुत गंभीर विषय है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- इसलिए सरकार का उत्तर लेने की कोई जरूरत नहीं है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- मुख्यमंत्री का पद, विधायक पर हमने का कारण है । इसलिए मुख्यमंत्री का पद, विधायक के जीवन की सुरक्षा का सवाल से घिरा हुआ है। अगर सरकार के लोग बोलेंगे तो क्या यहां कोई मुख्यमंत्री के खिलाफ बोल सकता है? मुख्यमंत्री की भावना के विरूद्ध बोल सकता है ? कोई नहीं बोल सकता । इसलिए माननीय बृहस्पत सिंह जी, माननीय टी.एस.सिंहदेव जी और जो 18 विधायक बृहस्पत सिंह जी के साथ गए थे सारे विषय को रख दें, उसके बाद फिर आप निर्णय करें ।

संसदीय कार्य मंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- आपके कहने से बात रखेंगे । क्या आप निर्देशित करेंगे ? कौन विधायक अपनी बात रखेगा, यह आप निर्देशित करेंगे । यह बिल्कुल ग़लत परमपरा है । आप निर्देशित करेंगे कि अध्यक्ष जी को क्या करना है ? (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- सरकार कटघरे में है, जब सरकार ही कटघरे में है तो फिर क्या जवाब देगी ।

श्री नारायण चंदेल :- यह बहुत गंभीर विषय है । हम निवेदन कर रहे हैं, आग्रह कर रहे हैं ।

श्री रविन्द्र चौबे :- वे चाहेंगे तब रखेंगे ना ।

श्री अजय चन्द्राकर :- आज तो मंत्रि-मंडल आरोपी है ।

श्री धरमलाल कौशिक :- विधायक दल की कमेटी से आप जांच का आदेश करें ताकि आने वाले समय में, भविष्य में ऐसी घटनाएं न हों ।

श्री अजय चन्द्राकर :- यह अपने आप में अनूठी घटना है । (व्यवधान)

श्री रविन्द्र चौबे :- क्या आपके निर्देश पर वे बोलेंगे । (व्यवधान)
अगर जरूरत पड़ेगी तो सदन में मुख्यमंत्री भी बोलेंगे, उसमें क्या है ।

श्री शिवरतन शर्मा :- संसदीय कार्यमंत्री जी कह रहे हैं कि वह आपके कहने से बात रखेंगे । तो फिर आप ही बता दीजिए कि वे किसके कहने पर चल रहे हैं ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- संसदीय कार्यमंत्री जी, यह आपके संसदीय मंत्री के कार्यकाल के इतिहास में [xx][3] घटना हुई है (शेम-शेम की आवाज़) । आपको तो बोलना ही नहीं चाहिए । [xx] घटना पर बोलकर आप अपने आप को ही शर्मिन्दा कर रहे हैं । एक विधायक ने मंत्री पर अपनी हत्या का आरोप लगाया है । आपका संसदीय कार्यकाल कलंकित हुआ है । एक विधायक हत्या का आरोप लगा रहा है ।

---

[3] [xx] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार विलोपित ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री रविन्द्र चौबे :- बृजमोहन जी, विधायक की सुरक्षा की चिंता जितनी आपको है, उससे ज्यादा हमको है । (व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- अरे क्या चिंता है, जे.पी.सी. से जांच करवाइए । जांच की अनुमति दीजिए ।

श्री रविन्द्र चौबे :- बात तो सुन लें आप ।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप तो आरोपी हैं, निर्णय आसंदी करे ना । जब आप और वो पक्ष हैं तो आसंदी निर्णय करे ना । आप काहे बीच में कूद रहे हो । आप आसंदी से बोलिए कि आप जो निर्णय करेंगे वह मान्य होगा ।

श्री रविन्द्र चौबे :- एक पक्षीय सुनकर, यह कैसे संभव है ? (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- आपको बोलने का अधिकार नहीं है । माननीय बृहस्पत सिंह जी, माननीय टी.एस.सिंहदेव और 18 विधायक अपनी बात कहें ।

अध्यक्ष महोदय :- आप मेरी बात सुन लीजिए । मैंने आप सबकी बात सुन ली ना ।

श्री धरमलाल कौशिक :- आप केवल हमारी बात सुनकर निर्णय मत लीजिए ।

अध्यक्ष महोदय :- एक पक्ष की बात सुन ली ।

श्री धरमलाल कौशिक :- आप दोनों पक्षों के अलावा 18 विधायकों को सुनिये। उसके बाद आपको जो लगे आप वह आदेश करिये ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- आप लोग अपने नेता की बात नहीं सुन रहे हो, नेता जी कह रहे हैं तब तो बैठ जाओ । (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- अब कौन सी बात सही है, कौन सी बात गलत है । मुझे कम से कम संसदीय कार्यमंत्री जी से सुनने दीजिए ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष जी, अभी दोनों पक्षकार टी. एस. सिंहदेव जी और बृहस्पत सिंह जी हाजिर हैं । इनको सुनिए न । (व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- जे.पी.सी. बनेगी तो खुद संसदीय कार्यमंत्री व्यक्तिगत जांच करें । (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष जी, यह सदन की परम्परा रही है कि अगर किसी सदस्य के साथ में कोई दुर्गति होती है, कोई दुर्भावना होती है, कोई दुराचार होता है तो वह सदस्य अपनी भावना को सबसे पहले सदन में रखता है और जिसके ऊपर में आरोप लगा है, वह अपनी भावना को रखेंगे । जो 18 सदस्य गए थे, वे अपनी भावना को रखेंगे, उसके बाद में आप निर्णय करें । पहले आप उनको सुनें । सरकार के जवाब को बाद में सुनिए ।

अध्यक्ष महोदय :- उन्होंने तो अपनी बात नहीं रखी न ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री नारायण चंदेल :- अध्यक्ष जी, उनकी बात सुन लीजिए ।

अध्यक्ष महोदय :- आपने समाचार पत्र के माध्यम से, टी.व्ही. के माध्यम से जो सुना, आपने अपनी बात रख दी । मुझे तो संसदीय कार्यमंत्री जी से सुनना पड़ेगा न। (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आप इनको सुनिए न ।

अध्यक्ष महोदय :- मैं क्यों सुनूं ? उनको कहना होगा तो कहेंगे ।

श्री रविन्द्र चौबे :- अब ये लोग तय करेंगे ।

श्री अमितेश शुक्ल :- उनको कहना होगा तो अपनी बात कहेंगे ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- जब हमारे साथी पीड़ित हैं तो उनको सुनिए (व्यवधान)

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- किसको सुनना है, वह आप लोग तय करेंगे क्या ? (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- आपने अपनी बात कह दी । आप लोग बैठ जाईए, प्लीज़, प्लीज़ ।

श्री अमितेश शुक्ल :- कौन बोलेगा, कौन नहीं बोलेगा, अब ये लोग तय करेंगे?

अध्यक्ष महोदय :- बताईए, क्या कहना है ?

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- (श्री ननकीराम कंवर, सदस्य की ओर इशारा करते हुए) तै बैइठ न, अब अध्यक्ष जी ला तो बोलन दे । तोर तो तोर सरकार ह सुनत नहीं रिहीसे ।

अध्यक्ष महोदय :- संसदीय कार्यमंत्री जी, आपका क्या कहना है ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष जी, पीड़ित को बिना सुने आप कैसे निर्णय करेंगे ? पहले आप पीड़ित को सुनिए ।

अध्यक्ष महोदय :- मैं कहां निर्णय कर रहा हूं ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष जी, पहले आप पीड़ित पक्ष को सुनिए, पीड़ित पक्ष को सुनिए । ये गलत परम्परा है ।

श्री नारायण चंदेल :- अध्यक्ष महोदय, आप पीड़ित को सुनिए, पीड़ित गुहार कर रहा है, पीड़ित रो रहा है । (व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- अध्यक्ष महोदय, यह प्राकृतिक न्याय का सिद्धांत है । पूरा मंत्रिमण्डल आरोपी है । मुख्यमंत्री जी पक्षपात कर रहे हैं (व्यवधान)

श्री रविन्द्र चौबे :- कौन आरोपी है ?

श्री धरम लाल कौशिक :- कोई साक्षी भी नहीं है (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आप आरोपी हैं, पूरा मंत्रिमण्डल आरोपी है । मुख्यमंत्री जी आरोपी हैं । (व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- यह ज्वाइंट रिस्पॉसबिलिटी है, सामूहिक जिम्मेदारी है । सामूहिक उत्तरदायित्व के तहत आप जिम्मेदार हैं (व्यवधान)

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री सौरभ सिंह :- पीड़ित खड़ा हो गया, उनको बोलने दीजिए । (व्यवधान)

श्री बृहस्पत सिंह :- अध्यक्ष महोदय, मेरा अनुरोध है । (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष महोदय, वे बोलने के लिए खड़े हुए हैं, उनको बोलने दीजिए ।

श्री रविन्द्र चौबे :- मैं पहले बोल रहा हूं, मेरी बात तो सुन लीजिए ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- नहीं, आपको नहीं सुनेंगे, बृहस्पत जी को सुनेंगे । (व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- पूरे मंत्रिमण्डल के ऊपर आरोप हैं । (व्यवधान)

श्री रविन्द्र चौबे :- कहीं मंत्रिमण्डल के ऊपर आरोप नहीं है । (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- हम आपको नहीं सुनेंगे । (व्यवधान)

श्री रविन्द्र चौबे :- मंत्रिमण्डल के ऊपर कोई आरोप नहीं है ।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- यह बात आपत्तिजनक है, विपक्ष आसंदी के आदेश का विरोध कर रहे हैं । (व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- मंत्रिमण्डल सामूहिक उत्तदायी है । (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अगर मुख्यमंत्री जी बनाये रखने के लिए एक दूसरे मंत्री एक विधायक की हत्या का साजिश करते हैं तो बहुत ही शर्मनाक है । (व्यवधान)

श्री नारायण चंदेल :- गंभीर आरोप है, गंभीर आरोप है ।

श्री रविन्द्र चौबे :- आप पूरी बात को सुन लीजिए ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- इससे बड़ा गंभीर आरोप क्या है ?

श्री अजय चन्द्राकर :- अध्यक्ष जी, पीड़ित खड़ा हो रहा है, उनको बोलने दीजिए । (व्यवधान)

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- पीड़ित व्यक्ति खड़ा हो रहे हैं, उनको बोलने दीजिए । (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- संसदीय कार्यमंत्री जी, आप कुछ बोल क्यों नहीं रहे हैं ? बोलए न । (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- नहीं, नहीं । वे नहीं बोलेंगे, हम उनकी बात नहीं सुनेंगे । बृहस्पत सिंह जी को बुलाईए, वे अपनी बात कहेंगे । (व्यवधान)

श्री धरम लाल कौशिक :- बृहस्पत सिंह जी अपनी बात रखने के लिए तैयार हैं, उनको अपनी बात रखने दीजिए । (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- सदन की कार्यवाही पांच मिनट के लिए स्थगित ।

**(दोपहर 1.08 बजे से 1:22 बजे तक कार्यवाही स्थगित रही)**

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

समय :

1:22 बजे **(अध्यक्ष महोदय (डॉ. चरणदास महंत) पीठासीन हुए)**

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ..

अध्यक्ष महोदय :- महोदय, इस देश में, संविधान में नैसर्गिक न्याय का सिद्धांत बना है। आप यह बता दीजिये कि कोई एक पक्ष को सुनकर निर्णय देता है ?

श्री नारायण चंदेल :- नहीं, मैं तो आपसे व्यवस्था मांग रहा हूं।

अध्यक्ष महोदय :- नहीं, कोई निर्णय देता है क्या ?

श्री शिवरतन शर्मा :- पीड़ित पक्ष को सुन लिया जाये।

अध्यक्ष महोदय :- यदि कोई निर्णय देता है तो बता दीजिये, मैं निर्णय देता हूं।

श्री नारायण चंदेल :- हम तो आपसे व्यवस्था मांग रहे हैं।

श्री शिवरतन शर्मा :- हम आपसे निवेदन करते हैं कि पीड़ित पक्षकार को सुन लीजिये।

श्री नारायण चंदेल :- यह विधायकों से जुड़ा हुआ मामला है।

नेता प्रतिपक्ष (श्री धरम लाल कौशिक) :- वह बोलने के लिए तैयार है। वह खुद अपना वक्तव्य देना चाह रहा है।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप जो निर्णय देंगे, वह हम मानेंगे।

अध्यक्ष महोदय :- आप आरोप लगाये, कुछ भी करें।

श्री नारायण चंदेल :- सदन की कमेटी बनाये, सदन की जांच कमेटी बन जाये।

श्री अमितेष शुक्ल :- माननीय अध्यक्ष जी ने यह निर्णय लिया है कि सुनेंगे।

अध्यक्ष महोदय :- मैं दूसरे पक्ष को बिना सुने कोई निर्णय नहीं दूंगा।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, एक मिनट, मुझे सुन लीजिये।

श्री धरम लाल कौशिक :- वह बोलने के लिए तैयार है।

अध्यक्ष महोदय :- रमन सिंह जी, मैं गलत बात नहीं कह रहा हूं। आप 15 वर्षों तक मुख्यमंत्री रहे हैं। आप दुनिया के नियम-कानून के जानकार हैं। नैसर्गिक न्याय का सिद्धांत है। क्या कोई भी निर्णय एक पक्ष को ही सुनकर दिया जा सकता है ? (सत्तापक्ष के सदस्यों द्वारा मेजों की थपथपाहट)

डॉ. रमन सिंह (राजनांदगांव) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपका जिस विषय की ओर ध्यान आकर्षित किया गया, यह सामान्य घटना नहीं है।

अध्यक्ष महोदय :- बाकी लोग बैठ जायें तो ज्यादा अच्छी बात कह पायेंगे।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

डॉ. रमन सिंह :- छत्तीसगढ़ के इतिहास में पहली बार ऐसी घटना हुई है, यह सामान्य घटना न होकर एक विशेष घटना है, जिसमें विधायक complaint कर रहा है और विधायक की शिकायत के आधार पर पूरे सदन की चिंता है। यह असाधारण परिस्थिति पैदा हुई, इसलिए सारे विधायक उत्तेजित हो गये।

अध्यक्ष महोदय :- मेरी बात सुनिये न, अभी तक विधायक ने कक्ष में मुझे complaint नहीं किया है। विधायक ने यहां कोई complaint नहीं किया है। आप लोगों ने किया है इसलिए आपकी सुनूंगा।

श्री शिवरतन शर्मा :- आप पीड़ित पक्षकार को सुनिये न।

संसदीय कार्यमंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- आप सदन के नेता को भी नहीं सुनेंगे तो कैसे काम चलेगा ? ...(व्यवधान)

श्री श्रीवास

श्री ननकीराम कंवर :- आप घड़ियाली ऑंसू बहा रहे हैं ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष महोदय, जो पीड़ित पक्ष है, आप उसे सुनेंगे ।

एक माननीय सदस्या :- हमारे नेता की बात सुनेंगे ।

संसदीय कार्यमंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- अध्यक्ष जी, हमारे सदन के नेता ने आग्रह किया । (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय मुख्यमंत्री जी ।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- सुनना नहीं चाहते हैं ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- जिनके घरों पर हमला हो रहा है, वह कह रहे हैं । (व्यवधान)

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :-सदन के नेता बोलते हैं तो सारे लोग खड़े रहते हैं, बृजमोहन जी बोलते हैं तो सारे लोग खड़े रहते हैं, यह कौन सी परम्परा है ? आप परम्परा की बात कर रहे हैं, सारे लोग एक साथ खड़े होकर बात करेंगे ? ननकीराम जी आप बोल रहे थे तो हम सुन रहे थे । अध्यक्ष जी ने हमको आमंत्रित किया है, हमको आदेशित किया है, तो फिर आप लोगों को बैठना चाहिये, सुनिये । माननीय अध्यक्ष महोदय, सदन के सदस्यों की सुरक्षा की पूरी जिम्मेदारी इस सरकार की है और पूरी सुरक्षा दी जायेगी । (मेजों की थपथपाहट) अध्यक्ष महोदय, इसमें कहीं कोई कोताही नहीं बरती जायेगी । भोजन अवकाश के बाद गृह मंत्री जी इस विषय पर वक्तव्य देंगे ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय मुख्यमंत्री जी, आपसे आग्रह है कि माननीय टी.एस.सिंहदेव जी को बुला लीजिए ।

श्री भूपेश बघेल :- हम सदन के नियम प्रक्रिया को जानते हैं । जब तक सदन के लिए लिखित नहीं देता, तब तक...(व्यवधान) नहीं होगी । आप उस मामले को जानते हैं, उसके बाद जबरदस्ती, यही बात आपका बाहर जाता है । (व्यवधान) यह बिल्कुल गलत परम्परा है । सदन नियम प्रक्रिया से चलता है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप खुद संज्ञान ले सकते हैं। संबंधित की जरूरत नहीं है । (व्यवधान)

श्री कुलदीप जुनेजा :- आप आसंदी की बात नहीं मान रहे हैं ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष महोदय ने संज्ञान लिया है । अध्यक्ष ने पीड़ित पक्षों को...(व्यवधान) यह छत्तीसगढ़ के विधान सभा का इतिहास है । जब सदस्यों के जान की चिंता की बात हो, तब लिखित में देना आवश्यक नहीं है । अध्यक्ष को उस समय निर्णय करके उस समय पीड़ित पक्ष को सुने। जिन्होंने आरोप लगाये हैं, उनको सुनें ।

श्री रविन्द्र चौबे :- पीड़ित कहां है ?

श्री कुलदीप जुनेजा :- आसंदी की बात को सुनिये । आसंदी की बात को मानिये ।

नेता प्रतिपक्ष (श्री धरमलाल कौशिक) :- आँसू निकल रहे हैं, आप उनको बोलने नहीं दे रहे हैं ।

संसदीय कार्यमंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- अखबारों के कतरन के आधार पर सारी बात कह रहे हैं । (व्यवधान)

श्री धरमलाल कौशिक :- बेचारा खड़ा हुआ था ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- वीडियो है, वीडियो ।

श्री कुलदीप जुनेजा :- आप आसंदी की बात मानिये ।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये बैठिये । धर्मजीत सिंह जी, आप बताईये, क्या कर रहे हैं ?

श्री धर्मजीत सिंह :- अध्यक्ष महोदय, एक बहुत ही वरिष्ठ और अनुभवी सदस्य ने कल एक आरोप लगाया । जिसका कतरन भी है, वीडियो कैसेट भी है । उन्होंने आरोप लगाया कि आदरणीय मंत्री टी.एस.सिंहदेव साहब के ऊपर । आरोप यह लगाया गया है कि ....

श्री धरमलाल कौशिक :- मुझे बोलने दो ।

श्री धर्मजीत सिंह :- सुन तो लीजिए, सर । दो मिनट हमको भी बोलने दीजिए । मुख्यमंत्री बनने के लिए मेरी हत्या करवाना चाहते हैं । मामला गंभीर है । या तो आरोप सही है, तो इसकी जांच हो, अगर आरोप गलत हो तो उसके पीछे कोई षडयंत्र हो तो उसकी जांच हो। माननीय अध्यक्ष महोदय, यह कहना बिल्कुल गलत है कि अखबार की कतरनों के आधार पर यहां चर्चा नहीं होती। इसी सदन में कई कतरनों के आधार पर चर्चा हो चुकी है। जो ज्वलंत मुद्दा हो, जब मंत्री और विधायक के बीच में ये मामला चल रहा हो तो आम आदमी की हिफाजत के बारे में हम क्या बात कर सकते हैं? अध्यक्ष महोदय, इसलिए आपसे आग्रह है कि इस पर कोई ऐसा निर्णय करें जिससे इसका समाधान निकले और सच्चाई जनता के बीच आ सके। यह आपके विवेक पर है। हम कोई आरोप-प्रत्यारोप नहीं लगा रहे हैं। न हम बृहस्पत सिंह जी का और न टी.एस. सिंहदेव जी का पक्ष ले रहे हैं। पर जो हेडलाईन है कि "मुख्यमंत्री बनने के लिए हत्या" यह बहुत गंभीर मामला है। यह सिर्फ यहॉं का नहीं है कि यहां के पेपर



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

में यह खबर छपी हो, यह खबर पूरे नेशनल लेवल पर छपी है। इसलिए उसमें आपको संदेश देना जरूरी है। इसलिए विपक्ष आपसे मांग कर रहा है। आपका निर्णय तो हम लोग हमेशा शिरोधार्य करते हैं। इस पर विचार करिये।

अध्यक्ष महोदय :- मैं वही तो कह रहा हूं कि क्या मैं एक पक्ष को सुनकर ही निर्णय दे सकता हूं? मेरा आपसे एक ही प्रश्न है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आप पीड़ित पक्ष को सुन लें।

अध्यक्ष महोदय :- पीड़ित पक्ष ने मुझे कुछ नहीं कहा है।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जब पीड़ित पक्ष सामने है, मुझे लगता है कि जो घटना हुई है, घटना के बारे में जैसा रविन्द्र चौबे जी बोल रहे हैं कि वह बोलना नहीं चाहते हैं। वह बोलना चाहते हैं।

श्री रविन्द्र चौबे :- क्या तुमन उसको कोचक के उठाहू का ?

श्री शिवरतन शर्मा :- तोला कौन कोचके हे ?

श्री धरमलाल कौशिक :- तुमन ला कौन कोचके हे ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- तैं ता बिना कोचके उठत हस।

श्री धर्मजीत सिंह :- आप अपने विधायक से बोलवा दीजिए कि उन्होंने जो कल आरोप लगाया है, वह गलत है, बिना सिर-पैर का है।

श्री रविन्द्र चौबे :- हम क्यों उनसे बुलवायेंगे ?

श्री धर्मजीत सिंह :- आप उनसे बुलवाईये न।

श्री रविन्द्र चौबे :- आपने अपना पक्ष रखा। आप बार-बार कह रहे हैं कि पीड़ित पक्ष की बात सुनिये। वह कुछ कहना चाहते हैं तो आप उनसे क्यों कहलवाना चाह रहे हैं ? (व्यवधान)

श्री धर्मजीत सिंह :- उनसे बुलवाना चाहिए। वह बोलें कि गलत आरोप लगाये थे या वह बोलें कि सही आरोप लगाये हैं।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय मुख्यमंत्री जी ने केवल उनकी सुरक्षा नहीं, सभी विधायकों की सुरक्षा के बारे में माननीय मुख्यमंत्री जी ने बोल दिया है।

श्री धर्मजीत सिंह :- अगर इनका आरोप सही है तो आप माननीय विधायक जी से बुलवाईये न कि उन्होंने जो बयान दिया है वह गलत है या जो बयान दिया है वह सही है। वह बोलेंगे तो तभी तो होगा न।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आप विधायक से बुलवा दीजिए कि मैंने जो कहा है वह गलत है। मेरा वीडियो गलत है। पेपर में जो छपा है वह गलत है।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री धर्मजीत सिंह :- हॉ, उनके बोल देने से बात खत्म हो जायेगी। उनको बोलना चाहिए। विधायक जी को बोलना चाहिए न। उनको अपनी बात कहने का इससे बड़ा मंच क्या मिलेगा ?

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, आप लोग मेरी बात सुनिये। सदन की कार्यवाही भोजन अवकाश के लिए 3.00 बजे तक स्थगित।

**(1.33 बजे से 3.00 बजे तक अंतराल)**

समय :

3:00 बजे **(अध्यक्ष महोदय (डॉ. चरणदास महंत) पीठासीन हुए)**

नेता प्रतिपक्ष (श्री धरमलाल कौशिक) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जिस घटना की हम सब चर्चा कर रहे हैं। छत्तीसगढ़ राज्य के निर्माण के पश्चात् और मध्यप्रदेश में भी हम लोग विधायक रहे हैं,लेकिन ऐसी घटना कभी देखने को नहीं मिली। वास्तविक में यह घटना दुर्भाग्यजनक है। जिन परिस्थितियों में यह घटना घटी है और खासकर यदि एक विधायक जैसा जनप्रतिनिधि, मंत्री के बारे में शिकायत करे कि मुझे मरवाने का प्रयास किया गया है और उसमें एक शब्द और जोड़ दिया गया कि मुख्ययमंत्री बनने के लिए। मुझे लगता है कि सी.पी. एण्ड बरार और उसके बाद मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ की शायद यह पहली घटना है न केवल राजनीति में छत्तीसगढ़ के कांग्रेस के लिए बल्कि छत्तीसगढ़ की संपूर्ण राजनीति में इस प्रकार की घटना मुझे लगता है कि जितनी इसकी निंदा की जाए, वह कम है। जब विधायक सुरक्षित नहीं होगा तो अपनी बात को कैसे रखेंगे और इसलिए हम चाहते हैं कि इस विषय पर पहले हमने कहा कि जो दोनों पक्ष है उससे पहले बात होनी चाहिए और बात होने के बाद में स्थिति सामने स्पष्ट हो जाए। भविष्य में इस प्रकार की स्थिति निर्मित न हो और इसलिए हम लोग माननीय अध्यक्ष महोदय आपके ऊपर हमें पूरा विश्वास है कि जिस प्रकार से घटना हुई है हम आपके ऊपर छोड़ते हैं और उस घटना में आप निर्णय लें ताकि आने वाले भविष्य में इस प्रकार की घटना प्रदेश में घटित न हो और विधायक स्वतंत्र रूप से अपना कार्य कर सकें। तो हम यह आपके ऊपर छोड़ते हैं और आप इसका जैसा निर्णय करेंगे।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय नेता जी ने इस बात को कहा है । माननीय बृहस्पत सिंह जी और टी.एस.सिंहदेव जी दोनों इस घटना के जो पार्ट हैं वह यहां पर उपस्थित हैं। आप अगर उनका बयान करवा देंगे और वह अपना बयान दे दें उसके बाद में आप निर्णय लें लें। मुझे लगता है कि ज्यादा उचित होगा। क्योंकि दोनों पक्ष उपस्थित रहने के बाद भी उनके बयान यहां पर हो जाए। माननीय नेता जी ने कहा कि हम आपके निर्णय को मानेंगे और दोनों का अगर बयान जो जाए तो सबके सामने परिस्थिति आ जाएगी कि आखिर मामला क्या है? एक विधायक एक मंत्री पूरी



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

सरकार कटघरे में है। मुख्यमंत्री का मामला है। आप अगर दोनों का बयान करवा दें उसके बाद आप निर्णय लें तो ज्यादा औचित्यपूर्ण होगा। मेरा आपसे इस बात का आग्रह है।

अध्यक्ष महोदय :- मैं तो आप लोगों से निवेदन किया था कि एक पक्ष को सुनने के बाद निर्णय नहीं लिया जा सकता। दोनों पक्षों को सुनना है। मैंने मुख्यमंत्री जी को बुलाया। उन्होंने गृहमंत्री जी को वक्तव्य देने के लिए कहा। अब यह अगर यह चाहते हैं कि आज आपका महत्वपूर्ण कार्य है। कृषि संबंधी कार्य है कृषकों का कार्य है तो अगर लेना है तो आप ब्यान कल दे दें। मैं ब्यान कल करवा लेता हूँ।

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, कल गृहमंत्री जी वक्तव्य दे देंगे।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमने तो आपके ऊपर छोड़ दिया है कि जैसा आप निर्णय लेंगे कि आने वाले समय में इस प्रकार की घटना की पुनरावृत्ति न हो। इसलिए आपके ऊपर निर्णय छोड़ देते हैं।

अध्यक्ष महोदय :- गृहमंत्री जी कल वक्तव्य दे देंगे। आप अपनी कार्यवाही शुरू करिएगा। जब तक मैं यह पत्रों का पटल पर रखवा लेता हूँ।

समय :
3:03 बजे

**पत्रों का पटल पर रखा जाना**

**(1) छत्तीसगढ़ राज्य सहकारी मत्स्य महासंघ मर्यादित, रायपुर की ऑडिट टीप एवं वित्तीय पत्रक वर्ष 2019-20**

सहकारिता मंत्री (डॉ. प्रेमसाय सिंह टेकाम) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं, छत्तीसगढ़ सहकारी सोसाइटी अधिनियम, 1960 (क्रमांक 17 सन् 1960) की धारा 58 की उपधारा (7) की अपेक्षानुसार छत्तीसगढ़ राज्य सहकारी मत्स्य महासंघ मर्यादित, रायपुर की ऑडिट टीप एवं वित्तीय पत्रक वर्ष 2019-20 पटल पर रखता हूँ।

**(2) छत्तीसगढ़ राज्य लघु वनोपज (व्यापार एवं विकास) सहकारी संघ मर्यादित का अंकेक्षण प्रतिवेदन वर्ष 2019-20**

सहकारिता मंत्री (डॉ. प्रेमसाय सिंह टेकाम) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं, छत्तीसगढ़ सहकारी सोसाइटी अधिनियम, 1960 (क्रमांक 17 सन् 1961) की धारा 58 की उपधारा (7) की अपेक्षानुसार छत्तीसगढ़ राज्य लघु वनोपज (व्यापार एवं विकास) सहकारी संघ मर्यादित का अंकेक्षण प्रतिवेदन वर्ष 2019-20 पटल पर रखता हूँ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

**(3) छत्तीसगढ़ राज्य सहकारी दुग्ध महासंघ मर्यादित का अंकेक्षण प्रतिवेदन वित्तीय वर्ष 2019-20**

सहकारिता मंत्री (डॉ. प्रेमसाय सिंह टेकाम) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं, छत्तीसगढ़ सहकारी सोसाइटी अधिनियम, 1960 (क्रमांक 17 सन् 1961) की धारा 58 की उपधारा (7) की अपेक्षानुसार छत्तीसगढ़ राज्य दुग्ध महासंघ मर्यादित का अंकेक्षण प्रतिवेदन वित्तीय वर्ष 2019-20 पटल पर रखता हूँ।

समय :

03:05 बजे **फरवरी-मार्च, 2021 सत्र का समयपूर्व सत्रावसान के कारण बैठक हेतु पूर्व निर्धारित तिथियों की मुद्रित प्रश्नोत्तरी का पटल पर रखा जाना।**

अध्यक्ष महोदय :- फरवरी मार्च, 2021 सत्र का दिनांक 09 मार्च, 2021 को सत्रावसान हो जाने के कारण बैठक हेतु पूर्व निर्धारित तिथि दिनांक 10, 12, 15, 16, 17, 18, 19, 22, 23, 24, 25 एवं 26 मार्च, 2021 की मुद्रित प्रश्नोत्तरी प्रमुख सचिव, विधानसभा सदन के पटल पर रखेंगे।

प्रमुख सचिव, विधानसभा :- मैं अध्यक्ष के स्थायी आदेश क्रमांक 13-क की अपेक्षानुसार फरवरी-मार्च, 2021 सत्र का दिनांक 09 मार्च, 2021 को सत्रावसान हो जाने के कारण बैठक हेतु पूर्व निर्धारित तिथि दिनांक 10, 12, 15, 16, 17, 18, 19, 22, 23, 24, 25 एवं 26 मार्च, 2021 की मुद्रित प्रश्नोत्तरी सदन के पटल पर रखता हूं।

समय :

03:05 बजे **फरवरी-मार्च, 2021 सत्र के अपूर्ण उत्तरों के पूर्ण उत्त्तरों का संकलन सदन के पटल पर रखा जाना**

अध्यक्ष महोदय :- फरवरी-मार्च, 2021 सत्र के प्रश्नों के अपूर्ण उत्तरों के पूर्ण उत्तरों का संकलन प्रमुख सचिव, विधानसभा सदन के पटल पर रखेंगे।

प्रमुख सचिव, विधानसभा :- मैं, अध्यक्ष के स्थायी ओदश क्रमांक 13-ख की अपेक्षानुसार फरवरी-मार्च, 2021 सत्र के प्रश्नों के अपूर्ण उत्तरों के पूर्ण उत्तरों का संकलन सदन के पटल पर रखता हूं।

समय :

03:06 बजे **नियम 267 "क" के अधीन शून्यकाल सूचनाएं तथा उनके उत्तरों का संकलन**

अध्यक्ष महोदय :- नियम 267 "क" के अधीन फरवरी-मार्च, 2021 सत्र में सदन में पढ़ी गई सूचनाओं तथा उनके उत्तरों का संकलन प्रमुख सचिव, विधानसभा सदन के पटल पर रखेंगे।



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

प्रमुख सचिव, विधानसभा :- मैं, नियम 267 "क" के अधीन फरवरी-मार्च, 2021 सत्र में सदन में पढ़ी गई सूचनाओं तथा उनके उत्तरों का संकलन सदन के पटल पर रखता हूं।

समय :

03:06 बजे **राज्यपाल की अनुमति प्राप्त विधेयकों की सूचना**

अध्यक्ष महोदय :- पंचम विधान सभा के अगस्त, 2020 सत्र में पारित कुल 12 विधेयकों में से शेष बचे 1 विधेयक पर, दिसंबर, 2020 सत्र में से पारित कुल 7 विधेयकों में शेष बचे 6 विधेयकों में से 5 विधेयकों पर तथा फरवरी-मार्च, 2021 सत्र में पारित सभी 4 विधेयकों पर माननीय राज्यपाल की अनुमति प्राप्त हो गई है। अनुमति प्राप्त विधेयकों को विवरण प्रमुख सचिव, विधान सभा सदन के पटल पर रखेंगे।

प्रमुख सचिव, विधानसभा :- पंचम विधान सभा के अगस्त, 2020 सत्र में पारित कुल 12 विधेयकों में से शेष बचे 1 विशेयक पर, दिसंबर, 2020 सत्र में से पारित कुल 7 विधेयकों में शेष बचे 6 विधेयकों में से 5 विधेयकों पर तथा फरवरी-मार्च, 2021 सत्र में पारित सभी 4 विधेयकों पर माननीय राज्यपाल की अनुमति प्राप्त हो गई है, जिसका विवरण सदन के पटल पर रखता हूं।

अध्यक्ष महोदय :- अनुमति प्राप्त विधेयक के नाम को दर्शाने वाला विवरण पत्रक भाग-दो के माध्यम से माननीय सदस्यों को पृथक से वितरित किया जा रहा है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हम लोगों ने पूरे छत्तीसगढ़ में खाद, बीज को लेकर ...।

अध्यक्ष महोदय :- एक मिनट। सभापति तालिका की घोषणा कर देता हूं।

समय :

03:07 बजे **सभापति तालिका की घोषणा**

अध्यक्ष महोदय :- विधान सभा की नियमावली के नियम 9 उप नियम (1) के अधीन मैं निम्नलिखित सदस्यों को सभापति तालिका के लिये नाम-निर्दिष्ट करता हूं :-

1. श्री सत्यनारायण शर्मा
2. श्री धनेन्द्र साहू
3. श्री देवेन्द्र बहादुर सिंह
4. श्री शिवरतन शर्मा
5. श्री देवव्रत सिंह
6. श्री लखेश्वर बघेल

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

अध्यक्ष महोदय :- ध्यानाकर्षण..।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष जी, हम लोगों ने महत्वपूर्ण स्थगन दिया है।

अध्यक्ष महोदय :- ठीक है ना, आप स्थगन शुरू करिए ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- खाद, बीज को लेकर पूरे छत्तीसगढ़ के किसानों में हाहाकार मचा हुआ है। आज छत्तीसगढ़ में पूरे 90 विधानसभा में खाद बीज को लेकर परेशान हो रहा है। आज पूरे प्रदेश में ऐसी स्थिति है कि ....। (व्यवधान)

श्री मोहन मरकाम :- माननीय अध्यक्ष महोदय, व्यवस्था का प्रश्न है। भारतीय जनता पार्टी के नेता केन्द्रीय मंत्री किसानों को मवाली कहते हैं। किसानों के मुद्दे पर भारतीय जनता पार्टी के नेताओं को कहने का अधिकार नहीं है। (व्यवधान) भारतीय जनता पार्टी के लोग किसानों को मवाली कहते हैं। यह भारतीय जनता पार्टी के लोगों का..। (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- चलिए।

डॉ. विनय जायसवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, किसानों को मवाली कहने का नैतिक अधिकार नहीं है।

अध्यक्ष महोदय :- आप बोलिए ना, मैं पढ़ रहा हूं।

समय :
03:09 बजे

**<u>स्थगन प्रस्ताव</u>**

**<u>प्रदेश में खाद, बीज की कमी होना</u>**

अध्यक्ष महोदय :- मेरे पास प्रदेश में खाद, बीज की कमी होने के संबंध में 13 सदस्यों की ओर से स्थगन प्रस्ताव की सूचनाएं प्राप्त हुई है :-

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम सूचना | - | श्री अजय चंद्राकर, सदस्य |
| दूसरी सूचना | - | श्री शिवरतन शर्मा, सदस्य |
| तीसरी सूचना | - | श्री नारायण चंदेल, सदस्य |
| चौथी सूचना | - | श्री बृजमोहन अग्रवाल, सदस्य |
| पांचवी सूचना | - | डॉ. रमन सिंह, सदस्य |
| छठवीं सूचना | - | श्री धरमलाल कौशिक, सदस्य |
| सातवीं सूचना | - | डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी, सदस्य |
| आठवीं सूचना | - | श्री ननकीराम कंवर, सदस्य |
| नवमीं सूचना | - | श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू, सदस्य |

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

| | | |
|---|---|---|
| दसवीं सूचना | - | श्री रजनीश कुमार सिंह, सदस्य |
| ग्यारहवीं सूचना | - | श्री सौरभ सिंह, सदस्य |
| बारहवी सूचना | - | श्री डमरूधर पुजारी, सदस्य |
| तेरहवीं सूचना | - | श्री केशव प्रसाद चन्द्रा, सदस्य |

चूंकि श्री अजय चंद्राकर, सदस्य की सूचना सर्वप्रथम प्राप्त हुई है, अत: उसे मैं पढ़कर सुनाता हूं :-

प्रदेश के किसानों की समस्याओं के समाधान करने के लिये पूर्व शासनकाल से अनेक प्रकार की योजनाएं चल रही है किंतु वर्तमान में समस्या दूर होने के बजाय और बढ़ती ही जा रही है, जिसका मुख्य कारण सरकार की आर्थिक तंगी है । किसानों को राहत देने के नाम पर सरकारी योजनाओं में कटौती होती जा रही है । जिससे समस्या कम होने का नाम ही नहीं ले रही है, जो अत्यंत गंभीर विषय है । वर्तमान में किसानों को सभी प्रकार की फसलों एवं उद्यानिकी के लिये खाद, बीज की अनुपलब्धता या आपूर्ति नहीं होने के वजह से प्रदेश के किसान अत्यंत चिंतित व दुखी हैं । इसके साथ-साथ नकली खाद विक्रेताओं से भी परेशान हैं । प्रदेश में खाद की मांग और आपूर्ति की वर्तमान स्थिति पर नजर डालें तो यूरिया खाद की मांग 5.50 लाख टन की थी, जिसमें आपूर्ति सिर्फ 2.32 लाख टन की गई, डीएपी की मांग 3.20 लाख मीट्रिक टन की थी, जिसमें आपूर्ति 1.21 लाख मीट्रिक टन की गयी । एनपीके उर्वरक की मांग 80 हजार मीट्रिक टन की थी, जिसमें आपूर्ति 48 हजार मीट्रिक टन की हुई है, एमओपी उर्वरक की मांग 75 हजार मीट्रिक टन की थी, जिसमें 45 हजार मीट्रिक टन की आपूर्ति हुई तथा सिंगल सुपरफॉस्फेट की मांग 1.50 लाख मीट्रिक टन की थी, जिसमें से मात्र 80 हजार मीट्रिक टन की पूर्ति हुई है । ऐसे ही बीज वितरण में धान की 8.57 लाख क्विंटल की मांग थी किंतु लगभग 6.21 क्विंटल की आपूर्ति की गयी, जिसमें सिर्फ लगभग 4.45 लाख क्विंटल बीज ही वितरण किया गया है अर्थात् 50 प्रतिशत बीज ही वितरित हुआ है तथा दलहन में किसानों की मांग लगभग 12000 क्विंटल का है, जिसके विरूद्ध सिर्फ लगभग 8000 क्विंटल बीज ही उपलब्ध कराया गया । जिसमें से किसानों को मात्र 5500 क्विंटल बीज ही वितरित किया गया है तथा तिलहन में किसानों की मांग लगभग 40000 क्विंटल बीज की थी किंतु सरकार सिर्फ 3500 क्विंटल बीज ही उपलब्ध करा पायी । खाद व बीज की कमी की वजह से इस वर्ष लगभग 5 लाख हेक्टेयर की बुआई प्रभावित हुई है तथा अभी प्रदेश में लगभग 63 प्रतिशत बुआई का कार्य बचा है, जिसका मुख्य कारण खाद-बीज की कमी है ।

वहीं नकली खाद का धड़ल्ले से विक्रय भी किया जा रहा है । दिनांक 02/07/2021 को बालोद जिले के गुरूर विकासखंड के ग्राम छेड़िया में किसानों को पॉवरसील नामक नकली जैविक खाद बेचा जा रहा है तथा ट्रक से खाद की 290 बोरियां (50 किलो प्रति बोरी) यानी लगभग 10.50 टन ही प्राप्त हुई

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

है । इसी प्रकार बालोद जिले के ही डौण्डी विकासखंड के विभिन्न गांवों एवं राजनांदगांव जिले के मानपुर मोहला क्षेत्र अंतर्गत कई किसानों को यह नकली खाद बेचा गया है । बड़ी-बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियों के द्वारा भी किसानों को उन्नत किस्म एवं हाईब्रीड व बंपर पैदावार और कृषि जनित रोगों के उपयोगी बताकर उसका व्यापक प्रचार-प्रसार कर बाजार में अमानक खाद बिना रोक-टोक के बे-धड़क बेचा जा रहा है । साथ ही खाद की कालाबाजारी भी चरम सीमा तक पहुंच चुकी है धमतरी, जगदलपुर, दुर्ग बालोद गरियाबंद, कोरबा और सरगुजा जिला में कालाबाजारी कर सरकारी समितियों के अलावा अन्य खाद विक्रेताओं की दुकान में हाई-फाई दर पर आसानी से प्राप्त हो रहा है ।

आश्यर्च वाली बात यह है कि पूरा भ्रष्टाचार सरकार की आंख के सामने हो रहा है और सरकार कार्यवाही करने के बजाय चुप्पी साधी हुयी है इसके साथ खाद बीज आपूर्ति करने में भी सरकार पीछे भाग रही है । किसानों की हितैषी बताने वाली सरकार ने आज प्रदेश के किसानों को लाचार स्थिति में लाकर छोड़ दिया है, हालात दिन-प्रतिदिन बिगड़ते ही जा रही है ।

अत: इस महत्वपूर्ण मुद्दे पर सदन की कार्यवाही रोककर चर्चा कराई जाये । इस संबंध में शासन का क्या कहना है ।

कृषि मंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह सही है कि राज्य शासन द्वारा किसानों के लिये विभिन्न प्रकार की योजनाएं संचालित की जा रही हैं । कृषि राज्य सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता में से एक है, किसानों की आर्थिक उन्नति एवं कल्याण के लिये विभिन्न नवाचारी योजनाएं लागू की गई हैं इनमें से किसी भी योजना में भ्रष्टाचार का कोई मामला संज्ञान में नहीं आया है । राज्य आर्थिक रूप से मजबूत है तथा चालू वित्तीय वर्ष में कृषि हेतु 8474 करोड़ का बजट प्रावधान किया गया है । वर्ष 2020-21 में 7561 करोड़ का आवंटन विभाग के द्वारा जारी किया गया था जिसके विरूद्ध 98 प्रतिशत का व्यय किया जा चुका है जो स्वयं दर्शाता है कि किसान राज्य सरकार की प्राथमिकता में है ।

राज्य में खरीफ वर्ष 2020-21 में 11.75 लाख मीट्रिक टन रासायनिक उर्वरक तथा 9.52 लाख क्विंटल बीज की मांग आंकलित की गई थी। मांग के विरूद्ध अब तक 6.61 लाख मीट्रिक टन उर्वरक का तथा 9.08 लाख क्विंटल बीज का भंडारण किया जा चुका है, जो उर्वरक की मांग का 56 प्रतिशत तथा बीज की मांग का 95 प्रतिशत है। राज्य के किसी भी जिले में नकली खाद विक्रेताओं की कोई जानकारी संज्ञान में नहीं है। बल्कि राज्य में 2,235 निजी विक्रेताओं तथा 2,058 सहकारी समितियों के द्वारा नियमानुसार उर्वरा विक्रय प्राधिकार पत्र प्राप्त करके भारत सरकार द्वारा निर्धारित रीति से पी.ओ.एस. मशीन के द्वारा उर्वरक का विक्रय किया जा रहा है।

खरीफ वर्ष 2020-21 के लिए प्रदेश में यूरिया की मांग 5.50 लाख मीट्रिक टन के विरूद्ध 2.98 लाख मीट्रिक टन, डी.ए.पी. की मांग 3.20 लाख मीट्रिक टन के विरूद्ध 1.78 लाख मीट्रिक टन, एन.पी.के. की मांग 80 हजार मीट्रिक टन के विरूद्ध 53,820 मीट्रिक टन, एम.ओ.पी. की मांग 75



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

हजार मीट्रिक टन के विरूद्ध 55,997 मीट्रिक टन और एस.एस.पी. की मांग 1 लाख 50 हजार मीट्रिक टन के विरूद्ध 74 हजार 840 मीट्रिक टन, इस प्रकार 6.61 लाख मीट्रिक टन कुल उर्वरक की प्राप्त आपूर्ति माह अप्रैल से जुलाई के बीच में की गई।

खरीफ वर्ष 2020-21 हेतु 8 लाख 57 हजार क्विंटल धान बीज की मांग निर्धारित की गई थी। इसके विरूद्ध अद्यतन 8 लाख 57 हजार 878 क्विंटल बीज का भंडारण किया जा चुका और उक्त भंडारित बीज में से 7 लाख 63 हजार 318 क्विंटल बीज का उठाव किसानों द्वारा के किया जा चुका है, जो भण्डारित बीज की तुलना में लगभग 89 प्रतिशत है। इसी प्रकार 12 हजार 250 क्विंटल दलहनी फसलों के बीज की मांग के विरूद्ध 14 हजार 211 क्विंटल बीज उपलब्ध है और 9579 क्विंटल दलहनी बीजों का भंडारण किया जा चुका है, जो मांग की तुलना में 78 प्रतिशत है। उक्त भंडारित 9579 क्विंटल दलहनी बीजों में 5618 क्विंटल बीजों का उठाव किसानों के द्वारा किया जा चुका है, जो 59 प्रतिशत है। प्रदेश में वर्तमान में दलहनी फसलों की बुआई जारी है।

42,250 क्विंटल तिलहनी फसलों के बीज की मांग के विरूद्ध 8091 क्विंटल बीज उपलब्ध है। राज्य के साथ-साथ अन्य सोयाबीन बीज उत्पादक राज्यों में भी असामयिक वर्षा एवं प्रतिकूल मौसम के चलते सोयाबीन की फसल प्रभावित होने के कारण बीज का प्रोडक्शन प्रभावित हुआ, फलस्वरूप 5585 क्विंटल सोयाबीन बीज उपलब्ध कराया गया। खरीफ वर्ष 2020-21 हेतु निर्धारित मांग 7730 क्विंटल तिलहनी बीजों का भंडारण किया गया है, जिसके विरूद्ध 6620 क्विंटल बीजों का उठाव किसानों के द्वारा किया जा चुका है।

खरीफ वर्ष 2020-21 के लिए प्रदेश में 48.20 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में बुआई का लक्ष्य रखा गया है। अब तक 29.23 हेक्टेयर के खरीफ फसलों की बोनी की जा चुकी है, जो लक्ष्य का लगभग 61 प्रतिशत से अधिक है। वर्तमान में कुल्थी एवं रामतिल फसल की बोनी छोड़कर अन्य फसलों की बोनी का कार्य प्रगति पर है। चूंकि खरीफ फसलों की बोनी का कार्य अभी जारी है, अत: यह कहना सही नहीं है कि खाद और बीज की कमी के कारण बुआई का कार्य शेष है।

यह भी सही है कि दिनांक 02/07/2021 को बालोद जिले के गुरूर विकासखण्ड के ग्राम छेड़िया में पावरसील नाम का उत्पाद जैविक खाद के रूप में बेचा जा रहा था। जैसे ही मामला संज्ञान में आया, जिले के उप संचालक के द्वारा इसी दिनांक को तत्परतापूर्वक कार्यवाही करते हुए 210 बोरी (50 कि.ग्राम प्रति बोरी) की जब्ती की कार्यवाही की गई। प्रकरण कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी, बालोद की ओर प्रस्तुत किया जा गया है। बालोद जिले के डौंडी विकासखंड एवं राजनांदगांव जिले के मानपुर मोहला क्षेत्र अन्तर्गत किसानों को उक्त सामग्री विक्रय करने की जानकारी प्राप्त नहीं हुई है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों के द्वारा उन्नत किस्म के एवं हाइब्रिड व बंपर पैदावार और रोगों के प्रति सहनशील बताकर बाजार में अमानक खाद बेचे जाने का मामला प्रदेश में अभी किसी भी जिले में प्राप्त नहीं हुआ है और न ही



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

कालाबाजारी और अधिक दर पर बिक्री के संबंधित कोई शिकायत प्राप्त हुआ है। यद्यपि जिला बस्तर में उर्वरक (नियंत्रक) आदेश 1985 के प्रावधानों का उल्लंघन करने वाले 5 विक्रेताओं का उर्वरक स्कंध निरूद्ध करके विक्रय प्रतिबंध लगाकर कलेक्टर एवं दंडाधिकारी के न्यायालय में प्रस्तुत किया गया है । दिनांक 23 जुलाई 2021 में धमतरी जिले के कुरूद विकासखंड के ग्राम परखंदा में अवैध उर्वरक भंडारण एवं पैकेजिंग का मामला संज्ञान में आया । त्वरित कार्रवाई करते हुए उर्वरक निरीक्षक के द्वारा सामग्री जप्त करते हुए प्राथमिकी दर्ज कराई गई है । उक्त मामलों के अतिरिक्त जिला दुर्ग, जिला गरियाबंद, कोरबा, सरगुजा में कालाबाजारी या निर्धारित मूल्य से अधिक मूल्य पर विक्रय संबंधी कोई शिकायत दर्ज नहीं की गई है । कृषकों को उचित मूल्य पर एवं उच्च गुणवत्तायुक्त कृषि आदानों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए विभागीय निरीक्षकों द्वारा कृषि आदान विक्रय केन्द्रों का निरीक्षण निरन्तर किया जा रहा है । प्रदेश के कुल 1545 कृषि सहकारी समिति और 1 हजार निजी कृषि उत्पादन केन्द्रों द्वारा 160 थोक विक्रय केन्द्रों का विगत दिनों निरीक्षण किया गया । उर्वरक के कुल 1715 नमूने जांच हेतु प्रयोगशाला को भेजे गए । जिनमें से 1408 नमूनों का विश्लेषण हुआ, विश्लेषण में 55 नमूने अमानक पाए गए, जो टोटल का केवल 4 प्रतिशत है । इस प्रकार बीज के 2050 नमूने प्रयोगशाला को भेजे गए । बीज के 1978 विश्लेषित नमूनों में से 27 नमूने अमानक प्राप्त हुए जो केवल 1.4 प्रतिशत है । राज्य के किसानों को उच्च गुणवत्तायुक्त खाद एवं बीज उपलब्ध कराने का कार्य निरन्तर किया जा रहा है । राज्य सरकार की किसान हितैषी नीतियों के कारण राज्य सरकार की चहुंओर सराहना हो रही है । देश के अन्य राज्य छत्तीसगढ़ सरकार की नीतियों के अनुसरण को भी तैयार हैं । इस प्रकार शासन की नीतियों में किसानों में कहीं भी रोष एवं आक्रोश व्याप्त नहीं है ।

अध्यक्ष महोदय, मामला छत्तीसगढ़ के किसानों से संबंधित है, विपक्ष को भी मैं धन्यवाद् देना चाहूंगा । स्थगन प्रस्ताव तो केवल एक माध्यम होता है लेकिन अगर कोई कमियां है तो उसे सदन में बताएंगे । सरकार के जो किये जा रहे कार्य हैं, उनको हम सदन के माध्यम से प्रदेश की जनता तक पहुंचाना चाहते हैं । इसलिए आसंदी से आग्रह है कि इस स्थगन को ग्राह्य करके तत्काल चर्चा कराएं ।

अध्यक्ष महोदय :- स्थगन चर्चा हेतु ग्राह्य किया जाता है ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल (रायपुर नगर दक्षिण) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी हमने कृषि मंत्री जी का जवाब सुना । उनका जवाब सुनने के बाद तो ऐसा लगता है कि शायद कृषि मंत्री जी अपनी आंख बंद करके, अपने घर में सोए हुए हैं। आज पूरे छत्तीसगढ़ में लगभग 5 लाख किसान बीज की मांग को लेकर, खाद की मांग को लेकर सड़कों पर उतरे हुए हैं । उन्हें नकली बीज उपलब्ध कराया जा रहा है, इसे लेकर । माननीय कृषि मंत्री जी, आपकी जानकारी में है या नहीं । समाचार पत्रों में रोज छप रहा है, आज किसान सड़कों पर उतरे हैं । किसानों से कोई बात करने वाला नहीं है, कोई मिलने वाला नहीं है, कोई ज्ञापन लेने वाला नहीं है । ऐसी परिस्थिति पूरे छत्तीसगढ़ में जब फसल बोने का समय आया है

तब किसानों को खाद लेने के लिए दर-दर की ठोकरें खाना पड़ रहा है,  बीज लेने के लिए दर-दर की ठोकरें खाना पड़ रहा है । माननीय कृषि मंत्री जी, आपको ग़लत जानकारी दी गई है साढ़े 8 लाख टन धान के बीज की मांग आई थी, अभी तक केवल साढ़े 5 लाख टन धान का बी उपलबध करवाया गया है । बाकी बीज उपलब्ध नहीं हुआ है, किसान परेशान है । आपने स्वीकार किया है लेकिन आपने यह नहीं बताया कि सोयाबीन की कितनी डिमांड थी, आपने जवाब में क्यों नहीं बताया । छत्तीसगढ़ में 1 लाख क्विंटल सोयाबीन का बीज चाहिए । छत्तीसगढ़ में दलहन और तिलहन की फसल के बजाय सोयाबीन बहुत बड़ी मात्रा में बोया जाता है । लेकिन 1 लाख क्विंटल की जगह सिर्फ 5 हजार क्विंटल सोयाबीन का बीज आप उपलब्ध करवा रहे हैं, क्या यह छत्तीसगढ़ के किसानों के साथ मज़ाक नहीं है । क्या यह सरकार का फैल्यूवर नहीं है । 42 हजार क्विंटल तिलहन के बीज की आवश्यकता है, इसके बाद भी सिर्फ 5 हजार क्विंटल तिलहन का बीज आपके पास उपलब्ध है । आपको बीज विकास निगम ने कोई जानकारी दी है ? छत्तीसगढ़ के लोगों को तिलहन का बीज क्यों नहीं मिल रहा है, छत्तीसगढ़ के लोगों को दलहन का बीज क्यों नहीं मिल रहा है ? आपने अपने जवाब में दलहन के बीज में भी घूमाने की कोशिश की है । 14 हजार क्विंटल भंडारित है, 12 हज़ार क्विंटल वितरण के लिए उपलब्ध है और वितरण 65 प्रतिशत हुआ है । एक तरफ आप बात करते हैं कि छत्तीसगढ़ के किसानों को धान के अलावा बाकी फसलों की ओर जाना चाहिए । आपके पास में दलहन के, तिलहन के बीज उपलब्ध नहीं है, आपके पास में सोयाबीन के बीज उपलब्ध नहीं है । माननीय मंत्री जी ने यह नहीं बताया, आप हर बात छिपा जाते हैं । पिछले वर्ष आपके पास कितना खाद उपलब्ध था ? आपने इस वर्ष डिमांड भेजी, मेरे पास में पोर्टल के माध्यम से जानकारी है कि पिछले वर्ष आपके पास में यूरिया का क्लोजिंग स्टॉक 1 लाख, 69 हजार मेट्रिक टन था, आपने इसको छिपा दिया, कहीं नहीं बताया। यह जुलाई का है, जुलाई में 1 लाख, 40 हजार मेट्रिक टन की आवश्यकता थी, उसके बाद में यूरिया की कमी क्यों है, यूरिया कहां गया ? क्या आपने निजी व्यापारियों को बेचने के लिए छोड़ दिया ? आपके बाजू में मंत्री जी बैठे हुए हैं, उन्होंने आपको पत्र लिखा, उस पत्र के जवाब में आपने बताया है कि आपने 60 प्रतिशत खाद निजी लोगों को उपलब्ध करवा दिया, 40 प्रतिशत खाद सहकारी सोसायटियों को उपलब्ध करवाया । ये कौन लोग हैं, जिनको आपने उपलब्ध करवाया । सहकारी सोसायटियों में खाद उपलब्ध नहीं है और बाजार में ब्लैक मार्केटिंग हो रही है । आपके माध्यम से ही ब्लैक मार्केटिंग करने वाले लोग कौन हैं ? आखिर यह क्या हो रहा है कि किसानों को महंगे दरों पर खरीदने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है । आपके पास में डी.ए.पी. का क्लोजिंग स्टॉक 76 हजार टन था और डिमांड भी उतनी ही थी, उसके बाद डी.ए.पी. की कमी क्यों हो रही है ? लोगों को डी.ए.पी. क्यों नहीं मिल रहा है ? मुख्यमंत्री जी बार-बार केन्द्र सरकार से कहते हैं कि हमको तीन लाख टन अतिरिक्त खाद उपलब्ध करवायी जाये । जब आपके पास में धान का रकबा नहीं बढ़ा है, हमेशा आपको 11.5 लाख मेट्रिक टन खाद लगती थी और आप किसानों को

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

यूरिया, डी.ए.पी. से ज्यादा महंगी दर पर 10 रूपए किलो में मिट्टी बेच रहे हैं, उनको खरीदने के लिए मजबूर कर रहे हैं और बोल रहे हैं कि हमने 18 करोड़ किलो गोबर की खाद बनायी है । अगर 18 करोड़ किलो गोबर की खाद बनी है और आप उसको बेच रहे हैं तो फिर आपको अतिरिक्त खाद की आवश्यकता क्यों है ? आपने तो पूरे छत्तीसगढ़ में लूटने के लिए खाद बनाया है ।

श्री रविन्द्र चौबे :- शिवरतन जी, आप खाद के बारे में कितना समझेंगे, मैं आपसे कुछ नहीं कहना चाहता ।

श्री शिवरतन शर्मा :- मैं अपने हाथों से पूरी किसानी करता हूं ।

श्री रविन्द्र चौबे :- मुझे मालूम है ।

श्री शिवरतन शर्मा :- सिंचाई का सबसे पहला कनेक्शन मेरे घर में लगा है ।

श्री रविन्द्र चौबे :- हमें मालूम है । सम्माननीय बृजमोहन जी, कम से कम गोठानों से निर्मित हो रहे वर्मी कम्पोस्ट को आप मिट्टी क्यों बोल रहे हैं ?

श्री शिवरतन शर्मा :- वह खरसी है, खरसी । खाली गोबर पीसकर भेज दिया गया है । आप सदन को गुमराह कर रहे हैं ।

श्री रविन्द्र चौबे :- एक मिनट, आप बैठिए । आज ही के बहुत प्रतिष्ठित अखबार में डॉ. रमन सिंह जी के विधान सभा क्षेत्र का एक बड़ा न्यूज़ छपा है । न्यूज छपा है कि अमेजन में, फ्लिपकार्ट में हमारा फर्टिलाईज़र बिक रहा है । आप उसको मिट्टी बोल रहे हैं । यह तो दुर्भाग्य है न ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- यह दुर्भाग्य नहीं है । मंत्री जी, आप जरा बता दें ।

श्री अजय चन्द्राकर :- सुबह अखबार में छप गया है, उस पर आप बहस कर रहे हैं, यह मंत्री जी बोल रहे हैं । अभी अखबार में आपके पक्ष में छपा है तो आप उदाहरण दे रहे हैं । संसदीय कार्यमंत्री जी, आपकी परिभाषा बड़ी जोरदार है ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्यमंत्री जी भी बैठे हैं, माननीय कृषि मंत्री जी, आपने गोबर कब से खरीदना शुरू किया ? गोबर का खाद बनने में, वर्मी कम्पोस्ट बनने में कितना महीने लगते हैं, आप बतायें और उसकी गणना कर लें । गणना करने के बाद में आजतक कितनी खाद बनेगी ? कम से कम तीन महीने का समय चाहिए । वर्मी कम्पोस्ट खाद बनने के बाद उसको सूखाकर फिर उसको पैकिंग करने के लिए एक गोठान को कम से कम एक एकड़ की जगह चाहिए । आपने कहीं पर ट्रेनिंग दी है क्या ? मैं आपसे जानना चाहता हूं, मैं वर्मी कम्पोस्ट बनाता हूं । वर्मी कम्पोस्ट बाजार में भी बिकती है । कर्मी कम्पोस्ट को बनने के लिए कम से कम तीन महीने का समय चाहिए, उसको सूखाने के लिए एक एकड़ की जगह चाहिए । सूखने के बाद में उसको पैकिंग करते हैं, फिर देते हैं ।  आप तो किसानों को मजबूर कर रहे हैं। डी.ए.पी. क्या रेट में मिल रहा है ? यूरिया क्या रेट में मिल रहा है ? गोबर का खाद उससे ज्यादा महंगा है। आपको खाली पब्लिसिटी लेना है कि

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

हम गोबर खरीद रहे हैं। इससे किसानों को कितना नुकसान हो रहा है ? किसान, आपसे ज्यादा समझते हैं कि वर्मी कम्पोस्ट क्या होता है, वर्मी कम्पोस्ट खाद क्या होती है, जैविक खाद क्या होती है। आप उनको खरीदने के लिए क्यों मजबूर कर रहे हैं? अगर आप ये नहीं लेंगे तो डी.ए.पी. नहीं मिलेगा, यूरिया नहीं मिलेगा, कह रहे हैं। आप किसानों का शोषण कर रहे हैं और किसान इससे खुश नहीं हैं। यह मैं नहीं कह रहा हूं, यह रोज समाचार-पत्रों छप रहा है। रोज मीडिया में आ रहा है। माननीय अध्यक्ष महोदय, इसी प्रकार एम.ओ.पी. खाद का क्लोजिंग स्टॉक जुलाई में 46 हजार मीट्रिक टन था, उसी डिमाण्ड मात्र 20 हजार टन थी तो फिर लोगों को खाद क्यों उपलब्ध नहीं हो रहा है ? यह आपके पोर्टल में है कि आपके पास जुलाई में कितना खाद उपलब्ध है। उसके बाद भी उनको खाद क्यों नहीं मिल रहा है?

माननीय अध्यक्ष महोदय, इसी प्रकार से बीज का मामला है। आप बीज के मामले में जरा बता दें। आपने कहा कि अभी तक साढ़े सात लाख टन बीज बंट गया है। यह बंटा नहीं है, यह आपके गोदामों तक जाने की सूचना है। बंटने का मामला तो 4 लाख 5 हजार मीट्रिक टन है। आप देख लें, आपको गलत जानकारी दी गई है। आप ठीक से देख लेंगे तो आपको समझ में आ जायेगा कि किसानों को मोटे धान की बुआई के लिए बीज उपलब्ध नहीं हो रहा है। वे बाजारों से खरीदने के लिए मजबूर हो रहे हैं। मैं आपसे पूछना चाहता हूं केन्द्र सरकार ने कब कितनी डिमाण्ड की ? किस महीने में कितना भेजने के लिए कहा ? हम बार-बार कह रहे हैं कि आप श्वेत-पत्र जारी करिये। आप क्यों श्वेत-पत्र जारी नहीं कर रहे हैं कि पिछले साल आपके पास कितना अतिरिक्त स्टॉक था ? आप इसके बारे में क्यों नहीं बता रहे हैं ? पोर्टल में इस वर्ष जुलाई में कितना स्टॉक दिखाई दे रहा है, यह क्यों नहीं बता रहे हैं ? सोसायटियों में क्यों उपलब्ध नहीं है ? आपके वितरण व्यवस्था में गड़बड़ी है। सिंगल लॉक में सही समय पर खाद पहुंच जानी चाहिए, डबल लॉक से सिंगल लॉक में खाद नहीं पहुंच रही है। हमने, हमारी सरकार के समय निर्णय लिया था कि जब कम्पनियों से खाद आयेगी तो पहले उसको सिंगल लॉक में भरा जायेगा, बाद में डबल लॉक में भरा जायेगा। परन्तु आपने उस निर्णय को पलट दिया। आपके अधिकारी उसको नहीं मान रहे हैं। अगर सिंगल लॉक में, सोसायटियों में खाद पहुंचना शुरू हो जाये तो खाद की आधी कमी दूर हो जायेगी। अब तक जितना मामला है, यह पूरा व्यवस्था का मामला है। कोई देखने वाला नहीं है। भगवान भरोसे पूरी व्यवस्था चल रही है। राजनांदगांव में मटेवा में खाद वितरण केन्द्र में 8 गांव के लोग एकत्रित होकर खाद नहीं मिलने पर 40 घण्टे का धरना दिए। अगर सब व्यवस्था सही चल रही है, तो ये लोग धरना क्यों दे रहे हैं ।

वाणिज्य मंत्री (श्री कवासी लखमा) :- दिल्ली में किसान लोग कितने महीने से धरना दे रहे हैं ? ये लोग 40 घंट धरना दिए होंगे, दिल्ली वाले कितने महीने से धरना दे रहे हैं ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अभी हम छत्तीसगढ़ में बैठे ,छत्तीसगढ़ की बात करें। स्थगन प्रस्ताव छत्तीसगढ़ का है। कुछ नहीं होगा, अगर छत्तीसगढ़ को ऐसे ही लूटते रहोगे तो ज्यादा काम नहीं आयेगा। जैसे बृहस्पत सिंह के साथ हो रहा है, कल आपके साथ भी हो जायेगा।

श्री अजय चन्द्राकर :- इतना बड़ा-बड़ा बिना स्टेयरिंग के बिक रहा है।

श्री कवासी लखमा :- इतना बड़ा किला लगा रखा है, आपकी मोदी सरकार। मोदी सरकार क्या कर रहा है ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- कवासी जी, अच्छा आप क्या बता रहे हो ? अध्धा या बोतल ? यह अपने विभाग का बता रहे हैं क्या ?

समय :
3:33 बजे

**(सभापति महोदय (श्री देवव्रत सिंह) पीठासीन हुए)**

माननीय सभापति महोदय, पखांजुर में खाद की किल्लत को देखते हुए किसानों ने एस.डी.एम. कार्यालय का घेराव किया। 30 जून को बीज की कमी को देखते हुए कोण्डगांव, महासमुन्द में किसानों ने रैली प्रदर्शन किया। दुर्ग जिले के 70 प्रतिशत समितियों में डी.ए.पी., यूरिया, खाद नहीं है। माननीय कृषि मंत्री जी, मुख्यमंत्री जी, गृहमंत्री जी, रूद्र गुरू जी, जिस जिले से 5-5 मंत्री आते हैं, उस जिले की यह हालत है, 70 प्रतिशत समितियों में डी.ए.पी. खाद नहीं है। मुख्यमंत्री जी, यह आलम, अव्यवस्था के कारण है। खाद की कमी नहीं है, निजी लोगों को ज्यादा खाद की सप्लाई कर दी गई। सहकारी सोसायटियों में कम खाद सप्लाई की गई, उसके कारण यह पूरी व्यवस्था बनी हुई है। "8 जून को राजनांदगांव के मुरमुंदा सोसायटी में खाद के लिए भटक रहे किसानों ने ताला जड़ दिया ।" ताला जड़ने वाला मैं गया था, ताला कौन जड़ा, आपने एक भी बात को स्वीकार नहीं किया कि खाद की कमी क्यों हैं, किसलिए है, क्यों नहीं मिल रही है, क्या कारण है, आपने कहीं नहीं कहा, किसानों ने क्यों ताला जड़ा ? "धमतरी जिले के परेशान किसान खाद की कमी को लेकर रैली निकाली और ज्ञापन सौंपा," क्यों निकाल रहे हैं ? "राज्य सरकार में पूरे प्रदेश के किसानों को नकली खाद और अमानक बीज की सप्लाई की गई ।" बालोद जिले में 300 बोरी नकली जैविक खाद बेचते हुये मध्यप्रदेश के युवक को पकड़ा गया," राजनांदगांव जिले के मानपुर मोहला में इसी युवक ने फिर वहां पर नकली खाद बेची । "प्रदेश में भारी तादाद में बीज के नमूने अमानक पाये गये ।" आप खाली बता देते हैं कि इतने नमूने लिये गये, अमानक कितने पाये गये, उसके बारे में आपने नहीं बताया? वह अभी सैम्पलिंग के स्तर पर है । कितनी खाद अमानक पाई गई, वह भी सैंपलिंग के स्तर पर है । किसानों के साथ जरा रहम करो, अन्याय मत करो । किसानों के साथ अत्याचार मत करो । छत्तीसगढ़ की 90 प्रतिशत आबादी खेती किसानी के ऊपर निर्भर है । शहरों में रहने वाले 90 प्रतिशत लोग कहीं न कहीं गांवों से जुड़े हुये हैं, खेती

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

किसानी से जुड़े हुये हैं । परन्तु इस सरकार के राज में 2500 रूपये का झुनझुना देकर, एक साल में चार बार देंगे, उसके आधार पर किसानों की लूट चल रही है, किसानों को परेशान करने का काम चल रहा है । उनको खाद नहीं मिल रही है ।

श्री कवासी लखमा :- किसको नहीं मिल रहा है ?

श्री शिवरतन शर्मा :- हमको बताने की जरूरत नहीं है, अपने जनघोषणा पत्र को पढ़वा लो, जो बाजू में बैठे हैं ।

श्री सेवनलाल चन्द्राकर :- सभापति महोदय, पहले आप लोग अपना जनघोषणा पत्र याद करो । 15 साल तक कैसे ठगे हो । 270 रूपये बोनस, 300 रूपये बोनस, 2100 रूपये में धान खरीदी । आप लोग पहले ठग चुके हो ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- सूरजपुर जिले के ओड़गी क्षेत्र में किसानों को मक्के के 60 क्विंटल बीज बांटने के लिए दिया गया, खाली 20 क्विंटल ही बांटा गया । 40 क्विंटल कहां चला गया ? क्या यह सरकार नकारा हो गयी है या सरकार का नियंत्रण समाप्त हो गया है ? जितना यहां से जाता है, राजीव गांधी जी ठीक बोलते थे, हमारी सरकार में हम 100 रूपये भेजते हैं तो 10 रूपये नीचे पहुंचता है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- 15 रूपये ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- 15 रूपये पहुंचता है । शायद यह सरकार भी उसी को आदर्श मानकर चल रही है । यहां से भेजती कुछ है और वहां पहुंचता कुछ है । राजनांदगांव जिले में सोयाबीन के किसानों को सोयाबीन का बीज ही नहीं मिल पाया । किसानों को दोगुने रेट पर सोयाबीन का बीज खरीदना पड़ रहा है । कौन दोषी है ? क्यों खरीदना पड़ रहा है ? सोयाबीन के बीज का स्टॉक क्यों नहीं हुआ ? मैं भी कृषि मंत्री रहा हूँ, आपके एग्रीकल्चर जो कमिश्नर होते हैं, वह संभाग में बरसात आने के पहले मानिटरिंग के लिए जाते हैं, जिलों का दौरा करते हैं, कितने बीज की आवश्यकता होती है, इसकी डिमांड आती है, उसके हिसाब से व्यवस्था होती है, पूरे देश में कहीं से भी बीज बुलाने की आवश्यकता हो तो वहां से बीज बुलाया जाता है, मेरी जानकारी में नहीं है । आपकी सरकार में एग्रीकल्चर प्रोडक्शन कमिश्नर कोई इस प्रकार के दौरे कर रहा है । कोई जानकारी हासिल कर रहा है । आपके पास में रिपोर्ट दे रहा है, कितने बीज की आवश्यकता है, कहां से बुलवाना है, इसके बारे में कोई चिन्ता आपकी सरकार में नहीं की जाती है । अंबिकापुर जिले के किसानों को धान एवं मक्का का बीज नहीं मिला, धान और मक्का के बीज को दोगुने रेट पर उनको खरीदना पड़ा, बिलासपुर जिले में तो रायपुर से घटिया बीज की जांच करने वाले अधिकारी जब धान का बीज नमक पानी में घोलकर डाला, तो पूरे बीज तैरने लगे । यह आपके अधिकारी कर रहे हैं । अमानक बीज बता रहे हैं । परन्तु उसके बाद भी आप जागने को तैयार नहीं है, आप सुनने को तैयार नहीं है, जवाब देने को तैयार नहीं है, आप व्यवस्थाओं को दुरूस्त करने के लिए तैयार नहीं है । राजनांदगांव जिले के घुमका सहकारी सोसायटी में ग्राम मुड़पार के किसानों द्वारा



अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

धान बेचकर ऋण अदा करने के बाद उनको उसके बाद भी ऋणी बताया जा रहा है, उनको खाद और बीज उपलब्ध नहीं करवाई जा रही है । आखिर किसानों के साथ अन्याय क्यों हो रहा है ? "दुर्ग जिले के धमधा ब्लॉक और बालोद जिले में बीज उत्पादक किसानों के साथ बीज उत्पादन कंपनियों ने बड़े पैमाने पर ठगी की ।" क्षेत्र के 23 गांव के किसानकंपनी के खिलाफ शिकायत लेकर थाने पहुंचे । सब कंपनियां नकली बीज देकर, जर्मिनेशन नही हो रहा है, अभी मेरे पास में शिकायत है, बीज विकास निगम के द्वारा धान का बीज बांटा गया है, उसमें भी जर्मिनेशन 70 परशेंट हो रहा है । इतने अमानक बीज कभी नहीं गये हैं । हमारे बीज विकास निगम की एक प्रतिष्ठा बनी थी, हम जो बीज देते थे, उसमें 99 परशेंट जर्मिनेशन होता था, आज मानिटरिंग की कमी के कारण, उसमें साफ-सफाई नहीं होने के कारण, आज 70 परशेंट से ज्यादा जर्मिनेशन नहीं हो रहा है, उसके कारण किसान बाहर से बीज खरीदने के लिए मजबूर है। आपने बहुत सारी नई सोसायटियां बनी दीं, उन सोसायटियों का किसानों से लींकेज नहीं हुआ, उनके खाते वहां पर नहीं पहुंचे। वहां पर खाद, बीज नहीं पहुंचा। पुरानी सोसायटियों से उनको खाद, बीज नहीं मिल रहा है और नई सोसायटी बोलती है कि अभी हमारे कम्पयूटर में आपका डाटा अपडेट नहीं है। ऐसे लाखों किसान हैं जिनको आपने नई सोसाइटियों का मेम्बर स्थानांतरित कर दिया, परन्तु इन सोसायटियों के पास में इन्फ्रास्ट्रक्चर नहीं होने के कारण उन सोसायटियों के माध्यम से किसानों को धान, बीज, लोन और लींकेज की सुविधा नहीं मिल रही है। क्या कभी आपकी जानकारी में ये बात आई है? आपने इसको ठीक करने की कोशिश की? सहकारिता मंत्री जी भी बैठे हुए हैं। ऐसे कितने किसान हैं? एक लाख से ज्यादा किसान हैं जिनका नई सोसायटियों में लींकेज नहीं हुआ है। उसके कारण उनको खाद, बीज नहीं मिल रहा है। सारंगढ़ ब्लाक में सहकारी समितियों ने खाद मांग रहे किसानों के जबरन खेतों में विटामिन पाउडर पकड़ा दिया कि खाद नहीं है आप यह विटामिन पाउडर ले जाओ, इसको डाल लो। विटामिन पाउडर से क्या होगा? आज किसान को कैसे लूटा जा रहा है। वह सब आपकी अव्यवस्था के कारण है।

उद्योग मंत्री (श्री कवासी लखमा) :- माननीय बृजमोहन जी, यह लूटा नहीं जा रहा है। यह डीजल, पेट्रोल का रेट बढ़ने के कारण किसान ज्यादा परेशान हैं। उसके लिए आपका क्या कहना है? डीजल, पेट्रोल का रेट रोज बढ़ रहा है। आप मोदी जी को थोड़ा बोलिये कि डीजल, पेट्रोल का रेट कम करें। इसीलिए किसान ज्यादा परेशान हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय सभापति महोदय, जब छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की सरकार बनी तो 186 करोड़ रुपये डीजल, पेट्रोल से टैक्स मिलता था, आज 650 करोड़ रुपये टैक्स मिल रहा है। टैक्स कम कर दें। छत्तीसगढ़ की सरकार को डीजल, पेट्रोल से ढाई से तीन गुना जी.एस.टी. मिल रहा है। आप टैक्स कम कर दीजिए। जब हमारी सरकार थी, डॉ. रमन सिंह जी मुख्यमंत्री थे, हमने एक बार पेट्रोल, डीजल पर 5 रुपये टैक्स कम किया था। आप भी टैक्स कम कर दीजिए, बहुत ज्यादा मत करिये, 10



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

रुपये कम कर दीजिए। लोगों को सुविधा मिलेगी। परंतु उसके बाद भी आप कुछ करने के लिए तैयार नहीं हैं। अब केन्द्र सरकार का आदेश आ गया कि डी.ए.पी. 1200 रुपये में किसानों को मिलनी चाहिए, उसके बाद भी छत्तीसगढ़ में 1850 रुपये में डी.ए.पी. मिल रही है। उनसे 650 रुपये जो अतिरिक्त राशि ली गई, मैंने पेपर में आपका स्टेटमेंट पढ़ा है। आपने कहा है कि जिनसे 650 रुपये ज्यादा लिया गया है, मैं उनको वापिस करवाऊंगा। आप जरा यह बता दें कि कितने लोगों को वापिस हुआ है ? हम यह सदन में जानना चाहते हैं कि कितने लोगों को यह राशि वापिस हुई है ? क्या आपके पास में कोई आंकड़ें, जानकारी है ? खाली आपको जो लिखकर दे दिया गया, उसको आपने पढ़ दिया। इससे काम नहीं चलने वाला है। इससे छत्तीसगढ़ के हितों की सुरक्षा नहीं होने वाली है। छत्तीसगढ़ के किसानों के हितों की रक्षा उनकी छोटी से छोटी चीज की चिंता करने से होगी। आपने तो 2500 रुपये दे दिया, अब हमको किसानों के लिए कुछ करने की जरूरत नहीं है।

संसदीय कार्य मंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- 2500 रुपये से आपको कुछ ज्यादा ही तकलीफ है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय सभापति महोदय, मेरे को तकलीफ नहीं है। मेरे को तकलीफ इस बात है कि किसानों को पंप का कनेक्शन नहीं मिल रहा है, किसानों को सोलर पंप का कनेक्शन नहीं मिल रहा है, किसानों को खाद, बीज नहीं मिल रहा है, किसानों को लूटा जा रहा है और निजी लोगों को खाद और बीज खरीदने के लिए किसानों को मजबूर होना पड़ रहा है। मेरे को इस बात से तकलीफ है कि किसानों को अपना पंप चलाने के लिए 50 प्रतिशत भी बिजली नहीं मिल रही है। यह सरप्लस स्टेट था।

लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी मंत्री (श्री गुरू रूद्र कुमार) :- इनको इस बात से भी तकलीफ है कि मंहगाई बढ़ने से लोग खाना खाना नहीं छोड़ रहे हैं।

श्री कवासी लखमा :- यही तो होने वाला है।

श्री अजय चन्द्राकर :- कल आपका प्रश्न का दिन है। कल आप भागना मत।

श्री शिवरतन शर्मा :- कल अपने बाजू वाले को थोड़ा बाहर बैठा देना और अकेले जवाब देना।

सभापति महोदय :- बृजमोहन जी, आप कितना और समय लेंगे ? कृपया 02 मिनट में समाप्त करेंगे, क्योंकि 20 से ऊपर वक्ता हैं।

श्री रामकुमार यादव :- चन्द्राकर जी, छत्तीसगढ़ मा कय प्रकार के जमीन होथे, जानथे हा ? मकासी, करोला, कन्हार काला कहथे ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- सब जानथौं। तैं मिले बर आ जाबे, मैं तोला बता देहूं काला बोलथे।

श्री अजय चन्द्राकर :- ऐसा कर मोर खेत चल देबे। कय एकड़ में रोपा लगे हे, देख के आ जाबे। मैं फोन कर देहूं, देख के आ जाबे।

श्री रामकुमार यादव :- तैंहा तो खेती नई करव ?



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

सभापति महोदय :- चलिये आप तो आगे बोलिये।

श्री अजय चन्द्राकर :- मुख्यमंत्री जी जाम लगवाये हे, तेला देख के आ जाबे। सुनत हस कि नई।

श्री रामकुमार यादव :- वह तो ट्रेक्टर जोते हे, लइहरा मताए हे, वो हा।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय सभापति महोदय, जो 1200 रूपये का डी.ए.पी. है वह किसान बाजार से 2500 रूपये में खरीदने को मजबूर होना पड़ रहा है। 266 रूपये का यूरिया है वह 500 रूपये में खरीदने को मजबूर होना पड़ रहा है। 850 रूपये का जो पोटास है वह बाजार में 1000 रूपये में खरीदने को मजबूर होना पड़ रहा है और यह सरकार की अव्यवस्था के कारण हो रहा है। माननीय सभापति महोदय, मैंने जो शुरूआत में कहा। माननीय मुख्यमंत्री जी आप पुनर्विचार करिये कि आपने जो 10 रूपये का कम्पोस्ट खाद खरीदने के लिएमजबूरी कर दी है जरा 2 रूपये में गोबर खरीदकर और 10 रूपये में उसको बेचना, कितना उचित है? क्या उसका रेट यूरिया से भी ज्यादा होना चाहिए? क्या उसका रेट डी.ए.पी. से भी ज्यादा होना चाहिए। क्या उसका रेट पोटास से भी ज्यादा होना चाहिए? आपको इस बात के ऊपर में चिंता करनी चाहिए और किसान खुद भी इसको बनाना जानता है। मेरा कहना यह नहीं है कि उसको अगर मर्जी हो तो वह खरीदे, लेकिन मजबूरी नहीं होनी चाहिए। उसको खरीदने के लिए जो मजबूर किया जा रहा है यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है।

माननीय सभापति महोदय, पूरे छत्तीसगढ़ में खाद बीज, बिजली की अव्यवस्था है। आप सिंचाई मंत्री भी हैं। अभी पिछले दिनों 15 दिनों तक पानी नहीं गिरा। खेत सूख गए, दरारें पड़ गईं आपने कहीं पानी छोड़ने के लिए आदेश नहीं किया। आपको आदेश करना चाहिए या नहीं करना चाहिए ?जल उपयोगिता समिति की बैठक होनी चाहिए या नहीं होनी चाहिए? कहीं पर जल उपयोगिता समिति की बैठक नहीं हुई। कहीं पर पानी छोड़ने को निर्देश नहीं हुआ। बिजली की अव्यवस्था के कारण किसानों के पम्प भी नहीं चले और इसलिए जो बहुत सारे किसानों ने रोपा लगाया था, जो नर्सरी लगायी थी, वह भी सूखने लगी है और इस व्यवस्था को ठीक करने के लिए आज पूरा छत्तीसगढ़ का किसान, भारतीय जनता पार्टी का किसान मोर्चा पूरे छत्तीसगढ़ की 90 विधानसभाओं में जंगी प्रदर्शन कर रहा है। किसानों की अभिव्यक्ति को सामने ला रहा है किसानों के दु:ख दर्द को सामने ला रहा है। इस सरकार को अब कुम्भकरणीय निद्रा से जागना चाहिए और किसानों के हित में जो भी निर्णय लेने चाहिए, वह निर्णय जल्दी से जल्दी ले। आज एक महत्वपूर्ण विषय चल रहा था। परंतु किसानों का विषय महत्वपूर्ण था इसलिए हमने कहा कि हम उस विषय पर कल चर्चा करेंगे। हम आज किसानों के विषय पर चर्चा करें। आपने स्थगन प्रस्ताव को ग्राह्य करके चर्चा करवाई हम तो चाहेंगे कि हमने जितने बिंदु उठाए हैं उसका बिंदुवार सरकार की तरफ से जवाब आना चाहिए। मैं तो कहूंगा कि कि चौबे जी, आपने तो जवाब पढ़ दिया। अब माननीय मुख्यमंत्री जी उपस्थित हैं। अब इसके अंत में जो जवाब दें तो मुझे लगता है कि मुख्यमंत्री जी के पास में सर्वाधिकार होते हैं तो वह विभिन्न प्रकार की घोषणाएं वह कर सकते हैं अगर

वह घोषणाएं करेंगे किसानों के पम्प कनेक्शन, किसानों के खाद, बीज, बिजली सप्लाई के बारे में करेंगे तो मुझे लगता है कि इस स्थगन प्रस्ताव का औचित्य हमने इस सदन में लाया है तो किसानों के हित में प्रतिपादित हो पाएगा। माननीय सभापति महोदय, आपने मुझे बोलने का समय दिया, उसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद्।

सभापति महोदय :- श्री संतराम नेताम जी।

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- संतराम जी तुंहर इहां खातू के कमी हे धन नइ हे?

श्री संतराम नेताम (केशकाल) :- वह भी बताऊंगा। आप सब लोग सुनिए तो। एकदम पहले से ही टोक देंगे तो कैसे बनेगा? धीरे-धीरे ये पन्ना लेकर बैठा हूँ।

श्री अजय चन्द्राकर :- क्या है केशकाल के नीचे पानी गिरता है तब गंगरेल भरता है। पहले उधर पानी गिरवाओ, गंगरेल भरेगा तब फिर दूसरी तरफ पहुंचेगा।

श्री संतराम नेताम :- चलिए, ठीक है।

श्री अमितेष शुक्ल :- माननीय अजय भईया, आप नाम तो ठीक से बोलना शुरू करिये। पंडित रविशंकर शुक्ल बांध को गंगरेल, गंगरेल चिल्लाते हो। आप इतने ज्ञानी आदमी हो।

श्री संतराम नेताम :-माननीय सभापति महोदय, हमारे विपक्ष के साथियों ने जो आज स्थगन लाया है मैं समझता हूँ कि किसानों के हित के लिए अच्छा सोच समझ कर लाया है, पर सभापति महोदय मैं एक बात कहना चाहता हूँ ..।

श्री शिवरतन शर्मा :- संतराम नेताम जी, एक मिनट। अमितेष जी, वास्तव में आपकी कद्र को माननीय मुख्यमंत्री जी नहीं समझ पा रहे हैं। वहां आपकी योग्यता, क्षमता का उपयोग नहीं हो रहा है।

श्री अमितेष शुक्ल :- आपको कुछ दिनों बाद पता चलेगा कि कितनी कद्र करते हैं।

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :-माननीय सभापति महोदय, मुझे तो अभी कुछ ही साल हुए हैं। रमन सिंह जी 15 सालों तक सत्ता में रहे, आपकी कद्र नहीं समझे। (हंसी)

श्री शिवरतन शर्मा :-मैं कुछ दिनों का महामंत्री रहा। मेरी कद्र थी कि मैं पार्टी के संगठन के काम को देखते रहा।

श्री अजय चन्द्राकर :- यदि कुछ दिन होगा तो पहला नंबर बृहस्पत सिंह जी का आएगा। आपका नंबर नहीं आएगा।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- नहीं और आपको तो मुख्यमंत्री जी ने वहां पर बोल दिया कि आपने रिफ्यूज कर दिया है, कुछ नहीं बनना है।

सभापति महोदय :- चलिए, संतराम जी, आप अपनी बात कहिए।

श्री अमितेश शुक्ल :- आप देखिए, इस बात को घुमाईये मत।

श्री शिवरतन शर्मा :- आपको छत्तीसगढ़ कांग्रेस ने धरोहर के रूप में स्वीकार कर लिया है।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अमितेश शुक्ल :- किसान के गंभीर मुद्दे को इधर-उधर मत करिये। आप शांति से बैठिए और सुनिये।

श्री अजय चंद्राकर :- जितनी फोटो आपके घर में हैं, उसकी एक प्रदर्शिनी आप विधानसभा में लगवाओ।

सभापति महोदय :- संतराम जी, आप अपनी बात कहिए।

श्री रामकुमार यादव :- चंद्राकर जी, हमर विधायक दल के खली ए खली, ओ हा मजबूत चट्टान ए।

श्री संतराम नेताम :- सभापति महोदय, हमारी जो सरकार है, माननीय मुख्यमंत्री जी है, उनकी सोच है, प्रदेश में हमारे 80 प्रतिशत किसान लोग हैं और धान की खेती करते हैं। हमारी प्राथमिकता हमारी सरकार की प्राथमिकता कृषि और किसान है। हमारी सरकार अगर आज चिंता कर रही है तो खेती और किसानों के प्रति चिंता कर रही है। हमारी सरकार किसानों के लिए विभिन्न प्रकार की नवाचारी योजना प्रदेश में चल रही है। अभी वित्तीय वर्ष में 8 लाख 474 करोड़ के बजट का प्रावधान किया गया था। वर्ष 2020-21 में 7,561 करोड़ का आबंटन भी जारी किया गया है। 98 प्रतिशत व्यय किया गया है। इससे स्पष्ट होता है कि हमारी सरकार किसानों के प्रति काफी प्रतिबद्ध है। हमारे पूर्व में कृषि मंत्री रहे हैं, मैं उनके बारे में बताना चाहता हूं, आज उनको 15 साल के बाद किसानों के प्रति चिंता करनी की जरूरत पड़ी। कृषि मंत्री रहते हुए हमने उनको कहा था कि हमारे कोण्डागांव जिले में मक्का का जो बीज जा रहा है, वह काफी घटिया स्तर का जा रहा है। किसान लोग उस बीच को खेत में लगाये, बीज लगाने के बाद कई महीनों तक फसल उत्पादन नहीं हुआ। आज कई किसानों का वह फसल बर्बाद हुआ है। उनकी भरपाई कैसे करेंगे। आज विपक्ष में रहने के बाद किसानों की तकलीफ समझ में आ रही है। धान की जो पूर्ति होती थी, वह समय के बाद जाता था। जब हमारे किसान बुनाई करते थे, खाद, बीज हमारे क्षेत्र के लोग पूरा कर लेते थे तब यह भारतीय जनता पार्टी की सरकार के द्वारा वह धान जाता था। एक बार हमारे कोण्डागांव में धान को एक प्राईवेट मकान में रखा गया था। उस धान को मैंने जप्ती कराई। यहां पर विधानसभा में मामला उठाया, उस मामले की जांच करवाई। इस प्रकार से वहां कालाबाजारी हुई थी।

श्री अजय चंद्राकर :- भैया, संतराम जी, इस साल का बोलो ना। अभी क्या हाल है उसमें बोलो।

श्री संतराम नेताम :- मैं उसमें भी आ रहा हूं। आप अभी किसानों के प्रति बहुत चिंता कर रहे हैं। हमारी जो सरकार है, वह किसानों के प्रति चिंता करती है। अभी आप देखेंगे जब से हमारी सरकार छत्तीसगढ़ में है, बराबर किसानों को खाद और बीज लगातार पहुंच रहा है। भारतीय जनता पार्टी की सरकार 15 साल तक रही। किसानों का मुद्दा हमने 2013 में आवाज उठाया। आपने किसानों के साथा धोखा किया है, आपने किसानों को 2100 रूपये समर्थन मूल्य देने की बात कही। जब हमने कोण्डागांव



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

में आवाज उठाई, हमारे मोहन मरकाम जी विधायक हैं, मैं भी उस समय विधायक था। 2014 में आर्थिक नाकाबंदी की। यही सरकार हमारे खिलाफ में एफ.आई.आर. दर्ज कर हमको गिरफ्तार कर लिया। एक साल तक हम लोग उसकी लड़ाई लड़े, वह किसान का दर्द आज आपको नजर आ रही है। सभापति महोदय, जब ये हमारे राजीव गांधी न्याय योजना का विरोध करते हैं, केन्द्र सरकार को क्यों नहीं कहते कि समर्थन मूल्य दें। क्यों चावल खरीदने के लिए मना कर दिया ? हमारी सरकार किसानों के प्रति चिंता करते हुए उन्होंनें 11 हजार किसानों का कर्ज माफ किया। यह हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी की सोच है। (मेजों की थपथपाहट) यह हमारे मुख्यमंत्री की किसानों के प्रति गंभीरता है। हमारे मुख्यमंत्री जी लगातार कहते रहे कि इनको समर्थन मूल्य दिया जाए पर केन्द्र मैं बैठी सरकार ने कह दिया कि हम चावल नहीं लेंगे। हमारे मुख्यमंत्री जी ने एक निर्णय लिया, राजीव गांधी न्याय योजना के तहत् हमारे किसानों को आर्थिक रूप से मजबूत करने के लिए 2500 रूपये धान का समर्थन मूल्य देने की बात की।

श्री अजय चंद्राकर :- ताकि वह ब्लैक में खातू और बीज खरीद सके। आपका कहना यह है।

श्री संतराम नेताम :- चंद्राकर साहब, आप भी मंत्री रहे हैं। आपके बारे में भी देखें हैं। सभापति महोदय, एक बात कहना चाहता हूं अगर कोई चिंता कर रही है, छत्तीसगढ़ की माननीय भूपेश बघेल की सरकार कर रही है, छत्तीसगढ़ के सारे केबिनेट के मंत्री चिंता कर रही है। कर्ज माफ से हमारे किसान मजबूत हुए हैं, आज खाद और बीज के बारे में ये केन्द्र में क्यों नहीं कहते, क्यों हमारे छत्तीसगढ़ के साथ भेदभाव हो रहा है? क्यों सप्लाई कम हो रहा है ? हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी कई बार चिट्ठी लिख चुके हैं लेकिन खाद की पूर्ति नहीं हो पा रही है । यदि आपको किसानों की चिंता है, यदि आपने 15 सालों तक छत्तीसगढ़ में राज किया है, यदि आप किसानों का दर्द समझना चाहते हैं तो दिल्ली में बैठे किसान कितने महीनों से वहां पर हड़ताल कर रहे हैं, उनकी आवाज को कोई सुनने वाला नहीं है, छत्तीसगढ़ में बीज की कमी इनके सामने आयी तो इनको चिंता हो गई । मैं बताना चाहता हूं कि इन्होंने कहा था कि हम किसानों का एक-एक दाना धान खरीदेंगे । किसानों का दर्द आपको समझना चाहिए, आपको 15 सालों बाद समझ में आ रहा है । हम लोगों ने 15 सालों तक किसानों के लिये आवाज उठायी ।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय कृषि मंत्री जी, स्थगन खाद, धान और बीज की कमी पर है । आप ठीक से सही कागज को देखकर बोलिए न ।

श्री संतराम नेताम :- मैं किसानों के बारे में ही बोल रहा हूं ।

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- श्री संतराम जी दर्द से ज्यादा पीड़ित हैं इसलिए कह रहे हैं ।

सभापति महोदय :- श्री संतराम जी, आप अपनी बात कहिए ।

श्री संतराम नेताम :- माननीय सभापति महोदय, किसानों को आर्थिक रूप से ज्यादा मजबूत कौन बनाता है ? मैं किसानों की बात कर रहा हूं, खाद और बीज की बात कर रहा हूं ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

कृषि मंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- अजय भैया, बहुत सामान्य सी बात आदरणीय संतराम जी कह रहे हैं । आप सभी को बहुत चिंता है । आप सब लोग दिल्ली में अब राष्ट्रीय स्तर के पदाधिकारी भी बैठे हैं तो एक चिट्ठी लिखने में डर क्यों लगता है ? प्रधानमंत्री जी से मांगने में डर क्यों लगता है ? छत्तीसगढ़ के किसानों के हित की एक भी बात हुई, चाहे चावल की खरीदी की बात, चाहे राजीव किसान न्याय योजना में पैसा देने की बात, चाहे बारदाना सप्लाई की बात, चाहे खाद सप्लाई की बात, आप चिट्ठी क्यों नहीं लिखते ? आपको दिल्ली से इतना डर क्यों है ? वही तो पूछ रहे हैं, अब आप उनको बोल रहे हैं ।

श्री अजय चंद्राकर :- नहीं, वे 15 साल पहले के फसल की बात कर रहे हैं ।

श्री रविन्द्र चौबे :- नहीं, वे उसी को पूछ रहे हैं ।

श्री अजय चंद्राकर :- खेती हर साल होती है । 15 साल पहले भी खेती हुई थी।

श्री शिवरतन शर्मा :- दिल्ली में चिट्ठी लिखने का डर नहीं है, डर इस बात का रहता है कि किसानों के नाम पर जो आयेगा वह डकारा कहां जायेगा ?

श्री रविन्द्र चौबे :- मैं वह भी बता देता हूं । वर्ष 2017-18 में आखिरी धान की खरीदी आपने की थी, केवल 52 लाख मीट्रिक टन और उत्पादन पिछले साल 92 लाख मीट्रिक टन और 1 करोड़ से ज्यादा ।

श्री शिवरतन शर्मा :- अब तो आप वर्ष 2017-18 को भूल जाओ । आप वर्ष 2018-19, 2020-21, 2021-22 को याद करो । सड़ा कितना वह भी आप बता दीजिए ।

श्री सौरभ सिंह :- उत्पादन आपने कर दिया, कितना धान सड़ा वह भी आप बता दीजिए ।

श्री रविन्द्र चौबे :- वह भी बता देंगे लेकिन छत्तीसगढ़ में किसानों का उत्पादन बढ़ा, आप खरीदी भी नहीं कर पा रहे थे ।

श्री अजय चंद्राकर :- आपके समर्थन में सिर्फ बोतल है बाकी सब गायब है ।

श्री नारायण चंदेल :- चौबे जी, वह सड़ा नहीं, वह सड़ाया गया ।

श्री शिवरतन शर्मा :- बोतल के साथ पानी भी है ।

सभापति महोदय :- श्री संतराम जी आप बोलिए ।

श्री संतराम नेताम :- माननीय सभापति महोदय, मैं माननीय अजय चंद्राकर जी को बताना चाहता हूं कि किसानों का जो कर्जा माफ हुआ क्या उसका किसानों से संबंध नहीं है ? क्या खाद और बीज से ही ताल्लुक है ?

वाणिज्यिक कर मंत्री (श्री कवासी लखमा) :- माननीय सभापति महोदय, पेपर में बड़ा-बड़ा दिया था कि जिस दिन किसानों का कर्जा माफ होगा तो मैं इस्तीफा दे दूंगा तो ये कब इस्तीफा देंगे ? अगले समय वर्ष 2023 में जनता आपसे इस्तीफा मांगेगी ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री संतराम नेताम :- माननीय सभापति महोदय, अभी हमारे माननीय बृजमोहन अग्रवाल जी गौधन न्याय योजना और गौठान के बारे में बोल रहे थे । वहां हमारी महिला स्वसहायता समूह के लोग, हमारे बस्तर के लोग आज गोबर बीनकर, गोबर बेचकर 2 रूपये से 3 लाख रूपये कमा रहे हैं, आज उसका खाद बन रहा है । आज वहां की महिलाओं को रोजगार मिल रहा है, वहां के लोगों को आर्थिक रूप से मजबूत होने का काम हो रहा है तो इसके लिये विरोध हो रहा है । यदि इसमें भी यह कहा जाये कि इसका किसानों से ताल्लुक नहीं है, चूंकि यह भी एक खाद है । जैसा कि उन्होंने कहा कि 10 रूपए में इसकी बिक्री हो रही है । माननीय सभापति महोदय, रासायनिक खाद की बजाय जो जैविक खाद होता है उसमें खेती बर्बाद नहीं होती है, उससे खेती भी बचता है और उत्पादन भी ज्यादा होता है और कहीं न कहीं हमको स्वादिष्ट भोजन मिलता है । राजीव गांधी न्याय योजना का विरोध कर रहे हैं ।

श्री शिवरतन शर्मा :- हम कहां विरोध कर रहे हैं भैया ?

श्री संतराम नेताम :- आपने क्यों चिट्ठी नहीं लिखी ? हमारी सरकार ने, हमारे माननीय भूपेश बघेल जी ने 2500 रूपये देने के लिये कहा था, आपने चावल नहीं लेने की बात कही । हमारी सरकार ने किसानों को आर्थिक रूप से मदद करने के लिए और उनके द्वारा वादा किया गया था, उसके लिए हमने 2500 रूपये 4 किश्तों में दिये हैं।

समय :
4.00 बजे

सभापति जी, हमारे माननीय भूपेश बघेल जी किसानों के प्रति चिंता करते हैं। चूंकि वे किसान घर के लड़के हैं। किसान का बेटा है, खेती-किसानी करना जानते हैं, उन्हें किसानों का दर्द मालूम है। इसीलिए सबसे पहले सरकार बनने के बाद उन्होंने किसानों को मजबूत करने के लिए सोचकर किसानों का कर्जा माफ किया। आज पूरे देश में कोई भी राज्य में हम तो उड़ीसा से बिलांग करते हैं, हमारा बॉर्डर पड़ता है, वहां के लोग कहते हैं कि सबसे ज्यादा अगर कोई धान की कीमत देने वाली सरकार है तो वह छत्तीसगढ़ की सरकार है। यह जो खाद एवं बीज से संबंधित स्थगन लाया गया है, इसका मतलब है और हम इनकी चिंता समझ रहे हैं कि आप उन्हें आर्थिक रूप से मजबूत करना चाहते हैं। 15 सालों से जब हमारे किसानों को तकलीफ थी, तब आप कहां थे? 15 साल से हमारे किसान आर्थिक रूप से परेशान हो गये थे, तब आप कहां थे? आज आपको चिंता हुई। इसीलिए हमारे प्रदेश की जनता ने आपको 15 सीटों में सीमित कर दिया है। आज हम दिल्ली की बात करते हैं तो आपको तकलीफ होती है। दिल्ली में बैठे किसान लोग भी कहीं न कहीं वही आवाज के लिए गये हैं। और आज जब हम यहां की बात करते हैं तो आपको तकलीफ होती है। आज 15 साल से तकलीफ होने की बात हमारे अग्रवाल जी ने कही। 15 साल में हमें तकलीफ हो रही है। हम किसानों के लिए लड़ाई लड़ रहे हैं तो आप उतने दिन तक कहां थे? आपके समय में खाद-बीज जब बहुत देर से जाती थी, किसानों का जब फसल बर्बाद हो जाता था, तब



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

आप खाद भेजते थे। आज आप उनकी चिंता कर रहे हैं। महंगाई को भी आप इससे नहीं जोड़ रहे हैं। हमारे मंत्री जी कवासी लखमा जी ने कहा कि महंगाई इतनी बढ़ गयी है। यह भी किसानों से रिलेटेड है। दाल की कीमत जो 200 रूपये पार हो गया। महंगाई के संबंध में हम इन्हीं के बैनर पोस्टर शहर में देखा करते थे, बहुत हो गया महंगाई की मार, अब की बार मोदी सरकार।

श्री रामकुमार यादव (चन्द्रपुर) :- सभापति महोदय जी, चन्द्राकर जी हो ओ समय महंगाई के विरोध में बहुत आंदोलन करे हे।

सभापति महोदय :- 1 मिनट आप बैठ जाइए। आप बोलिए।

श्री संतराम नेताम :- आज उसके सामने फोटो क्यों नही खिंचाते? शहरों में बड़े-बड़े पोस्टर और बैनर लगे थे, उसमें लिखा रहता था कि बहुत हो गया महंगाई की मार, अब आयेगी मोदी की सरकार। वर्ष 2014 में देख लीजिए। हम बताना चाहेंगे। ये भी वहीं से रिलेटेड है। हमारे 80 प्रतिशत लोग किसान हैं। आज आप देख लीजिए। वर्ष 2014 में जिस चावल की कीमत 24 रूपये थी, आज वह 36 रूपये हो गयी है। गेहूं की कीमत 23 रूपये थी, आज 26 रूपये हो गयी है। आज हमारे आटे की कीमत 25 रूपये से बढ़कर सीधे 30 रूपये हो गयी। चने की कीमत 41 थी, वह 76 हो गई। यह वर्ष 2014 की रिपोर्ट मैं बता रहा हूं। सभापति महोदय, यह भी किसानों को पीछे ढकेलने का काम किया जा रहा है। पेट्रोल और डीजल की कीमत से पूरे देश के किसान पीड़ित हैं। आज किसान ट्रेक्टर चलाता है। डीजल डलवाता है। आज पंप चलाता है और डीजल डलवाता है। आप आप केवल खाद और बीज की चिंता कर रहे हैं। आज आप महंगाई की चिंता नहीं कर रहे हैं। आज पूरे देश में हाहाकार मचा हुआ है। गरीबों को लूटा जा रहा है। किसान मारा जा रहा है। किसान बर्बाद हो रहा है। क्यों आप ऊपर में बैठी सरकार से महंगाई कम करने की बात नहीं करते? क्यों डीजल और पेट्रोल की कीमत में इतनी वृद्धि हो रही है? आप उस पर कंट्रोल के लिए चिट्ठी नहीं लिखते? आप क्यों अपनी सरकार से बात नहीं करते? कहीं न कहीं अगर कोई मारा जा रहा है तो केवल और केवल हमारा किसान मारा जा रहा है। हमारे प्रदेश में जो किसान मेहनत करते हैं, वे मारे जा रहे हैं। आपने खाद की सप्लाई के लिए क्यों नहीं कहा? केन्द्र में आपकी सरकार है। सभापति महोदय, आखिर छत्तीसगढ़ में इतना भेदभाव क्यों हो रहा है? इस प्रकार महंगाई की मार आज हम सबको लेकर डूब रही है।

श्री शिवरतन शर्मा :- संतराम जी, पिछले कार्यकाल में जो आपका भाषण होता था, वह मौलिक होता था। अगर आप ज्यादा लिखा हुआ पढ़ेंगे न तो स्वयं की पहचान समाप्त हो जायेगी।

श्री संतराम नेताम :- मैं कहां लिखा हुआ हूं। थोड़ा बहुत ही पढ़ रहा हूं।

श्री शिवरतन शर्मा :- वहां से जो मिला है, उसे पढ़ रहे हो। तो स्वयं की पहचान समाप्त हो जायेगी।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री केशव प्रसाद चन्द्रा (जैजेपुर) :- पिछले साल फ्री हैंड थे, इस बार तो जो लिखा हुआ पढ़ेंगे तभी उनको मौका मिलेगा। पिछले साल फ्री हैंड थे कि कुछ भी बोलो भाई।

सभापति महोदय :- संतराम जी, जल्दी समाप्त करें।

श्री संतराम नेताम :- सभापति महोदय, हमारी सरकार जो है..।

श्री कवासी लखमा :- पहले एक एकड़ में एक हजार का डीजल लगता था और अब रेट बढ़ने से एक एकड़ में दो हजार का डीजल लग रहा है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- अरे, नीट कौन पियेगा ।

श्री कवासी लखमा :- पूरे देश की जनता जान रही है ।

सभापति महोदय :- संतराम जी आप थोड़ा जल्दी समाप्त करेंगे ।

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- लोगों की शिकायत है कि आपने भी अपने सामान का रेट बढ़ा दिया है ।

श्री सौरभ सिंह :- सभापति महोदय, बढ़ ही बढ़ रहा है ।

सभापति महोदय :- किसानों की चर्चा में दूसरी चर्चा कहां से प्रारंभ हो गई ।

श्री संतराम नेताम :- सभापति महोदय, आज हमारे जैविक खाद का विरोध हो रहा है । अधिक दर पर बेचने की बात हो रही है । सभापति जी, एक दिन ऐसा भी आएगा जब हमारे पूरे प्रदेश के किसान इसी गोबर से बने हुए खाद का उपयोग सबसे ज्यादा करेंगे । यहां बैठे हमारे सदस्य भी प्राय: सभी किसान हैं, गोबर का जैविक खाद हमारी ज़मीन के लिए उपयोगी होगा । आज जब हम गोठान में जाते हैं तो समूह में काम करने वाले लोग बताते हैं कि हमें इससे रोजगार भी मिल रहा है । किसानों की चिंता करना चाहिए । आपने 15 सालों तक किसानों की चिंता नहीं की, आपने 15 सालों तक किसानों को लूटने का काम किया, प्रदेश को लूटने का काम किया ।

सभापति महोदय :- संतराम जी, जल्दी समाप्त करेंगे ।

श्री संतराम नेताम :- सभापति जी, हमारे मुख्यमंत्री जी ने प्रदेश में एक स्लोगन चलाया है - छत्तीसगढ़ के चार चिन्हारी, नरवा, गरवा, घुरवा, बारी । चन्द्राकर साहब, इसका अर्थ आपको अभी समझ नहीं आएगा । आपको बाद में आएगा कि यह नरवा क्या होता है ? इन लोगों ने खाद और बीज आपूर्ति की बात कही है, हमारी सरकार ने उसको संज्ञान में लिया और कार्रवाई की । लेकिन आप केन्द्र सरकार से हमारी मांग को पूरा क्यों नहीं करवा रहे हैं । हमारी सरकार किसानों की चिंता कर रही है । सभापति महोदय, नरवा का मतलब होता है बरसात के पानी को रोकना, छोटे-छोटे नदी नालों को रोकना । निश्चित तौर पर अभी हमारे बड़े-राजपुर ब्लॉक में हमारे एक किसान ने मुख्यमंत्री जी को बताया कि इसको रोकने से हमारा जल स्तर बढ़ा है । हमने वहां बोर खनन किया तो वह सक्सेसफुल रहा । इसका फायदा है । जब पानी रूकेगा, सिंचाई का साधन बढ़ेगा तब लोग नरवा का अर्थ समझेंगे । किसानों की

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

आमदनी बढ़ेगी, हमारा किसान मजबूत होगा । हमारी भी चिंता है कि किसान मजबूत हो, हम सबकी चिंता है कि किसान कैसे मजबूत हो? उस विषय में हमको कैसे काम करना है, हमारी सरकार इस बात का ध्यान रख रही है । निश्चित तौर पर हमारे प्रदेश के किसानों को खाद मिलना चाहिए, हम उसका विरोध नहीं करते हैं लेकिन 15 सालों तक इन लोगों ने किसानों की चिंता नहीं की । अभी अग्रवाल जी बोल रहे थे कि बीज समय पर जाता था, खाद समय पर जाता था। पहली बार 2018 से किसानों को बीज समय पर मिल रहा है । इसके पहले समय पर नहीं मिलता था । मैं चाहता हूं कि किसानों के लिए खाद और बीज समय पर जाना चाहिए । आपने मुझे बोलने का मौका दिया उसके लिए धन्यवाद् ।

सभापति महोदय :- श्री अजय चन्द्राकर ।

श्री कवासी लखमा :- थोड़ा ठीक-ठाक बोलना और जो आपके इस्तीफे वाली बात अखबार में आई थी, उस पर भी बोलना । डीजल का रेट बढ़ा है उस पर भी बोलना, केन्द्र सरकार सुनती नहीं है, दिल्ली में लोग हड़ताल कर रहे हैं उसको भी नहीं सुन रही है ।

श्री बृहस्पत सिंह :- चन्द्राकर साहब, जो बोलेंगे सच बोलेंगे और सच के सिवाय कुछ नहीं बोलेंगे ।

श्री अजय चन्द्राकर :- अरे, आप खड़े हो गए, आपका स्वागत है । आप भावी मंत्री हैं । आपने अच्छा तरीका निकाला है मंत्री बनने का ।

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- आप जैसी हिम्मत इनमें नहीं है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- देखना आप, सभी विधायक उस तरीके को अपनाएंगे।

श्री नारायण चंदेल :- दादी, एक तो चंद्रा जी बता रहे थे कि कीमत बढ़ गई है और दूसरा कि मदिरा प्रेमी शिकायत कर रहे हैं कि कीमत बढ़ने के बाद भी पिक-अप नहीं ले रहा है (हंसी) ।

श्री अजय चन्द्राकर (कुरूद) :- माननीय सभापति महोदय, आप स्थगन प्रस्ताव का उत्तर देखेंगे तो ऐसी कोई बात नहीं है, जिसको रविन्द्र चौबे जी ने, माननीय मंत्री जी ने, आदरणीय भाई साहब ने अस्वीकार किया हो । मैंने एक बार लिखा था कि मैं आपको सी.एम. मटेरियल मानता हूं । बाजू वाले के ऊपर यदि आरोप क्या है, सत्य है, इन्होंने आरोप लगाया है, वह गलत है, यह मैं नहीं जानता, पर इस उत्तर के बाद मैं समझ गया हूं कि वे अवसादग्रस्त हो गए हैं । इसलिए अवसादग्रस्त हो गए हैं, यह मानता हूं कि वास्तव में वे भूमिपुत्र हैं । उन्होंने कहा कि अभी खरीफ फसलों की बोआई का समय है, अभी बोआई चल रही है । आप भी सोयाबीन के ईलाके आते हैं। मैं अपने खेत में दिखा सकता हूं कि तिल, राहर की बुआई हो चुकी है । इतना बड़ा-बड़ा पौधा दिख जायेगा । अगस्त में कोई तिल, राहर या सोयाबीन बोता है, मैंने तो नहीं सुना है कि आपके उत्तर में क्या लिखा है और बीज आ जाएगा तो किसको दोगे, मुझे यह समझ में नहीं आता ? कृपा करके आप पहले डिप्रेशन से निकलिए और जिन कामों के लिए आप जाने जाते थे, जिन व्यवस्थाओं के लिए आप जाने जाते थे, किसानों के लिए जो

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

पीड़ा आपके मन में थी, उसके लिए आप लड़ते दिखते थे, वह दौर आना चाहिए और वह दौर कैसे गया । आप 25 सौ, 25सौ बोलते हैं, आपने अच्छा किया, हमने मान लिया न । लेकिन 25 सौ के नेपथ्य में किसानों के साथ क्या घट रहा है ? आप किसमें बहस करेंगे । मैं एक छोटा सा उदाहरण आपको बता देता हूं, फिर विषय में आऊंगा । मैं इधर-उधर नहीं बोलूंगा । बिजली कनेक्शन के लिए 35 हजार फार्म मेच्योर है । ढाई साल में पहली बार 1 लाख अस्थायी कनेक्शन है । अस्थायी कनेक्शन पैसा देने से मिलता है, यह मेरा आरोप है । आरोप नहीं मानेंगे तो मैं अपनी बात वापस ले लूंगा । उसको न फ्लेट रेट की सुविधा मिलती, न तो यूनिट वाली सुविधा मिलती । माननीय मुख्यमंत्री जी ने पिछले सत्र में घोषणा की थी कि 35 हजार कनेक्शन मेच्योर है, उसको हम कनेक्शन देंगे । आप कैसे कनेक्शन देंगे ? इसके लिए दो साल में बजट में 200 करोड़ रूपए है, प्रति वर्ष 100-100 करोड़ रूपए हैं । 35 हजार कनेक्शन को आप कितने दिनों में देंगे, 1 लाख कनेक्शन देंगे तो आपको कितने साल लगेंगे, आप यह मुझे बताईए । आपकी पीड़ा कहां गई? आप कौन से तथ्य में बात कह रहे हैं ।

माननीय सभापति महोदय, नरवा, गरूवा, घुरूवा, बारी चलो, मैं इन्हीं की बात कर देता हूं । नरवा, गरूवा, घुरूवा, बारी का बजट कितना है, यह बता दो, मैं चुपचाप बैठ जाता हूं । समग्र रूप से यदि कांग्रेस का या सरकार का, कांग्रेस शब्द हटा दो तो मुख्यमंत्री जी का फ्लैगशिप प्रोग्राम है तो इस विधान सभा में कोई दृष्टिकोण, दस्तावेज बता दो, मैं भी बोल सकूं कि मेरे प्रदेश में घुरूवा यह होता है, गरूवा यह होता है, बारी यह होती है । यह मैं भी तो जानूं, नरवा, गरूवा, घुरूवा, बारी के बारे में कोई दस्तावेज मुझे बहस के लिए मिले ।

माननीय सभापति महोदय, एक व्यवस्था का प्रश्न उठा था । मैं आज नहीं उठाऊंगा, मैं किसी दिन अपनी बात उठाऊंगा कि मैं छत्तीसगढ़ी में बोलूंगा तो मेरे शब्द डिलीट मत हों । क्योंकि छत्तीसगढ़ में बोलने में यदि मैं पूरी बात छत्तीसगढ़ी में बोलूंगा तो फिर इनके लिए जो शब्द उपयोग करूंगा तो बहुत सारे शब्द डिलीट होंगे तो छत्तीसगढ़ में क्या संसदीय है, क्या असंसदीय है, अगली बार आप मुझे बता दीजिएगा । क्योंकि उसके लिए हाना है कि एक आदमी बोलता है तो सब बोलते हैं कि कनवा पादै, भैरा जोहारौ कथे न । अब यह असंसदीय है या संसदीय है, आप जानो । एक झन बोलिए त सब झन वाह, वाह, वाह, वाह, नरवा, गरूवा, घुरूवा, बारी, नरवा, गरूवा, घुरूवा, बारी शुरू कर देते हैं । मोहन मरकाम जी, हम उसको स्वीकार करने के लिए तैयार हैं, वह है क्या, यह तो बता दो, बजट क्या है, यह तो बता दो और नहीं तो मैं आपको बता दूंगा कि कहां से बजट है, कितना बजट है, क्या बजट है या आप विधान सभा के प्रश्नों के उत्तर को ठीक से पढ़ लीजिए, आपको पता चल जाएगा कि कहां से नरवा, गरूवा, घुरूवा, बारी बन रहा है । माननीय कृषि मंत्री जी, मैंने आपकी प्रशंसा की, मैंने कहा कि मैं नेपथ्य की बात बता देता हूं । आप बहुत शांति से बोल रहे थे कि इस साल एक लाख मेट्रिक टन से ऊपर खरीदेंगे, अधिकतम 92 लाख टन मेट्रिक टन खरीदा । आप 25 सौ का धान 14 सौ रूपये में बेच रहे हैं,

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

उसमें स्थगन है । विषय आएगा, लेकिन 2019-20 का धान कितना सड़ा, कितना अमानक हो गया । आपने नान का कोटा बढ़ाया, आप धान को केबिनेट में उपसमिति बनाकर बेचते हैं और चांवल को चुपचाप बेचते हैं । आपने चांवल बिल्कुल बेचा है । आपने 50 हजार टन चांवल बेचा है और आपको जरूरत नहीं है तो आप अमानक चांवल क्यों खरीद रहे हैं ?

श्री रविन्द्र चौबे :- सभापति जी, जब भी धान और चांवल की बहस हुई है तो आपको भी मालूम है कि केन्द्र सरकार ने 60 लाख मेट्रिक टन चांवल की सहमति दी थी । हम लोग दिल्ली की बैठक में गए थे । माननीय मंत्री जी ने कहा कि अगर राजीव किसान न्याय योजना देंगे तो आपका एक दाना चावल नहीं खरीदा जायेगा। उन्होंने यह भी कहा कि किसानों को 1868 रूपया सपोर्ट प्राइज से एक रूपया ज्यादा नहीं देना चाहिए, क्या आप उससे सहमत हैं ?

श्री कवासी लखमा :- सहमत हैं, बताओ ?

श्री अजय चन्द्राकर :- मैं इनसे सहमत हूं या असहमत हूं, यह खुद तय करेंगे। मैंने बोला न कि रविन्द्र चौबे जी सबसे विद्वान है, सबसे ज्यादा डिप्रेसन में हैं। वर्ष 2019-20 में 26 लाख टन चावल देने का आदेश हुआ था, तो 24 लाख टन क्यों बंटा ? धान क्यों सड़े और अभी तक क्यों सड़ रहे हैं ? किसकी जवाबदेही तय हुई, किसके ऊपर कार्रवाई हुई ? यह सरकार उसमें कार्रवाई नहीं कर सकती है। कौन है ? किन कारणों से ? जब डॉ. रमन सिंह का 15 साल गिनते हैं तो उनके कार्यकाल में मार्च तक कस्टम मिलिंग समाप्त हो जाती थी। अभी वर्ष 2020-21 और 2021-22 के धान का उठाव नहीं हुआ है। आप नेपथ्य में जाईयेगा।

श्री कवासी लखमा :- मैं आपका शुभचिंतक हूं। लेकिन जो धान सड़ रहा है, वह मोदी जी के कारण, दिल्ली के कारण सड़ रहा है। केन्द्र ने 60 लाख टन चावल क्यों नहीं लिया ? आप चिट्ठी क्यों नहीं लिखे ? आपको फोन तो करना था। जाकर मिल तो लेना था।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय, आप बार-बार 60 लाख मीट्रिक टन का उदाहरण दे रहे हैं। अजय चन्द्राकर जी ने पिछले साल का आंकड़े तो बता दिए। आपको इस साल जो टारगेट मिला है, उतना चावल जमा कर चुके हैं क्या ? आप वह भी नहीं कर पाये।

श्री अजय चन्द्राकर :- इस साल 26 लाख टन चावल, आज जब मैं बोल रहा हूं, तब तक 24 लाख टन चावल जमा नहीं हुआ है। यह आपका कौन सा परफार्मेंस है ? क्या आप धान सड़ाने के लिए खरीद रहे हैं कि जब एथेनॉल बनेगा तो सड़ा हुआ धान काम देगा, इसलिए खरीद रहे हैं। आप लोक धन की बर्बादी कर रहे हैं। उसके लिए एक भी जिम्मेदार आदमी नहीं है, जो मार्च तक वह हो जाये। अब नेपथ्य में जाईये, फिर मैं इसमें दो मिनट बात करूंगा। आपने 2 हजार सोसायटी बना दी, वाह-वाही लूट ली। आपको सोसायटी 72 घंटे में धान लिफ्ट करना है, नियम में है। आप 72 घंटे में लिफ्ट नहीं किए। पूरा सूखद का घाटा, इधर सड़ने के लिए सोसायटी के ऊपर कर रहे हैं। 7-8 सौ सोसायटी डिफंट,



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

सहकारिता आंदोलन समाप्त। एक 25 सौ रूपये का दर्पण दिखाकर पूरी हर तरह की व्यवस्था को नष्ट कर रहे हो, कोई आदमी नहीं बोलता। आप लोग किसान-किसान बोलते हैं, मैं बोल रहा हूं चलिये साहब, मैं जिम्मेदार मानता हूं कि हमने दो साल का बोनस नहीं दिया। आप बहुत किसान हितैषी हो, बहुत चीख-चीखकर बोलते हो, मोहन मरकाम जी दिल्ली की बात करने के लिए पाईंट आफ आर्डर ले रहे थे। पाईंट आफ आर्डर किसमें होता है, यह मैं नहीं बोलता, लेकिन दिल्ली में बात करने के लिए के.टी.एस. तुलसी साहब हैं, वे भी कैसे हैं ? उनका पहला ग्रंथ छपा तो उन्होंने पहली प्रति प्रधानमंत्री जी को दी, सोनिया गांधी जी को नहीं दी। के.टी.एस. तुलसी, वह सेटिंग वाला है, यह मैं बता देता हूं। अब सारा सहकारिता आंदोलन समाप्त, आप मानिये। हम 2 साल का बोनस देंगे, आप भाषण में क्यों नहीं बोलते ? आप बोलते हैं कि 15 साल में ये हुआ, वो हुआ, 15 साल में वह धन इधर आ गये, हम रमन सिंह जी के सामने बोल देते हैं कि चलिये, यह सब गलत हुआ।

श्री शिवरतन शर्मा :- सत्तू भैय्या, बैठकर सुन लो।

श्री अजय चन्द्राकर :- लेकिन सब गलती, किसी भी दिन नरवा, गरूवा, घुरवा, बाड़ी, ट्रिपल आई.टी., आई.आई.टी. आई.आई.एम.= ऐसा कर लेना, सेन्ट्रल यूनिवर्सिटी ऐसा कर लेना। पहले छत्तीसगढ़ का अनुमान क्या था, और अब क्या है ? तो आप नेपथ्य में जाईये, आपसे अपेक्षाएं हैं, 2500 रूपये का दर्पण दिखाकर बाकी खोखला मत कीजिये।

श्री संतराम नेताम :- अभी तो ढाई साल ही हुआ है, अभी साढ़े बारह साल और चिल्लाना पड़ेगा। मैंने तो बोला कि हमारे एरिया में खाद, बीज है।

श्री अजय चन्द्राकर :- अभी तो आप नरवा दिखाने वाले थे न ? मैं आपके विधानसभा क्षेत्र चलता हूं, वहां मुझे प्रधानमंत्री आवास दिखाना। मैं चलता हूं, आप प्रधानमंत्री आवास दिखाना। वे तो कांग्रेस के विधायक हैं, जो मुझे प्रधानमंत्री आवास दिखाने ले जायेगा। कौन कांग्रेस विधायक जो मुझको प्रधानमंत्री आवास दिखाने ले जायेगा?

श्री संतराम नेताम :- अभी तो ढाई साल हुआ है, आप साढ़े बारह साल और चिल्लाईये। नरवा, गरूवा, घुरवा, बाड़ी बहुत अच्छी योजना है। आप उसका अर्थ समझ रहे हैं, लेकिन आप उसका मजाक उड़ा रहे हैं। नरवा, गरूवा, घुरवा, बाड़ी को जानते हैं, लेकिन आप मजाक उड़ा रहे हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप मुझे बजट बता दो, उसका दृष्टिकोण बता दो ताकि मैं भी उसके पक्ष में बात कर सकूं, मुझे दस्तावेज दे दो, लेकिन आप देते नहीं हो।

श्री संतराम नेताम :- अगर वहां महिलाएं आर्थिक रूप से सक्षम हो रही हैं, तो उसमें क्या बुरा है ?

श्री अजय चन्द्राकर :- धान की मांग हुई 8 लाख 57 हजार, मैं सबका अलग-अलग नहीं पढ़ता। चाहे तो मैं यह कागज दे दूंगा। 27 प्रतिशत आज की कमी है, बोता समाप्त हो गया, लाईचोबी हो गयी,



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

थरहा लग रहा है, कहीं सूखा है तो कहीं थरहा लग रहा है, कहीं नहीं लग रहा है । लेकिन बोनी-वोनी का काम समाप्त हो चुका है । किसानों को बाहर से बीज खरीदना पड़ा । कोदो एवं रागी की कमी 65 प्रतिशत रही । आंकड़े हो सकता है कि इन चार दिनों में 61 में आ जाये, 60 में आ जाये । आंकड़े का मतलब नहीं है । लेकिन उसके बाद दलहन 33 प्रतिशत की कमी रही, 12500 क्विंटल की जगह में 3350 क्विंटल उपलब्ध करा पाई। दलहन में भी वही हालत है । तिलहन, दलहन हो गया, हम आ जाते हैं, एक छोटा सा उदाहरण आपको बता देता हूँ, माननीय अवसादग्रस्त कृषि मंत्री मेरे कथन में सी.एम.मटेरियल माननीय रविन्द्र चौबे जी, इस बात के लिए जरूर नियम बनायेंगे, जैसे यूरिया, 3,04,943 टन मानलो मिला, 16,675 उन्होंने सोसायटी को दी, 13,088 और 13,068 इतना प्रायवेट सेक्टर को दिया । आप प्रायवेट सेक्टर को कमी है तो क्यों प्रमोट कर रहे हो ? आपके ऊपर आरोप नहीं लगा सकता था । लेकिन प्रायवेट सेक्टर को सोसायटी के मुकाबले जब कमी है तो उसको खाददेने का मतलब क्या है ?

कृषि मंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- मुझे पढ़ना नहीं चाहिये । लेकिन 13 से लेकर 17 तक हर साल का आपको पढ़कर सुना देता हूँ ।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप उत्तर देंगे ना ।

श्री रविन्द्र चौबे :- दूंगा ना । ये प्रतिशत आप कह रहे हैं ना । मैं 13 का ही बता देता हूँ ।

श्री अजय चन्द्राकर :- 13-14-15 का ।

श्री रविन्द्र चौबे :- तीनों साल में ।

श्री अजय चन्द्राकर :- स्थगन तो इस साल का है ना ? आप आरोप लगा दीजिए ना ।

श्री रविन्द्र चौबे :- तब आपको यह चिन्ता नहीं थी । बस वही बात ।

श्री अजय चन्द्राकर :- क्या बोलने जा रहा हूँ, उसको आप सुनिये ना । मैंने गलती की ।

श्री रविन्द्र चौबे :- मैं गलती नहीं कह रहा हूँ । लेकिन आप प्रतिशत पर जा रहे हैं, अभी निजी और ट्रेडर्स को, प्रायमरी सोसायटी को जो खाद का वितरण किया, वह प्रतिशत आप बताने जा रहे थे । 13 से लेकर 17 तक । हर साल आप ट्रेडर्स को ज्यादा दिये, यह कह रहा हूँ ।

श्री मोहन मरकाम :- वही गलती की, इसीलिए यह स्थिति निर्मित हुई । 14 में सिमट गये ।

श्री अजय चन्द्राकर :- आज आपकी क्षमता देख ली । आपमें और वृहस्पति सिंह में । आप बोलिये मत, यहीं बैठिये ।

सभापति महोदय :- अजय जी, आप और कितना समय लेंगे ?

श्री अजय चन्द्राकर :- समझ रहा हूँ ना । मैं आपको यह सुझाव देना चाह रहा हूँ । मांग दिसम्बर तक आ जाती है, मांग कितनी है, आप मांग के हिसाब से, उसमें भी आप चालाकी कर देते हैं



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

ना, धान इतने लोग खरीदें, आप इधर बैठते थे तो 37 लाख किसान थे, उधर बैठे तो 19 लाख किसान हो गये ।

सभापति महोदय :- कृपया समाप्त करेंगे ।

श्री अजय चन्द्राकर :- कितनी डिमांड हुई, सोसायटी को कितना देना है, कब देना है, प्रायवेट सेक्टर को कितना कब देना है, क्योंकि आप जानते हैं कि धान में रोपाही में हम पहले डीएपी डालेंगे, 10 दिन बात यूरिया डालेंगे, एक महीने बाद फिर यूरिया डालेंगे, कोटराही के समय पोटाश डालबो, अमोनियम सल्फेट डालबो, वोह पूछत रहिसे कैसे खेती किसानी होथे कहिके, इस सिक्वेंश में आप प्रायवेट सेक्टर को दीजिए ना, प्लॉन बनाईये । अब बीज, बीज में आपके पास धान में लगभग आज की तारीख तक या दो दिन पहले तक जब मैं कागज बना रहा था, पिछले साल के मुकाबले, पांच लाख एकड़ में बुआई कम हुई, कारण सिर्फ बीज की कमी । कोदो की, रागी की, दलहन, तिलहन, हरी खाद, सारी चीज, 5,07,832 लगभग सभी प्रकार के बीजों की कमी और वितरण पिछले साल के मुकाबले 21प्रतिशत कम है । मैं आंकड़ों में ज्यादा भरोसा नहीं करता । आपकी एक बात की प्रशंसा कर देता हूँ कि आपने दोनों कमी स्वीकार की । जब आप किसानों की समग्र बात करते हैं, तो यह सिस्टम रमन सिंह जी के 13 को गिनने की जरूरत नहीं है, वर्ष 2003 को गिनने की जरूरत नहीं है, मैंडेट आपको तीन चौथाई मिला है । हंसी मजाक करने के लिए नहीं मिला है । उस मैंडेट में यह भी है कि आपने नया क्या किया, नई क्या चीज हुई, ऊपर से नीचे तक गिने, और उदाहरण दे देता, विषय से बाहर होता, समय की भी मर्यादा है, 2500 के दर्पण के अतिरिक्त किसानों की पूरी स्थिति खाद में, बीज में, आप देखिये । वर्मी कम्पोस्ड, मैं सोसायटी का नाम बता देता हूँ, कागज में आंकड़े भर लिखकर रखा हूँ। वर्मी कम्पोस्ड आपने जबरदस्ती थमा दी । लेना पड़ेगा, इसमें मैं सोसायटी का नाम पढ़ देता हूँ । राजनांदगांव जिले के डोगरगढ़ ब्लाक के पनियाजेब सोसायटी केन्द्र में खरीदी का है। इन सोसायटी में डी.ए.पी. के डिफरेन्स का जो रेट है, वह अभी तक वापिस नहीं हुआ है। इसके अतिरिक्त कांकेर, दुर्ग,रायपुर प्रति एकड़ 2 बोरी वर्मी खाद लेने के लिए बाध्य किया जा रहा है। मैंने जिले का नाम पढ़ दिया।

श्री दलेश्वर साहू :- चन्द्राकर जी, एक मिनट मेरी भी सुन लीजिए। जो लादेन करते थे, उसको किसने परिभाषा दिया?

श्री अजय चन्द्राकर :- दलेश्वर जी, अभी कोंटा मा निकल के बात करबो न।

सभापति महोदय :- अजय जी, कृपया समाप्त करेंगे।

श्री अजय चन्द्राकर :- मैं खत्म कर रहा हूं।

नगरीय प्रशासन मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- कोंटा वाली राजनीति बंद कर, यहां साफ-साफ बोलै कर।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय रविन्द्र चौबे जी, आप कांग्रेस पक्ष के मंत्रिमंडल में सबसे वरिष्ठतम सदस्य हैं, हो सकता है कि रामपुकार सिंह जी या ये लोग हों। किसानी आपकी रूचि का विषय रहा है। धमतरी, बेमेतरा, कवर्धा तक का बेल्ट छत्तीसगढ़ के सबसे उन्नत कृषि के क्षेत्र में शुमार होता है। मेरे यहां पूरे sure irrigation के इलाके में रोपा लग चुका है। लेकिन आपको हाथ जोड़कर बता रहा हूं, बिजली मंत्री जी नहीं हैं, कृषि पंप कनेक्शन की लाईन में 6 घंटे रोज बिजली कटौती होती है। आप एक पचीस सौ और तेरह, चौदह, बारह, आठ, नौ, यह उदाहरण देने से इस साल की कृषि नहीं सुधरेगी। आप सिस्टम यह बनाईये कि मांग कब क्रियेट होगी। आप बीज में आत्मनिर्भरता की ओर बढ़िये। यदि आप बीज में आत्मनिर्भर नहीं है तो यह हमेशा कमी होगी। क्या हुआ है ? आप तो रिजर्वेशन कर दिये हो। जैसे टीके में रिजर्वेशन किये हैं। बीज का कार्यक्रम मेरे यहां लेने में मेरे यहां का मैनेजर बोलता है कि पिछड़े वर्ग के लोगों का कोटा खत्म हो गया है, अगड़े लोगों का कोटा खत्म हो गया है। एस.सी., एस.टी. का कोटा बाकी है। यह क्या है ? मैं आपको एक उदाहरण बता देता हूं। मैं थोड़े दिन उच्च शिक्षा में था। खैरागढ़ में एक बजाने वाल पोस्ट खाली था, वह रिजर्व पोस्ट खाली था। मैंने अर्जुन सिंह जी से कहा कि इसमें संविधान संशोधन कर दीजिए, तबला बजाना यानी पेटी बजाना तो स्वाभाविक कला होती है। इसमें रिजर्वेशन की क्या जरूरत है ? जहां रिजर्वेशन को मजबूत करना है, जरूर कीजिए, हम उसके पक्ष में हैं। अब आप यह बताईये कि खेती में भी बीज उत्पादन में भी रिजर्वेशन ला दिये। उस वर्ग का किसान नहीं मिलता है तो फिर आप आत्मनिर्भर कैसे बनेंगे ? कुल मिलाकर आप अपनी क्षमता से काम नहीं कर रहे हैं, आप अवसादग्रस्त हैं। आपको जहां बैठना चाहिए, वहां बैठने के लिए नहीं मिल रहा है इसलिए आप काम में ध्यान नहीं दे रहे हैं। 2500 रुपये के दर्पण में आप किसानों को बरबाद कर रहे हैं। मैं यह आपसे अपेक्षा नहीं पालता। मैं चाहता हूं कि अगले साल जब आपसे इस सीज में मुखातिब होंगे तो छत्तीसगढ़ बीज में आत्मनिर्भर होगा। किसानों को सही समय पर खाद मिलेगी। केन्द्र सरकार को जो आपने डिमांड भेजी थी, उसका भी मेरे पास रिकार्ड है कि 90 प्रतिशत खाद सप्लाई हो चुकी है। यह मेरे पास रिकार्ड है। आप डिमांड किस आधार पर, कैसे भेजते हैं, उसको ऊपर से नीचे तक फिर से एक समीक्षा करने की जरूरत है। आपके सदस्य और included you, जो ये नरवा, गुरूवा, घुरूवा, बाड़ी कहते हैं, आप उसका कुछ साहित्य तो दीजिए कि उसमें क्या प्रगति हुई है। नरवा क्या है, हम यह तो जानें कि उसमें कितना, कब और कैसे होगा ? गरूवा कैसे होगा, यह देखें। रोका-छेका अभियान एक ही दिन चला।

श्री रविन्द्र चौबे :- अगर आप नरवा, गुरूवा, घुरूवा, बाड़ी के बारे में नहीं जानते हैं तो आपने स्टेटमेंट कैसे दिया था कि गोबर सड़ रहा है।

श्री अजय चन्द्राकर :- इसकी सबसे बड़ी असफलता है कि प्यारेलाल कंवर जी की बहू का मरना नहीं है, गृहमंत्री का गोबर चोरी होना है।

श्री रविन्द्र चौबे :- यदि गोबर सड़ेगा नहीं तो खाद कैसे बनेगा ?

श्री अजय चन्द्राकर :- जो गोबर चोरी हुआ है, वह प्रदेश की सबसे बड़ी घटना है। अभी वह विनियोग में आयेगा।

श्री रामकुमार यादव :- चन्द्राकर जी, गोबर सड़ते तो खाद बनथे।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप अपनी क्षमता से कार्य कीजिए। आप जितना कार्य कर रहे हैं, वास्तव में आपकी अवसादग्रस्त मंत्री की भूमिका बन रही है। माननीय सभापति महोदय, आपने बोलने का समय दिया, उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री शैलेश पांडे (बिलासपुर) :- माननीय सभापति महोदय, जब से हमारी सरकार बनी है, हमारे मुख्यमंत्री माननीय भूपेश बघेल जी का चेहरा जिस दिन से विपक्ष ने देखा है, उन दिन से उनको हमेशा से यह डर रहा है कि हम इस चेहरे से लड़ाई कैसे करेंगे। हम इस आदमी के सामने कैस टिकेंगे।

श्री सौरभ सिंह :- माननीय पाण्डे जी, आप गासा पखार जानते हैं क्या? आप कृपापूर्वक बता दीजिए। खेत में गासा पखार होता है धान की खेती करते हैं तो गासा पखार क्या होता है, यह बता देंगे?

श्री शैलेश पाण्डे :- आप रूकिए, आपके बारे में बताता हूँ।

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- गासा पखार के कोई मतलब ही नहीं है। केवल प्रशंसा के मतलब हे। मैं संतराम जी ला कहेंव कि खातू के कमी हे धन, ओला बतावव आखिरी तक बताबे नई करिन कि खातू के कमी हे या नई। अब शैलेश पाण्डे जी मुख्यमंत्री जी के चेहरा से शुरू करे हावए, बृहस्पत सिंह जी के हश्र ला देख ले हावव। ओसने कम से कम मत शुरू करो। आप खातू, बीज के बारे में बतावव।

श्री शिवरतन शर्मा :- क्या है गासा पखार के बारे में माननीय कृषि मंत्री जी अच्छा ढंग से जानत थे।

श्री रामकुमार यादव :- माननीय शर्मा जी, खुर्रा कइसे बोथे?तेला बतावव।

श्री शिवरतन शर्मा :- वह सिवरेज के बारे में जानते हैं ता सिवरेज के बारे में कुछ तो बताही।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- माननीय मंत्री जी पूरा डाटा सहित दे दिये हैं।

श्री रामकुमार यादव :- माननीय शर्मा जी, किसान हा धान, खुर्रा कइसे बोथे?तेला बतावव।

श्री शैलेश पाण्डे :- माननीय सभापति महोदय, तब से यह डर इनको समाया हुआ है कि हम इस चेहरे से लड़ाई कैसे करेंगे ? असल में यह मुख्य मुद्दा है। किसान कभी भी इनकी प्राथमिकताओं में नहीं रहा। जब हमारी सरकार बनी और उस सरकार को पूरे प्रदेश की जनता जानती है कि जब हमारी सरकार बनी, जब माननीय मुख्यमंत्री जी ने शपथ ली, उस शपथ के दो घण्टे के भीतर हमने जो है किसानों का हजारों करोड़ रूपए माफ किया। यह पूरे प्रदेश की जनता जानती है। किसानों की यह होती है सरकार। यह होता है चेहरा, यह होता है मंत्रिमण्डल। मैं आपको बताना चाहता हूँ केन्द्र में भी एक चेहरा है जो बार-बार बदलता रहता है पहले मोदी जी आए, फिर मोदी जी दुबारा आए, वह दोबारा आए तो चेहरा ही

बदल गया। अब उस चेहरे को देश की जनता समझ नहीं पा रही है ये किसके हितैषी हैं ? किसानों के हितैषी हैं या आम जनता के हितैषी हैं ?कि अडानी के हितैषी हैं या अंबानी के हितैषी हैं।

श्री सौरभ सिंह :- चनाडोंगरी में क्या हो रहा है, थोड़ा उसके बारे में बतायेंगे ? वह किसके हितैषी हैं ?

श्री शैलेश पाण्डे :- हम आपको बतायेंगे कि अकलतरा में क्या हो रहा है ? आप बैठिए तो।

श्री सौरभ सिंह :- आपका स्वागत है आप नजदीक हैं पर चनाडोंगरी के बारे में जरा बताईये।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय पंडित जी, आप बोलना शुरू करने के पहले पंडित जी के पास आईये अउ गासा अउ पखार काला रहिथे तेला पूछ। बता दें न भई कि गासा पखार काला कहिथे।

श्री शैलेश पाण्डे :- मैं एक शेर सुना देता हूँ। हमको एक अच्छे विपक्ष की जरूरत है।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप तो छत्तीसगढ़ी बोलते हो, छत्तीसगढ़ वाले हो तो बता दें कि गासा पखार ला।

श्री शैलेश पाण्डे :- हमको अच्छे विपक्ष की जरूरत है। अच्छा विपक्ष नहीं होगा तो सदन अच्छा नहीं चलेगा। इस सदन के मैं सभी सम्माननीय जो वरिष्ठ हमारे सदस्य हैं, मैं उनका बहुत स्वागत करता हूँ मैं उनका सम्मान करता हूँ। उनके लिए एक शेर है "शौक से निकालिए नुक्श मेरे किरदार पर।। आप नहीं होंगे तो हमें तरासेगा कौन ?

श्री रजनीश कुमार सिंह :- माननीय पाण्डे जी, एक मिनट। एक शेर आपके लिए है "तुम अगर मुझको न चाहो तो कोई बात नहीं,

किसी और को चाहोगे तो मुश्किल होगी। "(हंसी)

श्री शैलेश पाण्डे :- माननीय सभापति महोदय, जब हमारी सरकार ने प्रदेश की जनता को सबसे बड़ा सहयोग किया। उनका जो ऋण था वह माफ किया। आप इनकी सरकार के समय देखिए 15 सालों तक इन्होंने राज किया 15 हजार किसानों ने आत्महत्या की। उन्होंने आत्महत्या की या नहीं की ? यह पूरे प्रदेश की जनता जानती है पूरे किसान जानते हैं। इनके राज में इन्होंने कहा कि हम 270 रूपये बोनस देंगे, इन्होंने बोनस दिया क्या ? 300 रूपये बोनस देंगे, इन्होंने दिया क्या ?2100 रूपये समर्थन मूल्य देंगे, इन्होंने यह दिया क्या ? इन्होंने नहीं दिया, यह इस पर बात क्यों नहीं करते हैं ? हम 2500 रूपये देते हैं तो उनको बुरा लगता है इनको क्यों बुरा लगता है क्योंकि हम किसानों के हितैषी सरकार हैं और हम यह पहले ही क्षण से करते आ रहे हैं। माननीय सभापति महोदय, मैं आपको बताना चाहता हूँ कि हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी, हमारे माननीय कृषि मंत्री जी ने पूरे प्रदेश की जनता के लिए किसानों के लिए, 8474 करोड़ रूपये का बजट रखा है। यह बहुत बड़ी राशि होती है। इस राशि में पिछले वर्ष की बात बता रहा हूँ 7 हजार 561 करोड़ रूपये हम लोगों ने बजट में दिये और 98 प्रतिशत हमने उसको आवंटन किया यानी हमने उसको यूटिलाईज किया। हमारी सरकार ने जब 2500 रूपये समर्थन मूल्य



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

देना शुरू किया तो केन्द्र सरकार को समस्या हो गई। केन्द्र सरकार ने कहा कि नहीं, आप जो है वह 1835 रूपये, 1800 कितना रूपये एम.एस.पी. में आप देंगे। अगर आप यह नहीं देंगे तो हम आपका चावल नहीं खरीदेंगे। ये उन्होंने पहला अड़ंगा अड़ाया। इससे किसका नुकसान किया, इन्होंने किसानों का नुकसान किया। किसानों के हितैशी नहीं थे इसलिए इन्होंने यह फैसला किया। उसके बाद भी जो संकल्प हमारी सरकार ने लिया जो संकल्प हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी ने लिया, हमने राजीव गांधी न्याय योजना करके हमने किसानों के साथ न्याय किया और 2500 रूपये की राशि हमने उनको दी। हमने जो वादा किया था वह वादा पूरा किया। हमारी सरकार की उपलब्धियां अगर गिनाने पर आए तो मुझे लगता है कि यह पांच दिन का सत्र जो है, वह ऐसा ही चलता रहेगा और उपलब्धियां खत्म नहीं होंगी। सत्र खत्म हो जाएगा, इतनी उपलब्धियां हैं।

श्री रजनीश कुमार सिंह :- उपलब्धियां बताईये न सुनेंगे।

श्री शिवरतन शर्मा :- उपलब्धियों में कॉलर पकड़ने की घटना भी आएगी, उपलब्धियों में पर्यटन निगम का अध्यक्ष बनने की भी बात आएगी। उपलब्धियों में आपके नेता के ऊपर हत्या का आरोप लगा वह भी आएगा। यही सब उपलब्धियां हैं कि और कुछ है।

श्री शैलेश पाण्डे :- सभापति महोदय, पंद्रह साल तक जो करके कमरे से बाहर नहीं निकले, 15 साल तक बैठकर जो घर में बैठकर दादागिरी करते थे, वह 15 साल बाद अभी बाहर आए, 15 भी नहीं ढाई साल बाद बाहर निकलना शुरू हुए। वह भी कब जब पुरंदेश्वरी देवी जी ने जब डंडा लगाना शुरू किया तब घर से बाहर निकलना शुरू किये। मैं आपको बताना चाहता हूं उसके बाद जाकर अगली मीटिंग में क्या बोलूंगा, फटाफट जाकर जब कोविड मई के महीने में खत्म हो गया, तब वार्ड में जाकर ले बबा राशन ले ले, सेनेटाईजर ले ले, ये मास्क ले ले। फोटो खिंचाई ताकि उनकी प्रभारी को बताना पड़े। ये 15 साल बाद लोगों का दर्द जनता का दर्द किसानों का दर्द इनको महसूस हो रहा है। 15 साल तक इनको दर्द महसूस कभी नहीं हुआ।

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- पाण्डे जी, यह केवल बिलासपुर की कहानी है कि पूरे प्रदेश की कहानी है।

श्री शैलेश पाण्डे :- समझ लो ना बाबा। (हंसी)

श्री शिवरतन शर्मा :- पाण्डे जी, रेट सिर्फ एक विभाग का तय कराओगे कि सब विभाग का रेट तय कराओगे। बोर्ड लगवाओगे की नहीं लगवाओगे।

श्री शैलेश पाण्डे :- सबका रेट तय करेंगे रूको ना।

श्री शिवरतन शर्मा :- सबका रेट बोर्ड लगवाओगे ना।

श्री शैलेश पाण्डे :- बैठो ना। आदरणीय बैठिए ना।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री शिवरतन शर्मा :- काम का रेट लिस्ट। जैसे थाने में रेट लिस्ट लगाने की मांग की था ना तो बाकी विभागों में भी लगवा दीजिए।

श्री शैलेश पाण्डे :- माननीय सभापति महोदय, केन्द्र सरकार जिस प्रकार से पूरे देश के किसानों के साथ रवैया कर रही है, उन्होंने तीन काले कानून लाए, किसके लिए लाए ? कार्पोरेट जगत को फायदा पहुंचाने के लिए तीन काले कानून लाए। किसानों को मवाली कहा गया। मवाली का मतलब क्या होता है, मवाली क्या होता है। आदरणीय अच्छा चलिए मवाली का मतलब बताईये। मवाली क्या होता है बताईये?

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- मवाली पिक्चर आए रिहिस तेला हमन मवाली कथन।

सभापति महोदय :- चलिए, शैलेश जी को बोलने दीजिए। कृपया बैठ जाएं।

श्री शैलेश पाण्डे :- मवाली क्या होता है बताईये। शिवरतन भैया मवाली बताईये। गुंडा बताईये, गुंडा किसको बोलते हैं।

सभापति महोदय :- शैलेश जी, आप अपनी बात विषय पर रखिये।

श्री शिवरतन शर्मा :- मैं बिल्कुल बता देता हूं। मवाली उसको कहते हैं जो किसी विधायक की कॉलर पकड़ ले। उसको मवाली बोलते हैं।

संसदीय सचिव, श्री कुंवर सिंह निषाद (खाद्य नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण विभाग से सम्बद्ध) :- मतलब किसान आपकी नजर में मवाली है।

श्री शैलेश पाण्डे :- मैं वही कहना चाहता हूं कि आपके केन्द्रीय मंत्री जी ने किसानों को मवाली कहा। किसानों का अपमान किया। छत्तीसगढ़ के किसानों का भी अपमान किया। आप उसको स्वीकार क्यों नहीं करते हैं। आज आप किसानों के लिए घड़ियाली आंसू बहा रहे हैं। आप एक तरफ किसानों को बोनस नहीं देते हैं, आपके मंत्री बोलते हैं कि एक रूपया नहीं दिया जाएगा और किसानों को गुंडा मवाली कह रहे हैं। यह आपकी सोच है। आप यहां पर घड़ियाली आंसू बहा रहे हैं। यह भी प्रदेश की जनता देख रही है। यह भी हमेशा याद रखेगी। माननीय सभापति महोदय, मैं आपको बताना चाहता हूं कि पिछले पांच सालों में आप रिकॉर्ड निकलवाईये, छत्तीसगढ़ के किसानों ने धान के लिए कितना पंजीयन कराया है। आपको यह रिकार्ड में मिलेगा कि हर साल जब से हमारी सरकार आई है तब से हर साल लगातार बढ़ रहा है और 22 लाख किसान खरीफ की फसल के लिए पंजीकृत किये गये हैं।

सभापति महोदय :- शैलेश जी, कृपया समाप्त करेंगे।

श्री शैलेश पाण्डे :- माननीय सभापति महोदय, आपसे कहना चाहता हूं कि हमारे प्रदेश में न तो यूरिया की कमी है और न ही हमारे बीज की कमी है। अगर कमी है तो वह जो हमने केन्द्र सरकार से मांगा है उसकी कमी थी। मैं आपको बताना चाहता हूं कि यूरिया 5.58 लाख मीट्रिक टन हमने मांग की थी और 2.98 लाख मीट्रिक टन हमारे पास उपलब्ध है। डी.ए.पी. एन.पी. के एस.एस.पी. सभी में हमने 3 लाख 20 हजार मीट्रिक टन, 80 हजार मीट्रिक टन और 1 लाख 50 हजार मीट्रिक टन, इसके उपलक्ष्य



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

में हमारे पास 1 लाख 78 हजार मीट्रिक टन, 5 लाख 38 हजार मीट्रिक टन और 74,840 मीट्रिक टन ये सभी हमारे पास उपलब्ध था। माननीय सभापति महोदय, मैं आपको बताना चाहता हूं बस एक मिनट का समय आपसे लूंगा। हमारी सरकार पूरी तरीके से किसानों की हितैशी सरकार है और हम सभी लोग किसानों की सेवा कर रहे हैं और विपक्ष जो कह रहा है उनकी बातों का भी हम लोग ध्यान रखेंगे लेकिन किसी भी किसान को हम लोग परेशान नहीं होने देंगे । माननीय सभापति महोदय, आपने मुझे बोलने का अवसर प्रदान किया इसके लिये बहुत-बहुत धन्यवाद ।

डॉ. रमन सिंह (राजनांदगांव) :- माननीय सभापति महोदय, एक महत्वपूर्ण विषय पर आज पूरा सदन चर्चा कर रहा है और छत्तीसगढ़ के ढ़ाई करोड़ से ज्यादा लोग और हमारे पूरे किसान छत्तीसगढ़ की विधानसभा की ओर बहुत टकटकी लगाए देख रहे हैं । 90 विधानसभाओं में एक-साथ आंदोलन हो रहा है और आंदोलन की स्थिति छत्तीसगढ़ में क्यों बनी ? किसान सड़क में क्यों आया ? इस दो-ढ़ाई साल में क्या परिस्थिति बन गयी कि आज किसान सड़क पर है और किसान एक-बार नहीं लगातार विभिन्न मुद्दों पर किसान सड़क पर आ रहा है तो आज इस विषय को लेकर निश्चित रूप से किसानों की चिंता है और एक महत्वपूर्ण विषय जो कहा जाता है कि फसल चक्र परिवर्तन और यदि फसल चक्र परिवर्तन करने की नीयत है, यदि फसल चक्र परिवर्तन करने की मंशा है तो कम से कम धान के रकबे को कम करने के बारे में प्रयास होगा, सोयाबीन के बीज की क्या स्थिति है ? इस बार सोयाबीन का बीज सबसे ज्यादा माननीय रविन्द्र चौबे जी का क्षेत्र है और मेरा क्षेत्र या कवर्धा जिले के अंदर के लोग हैं और छुईखदान तक सोयाबीन का उत्पादन होता है, पूरे छत्तीसगढ़ में सोयाबीन का बीज ही उपलब्ध नहीं है । अब आप यदि चाहते हैं कि तिलहन में रकबा बढ़े लेकिन आज 42 हजार मीट्रिक टन के अगेंस्ट में 5 हजार मीट्रिक टन उपलब्ध है । सोयाबीन की उपलब्धता 1 लाख मीट्रिक टन के अगेंस्ट में 5 हजार मीट्रिक टन यानी सोयाबीन तो उपलब्ध ही नहीं है । सोयाबीन, धान, तिलहन और दलहन फसल चक्र परिवर्तन की बड़ी कल्पना को लेकर यदि हम बात करते हैं लेकिन आज धान के बीज की उपलब्धता, किसानों को जिस प्रकार से धान के बीज उपलब्ध कराने के लिये कहा गया था, आज 8 लाख मीट्रिक टन के अगेंस्ट में 5 लाख मीट्रिक टन इतना बड़ा गेप छत्तीसगढ़ में पहली बार हुआ है कि किसानों के लिये अच्छी क्वालिटी का बीज उपलब्ध नहीं हो रहा है । किसान सोसायटी में भटक रहा है, किसान इंतजार कर रहा है और किसानों की स्थिति यह हुई कि 20 सालों में आज जो स्थिति बनी, मैं अकेले सोयाबीन की बात नहीं कर रहा हूं, दलहन-तिलहन की बात नहीं कर रहा हूं, धान के बीज की उपलब्धता की बात नहीं कर रहा हूं, एक-एक सोसायटी की स्थिति यही बनी हुई है । अनुपलब्धता की वजह से किसान भटक रहा है और आज 20 सालों में जो अभूतपूर्व किल्लत आयी है । हजारों सोसायटी में यही स्थिति है । बीज-खाद को लेकर अभूतपूर्व संकट है । निजी व्यापारी के पास उपलब्ध है, उनके पास सारे किस्म के खाद उपलब्ध है लेकिन सोसायटी में जहां किसान लेता है वहां पर उसकी उपलब्धता बिल्कुल

नहीं है और आज यूरिया हो, सुपर फास्फेट हो या डीएपी, खुले बाजार में ढ़ाई हजार में में डीएपी बिकने को मजबूर हो रहा है । 600 से लेकर 800 रूपये यूरिया और व्यापारी मालामाल हो रहा है, ऐसी स्थिति क्यों बनी ? किसानों की क्या स्थिति हुई ? पहले हमने व्यवस्था बनाई थी ? लगातार छत्तीसगढ़ में 15 सालों तक किसानों को एडवांस लिफ्टिंग की व्यवस्था थी । किसानों के लिये व्यवस्था बनी थी कि वे यूरिया, डीएपी, सुपर फास्फेट, सोसायटी में जो खाद उपलब्ध होता है, उस खाद को एडवांस लिफ्टिंग एक-डेढ़ महीने का इंटरेस्ट फ्री, उनको ब्याज नहीं लगता था । किसान बारिश होने के बहुत पहले ही खाद उठा लेता था, स्टॉक कर लेता था और उसके बाद सिंगल लॉक और डबल लॉक की जो व्यवस्था थी उसका बैलेंस बन जाता था । किसानों के पास जब बियासी का सीजन आता था, जब रोपा का सीजन आता था, उस समय पूरे के पूरे सोसायटी में यह सारे खाद उपलब्ध हुआ करते थे यह व्यवस्था चौपट हो गई । इस व्यवस्था को बनाये होते, एडवांस लिफ्टिंग में डेढ़-दो महीने के इंटरेस्ट को माफ किये होते, जो एडवांस लिफ्टिंग करता है निश्चित रूप से बीज और खाद के लिये जिस प्रकार से आज किल्लत और जो स्थिति बन रही है यह स्थिति नहीं बनती । आज इस राज्य सरकार ने, केंद्र पर आरोप लगता है कि केंद्र सरकार ने हमें खाद नहीं दिया जबकि वास्तविक स्थिति यह है कि राज्य सरकार द्वारा न एडवांस में खाद की मांग की गई, टुकड़ों-टुकड़ों में आदेश दिये गये और जो आज के समय में खाद की स्थिति है, खाद की स्थिति के बारे में केंद्र सरकार द्वारा ...(जारी)

श्री ठाकुर

ठाकुर\26-07-2021\f11\04.45-04.50

(पूर्व से जारी) डॉ. रमन सिंह :- एडवांस में खाद की मांग की गई। टुकड़ों-टुकड़ों में आदेश दिये गये। आज की स्थिति में खाद की स्थिति है और केन्द्र सरकार ने खाद की स्थिति की ओर जुलाई महीने में जो ध्यान आकर्षित किया है, उसमें छत्तीसगढ़ में खाद की स्थिति के बारे में बताना चाहता हूं। छत्तीसगढ़ में खरीफ सीजन 2021 में यूरिया की आवश्यकता 5.50 लाख मीट्रिक टन है। इसी के अनुरूप एक अप्रैल, 2020 से 2 जुलाई, 2021 तक 2.29 लाख मीट्रिक टन की जो आवश्यकता थी, मांग के अनुरूप विभाग को 1.91 लाख मीट्रिक ओपनिंग स्टॉक में और 4 लाख से ज्यादा मीट्रिक टन उपलब्धता केन्द्र सरकार ने सुनिश्चित किया। इसका मतलब राज्य सरकार के पास 2 जुलाई, 2021 को क्लोजिंग स्टॉक 1.69 लाख मीट्रिक टन राज्य सरकार के पास जुलाई की स्थिति में जो क्लोजिंग स्टॉक था, उसकी स्थिति है और वही हाल डीएपी की है। खरीफ फसल 2021 के लिए छत्तीसगढ़ में डीएपी की आवश्यकता 3.20 लाख मीट्रिक टन है। अप्रैल से लेकर जुलाई तक 1.65 लाख मीट्रिक टन की आवश्यकता थी। मांग के अनुरूप खाद उपलब्ध कराया गया। राज्य में जुलाई महीने में क्लोजिंग स्टॉक 7.6 लाख मीट्रिक टन उपलब्ध था। इसका मतलब यह है कि केन्द्र सरकार की डेटा से यह साफ लगता है कि 2 जुलाई की स्थिति में यूरिया 1.69 और डीएपी .76 यानी 76 हजार मीट्रिक टन उपलब्ध था। यह स्थिति सुपर

फॉस्फेट और यूरिया की स्थिति है। इसका मतलब फिर यह गया कहां? और यदि यह उपलब्धता है तो फिर किसान आज क्यों भटक रहा है ? किसान के भटकने की स्थिति क्यों बनी? उसका एक जवाब सिर्फ यही है कि किसानों को जो उपलब्ध कराया जा रहा है और जो व्यापारियों को उपलब्ध कराया जा रहा है यानी सोसाइटी को जो खाद जा रहा है, उसका रेशियो क्या है और जो व्यापारियों को खाद जा रहा है, उसका रेशियो कया है? मैं उसका सामान्य जानकारी देना चाहूंगा कि ये पत्र मेरा नहीं है। यह टी.एस. सिंहदेव जी का पत्र है। उन्होंने मंत्री जी, माननीय रविन्द्र चौबे जी को पत्र लिखा है कि यूरिया निजी क्षेत्र में 250 टन के विरूद्ध में 4609 टन दिया गया। (शेम-शेम की आवाज) यह कितना गुना होता है? यह कितना हिस्सा होता है ? लक्ष्य का इतना बड़ा हिस्सा है। यह हर जिले की कहानी है। मैं तो उदाहरण के तौर पर पढ़ रहा हूं कि 250 टन के विरूद्ध में 4609 टन और सहकारी क्षेत्र में उसी जिले में कितना मिला ? यह कंपेयर करने का विषय है। 8750 टन के विरूद्ध जो सोसाइटिज को जाना था, उसी दौरान में उस जिले में 8750 टन के विरूद्ध में 3648 टन आधा जा रहा है। वहां 50 गुना जा रहा है। यह पत्र मेरा नहीं है। यह पत्र मैंने नहीं लिखा है। यह धन्यवाद के साथ माननीय कृषि मंत्री जी को पत्र लिखा गया है कि आपको बहुत-बहुत धन्यवाद। ये आंकड़े पूरे छत्तीसगढ़ की कहानी बताते हैं कि छत्तीसगढ़ में किस प्रकार से वितरण की व्यवस्था रखी गयी और किस प्रकार यह वितरण हुआ। दूसरा विषय, जिस प्रकार छत्तीसगढ़ में खाद की स्थिति है और जैसा मैंने क्लोजिंग स्टॉक के बारे में बताया, अलग-अलग सोसाइटी की स्थिति, जो मेरे पास जानकारी उपलब्ध है बीजापुर के 6 सोसाइटी इलमिड़ी, उसूर, कुटरूर सोसाइटी में खाद बीज उपलब्ध नहीं। इसके अतिरिक्त राजनांदगांव के सोनसायटोला सोसाइटी में चक्का जाम हो रहा है। कांकेर के गोदानार, कवर्धा के जोराताल में चक्का जाम किया गया। बस्तर और सरगुजा में चक्का जाम किया। धरसींवा के किसानों ने बीज और खाद की उपलब्धता के लिए चक्का जाम किया। 20 साल, 15 साल तो मैं मुख्यमंत्री था, कभी खाद और बीज के लिए छत्तीसगढ़ के किसानों के लिए चक्का जाम करने की स्थिति नहीं निर्मित नहीं हुई। सड़क में आने की जरूरत नहीं हुई। उन्हें कभी भी व्यवस्था के लिए भटकना नहीं पड़ा और आज तो टोकन प्राप्त करने के लिए चक्का जाम करना पड़ रहा है । यह अजीब बात है कि किसान को टोकन लेने के लिए भी इस प्रकार संघर्ष करना पड़ रहा है ।

सभापति महोदय, कुछ घटनाएं कृषि मंत्री जी के क्षेत्र की हैं । धमधा विकासखंड की, जांजगीर जिले की । वाय.आर. और माइको कम्पनी की बात है । वाय.आर.और माइको कम्पनी के साथ किसानों ने अनुबंध किया और यह अनुबंध हुआ कि 6600 प्रति क्विंटल की दर से धान खरीदी की जाएगी । किसानों ने प्रति एकड़ 50 से 60 हजार रूपए खर्च किया और धोखाधड़ी के शिकार हुए । 1200 एकड़ में इस हाईब्रिड धान को पैदा किया गया । वाय.आर.सीड प्रोडक्शन कम्पनी, मंत्री जी इस बात का जवाब देंगे कि क्या इसने परमीशन लेकर काम किया । क्या सरकार की जानकारी में है कि यह कम्पनी हाई ब्रिड धान का उत्पादन कर रही है जो 100 प्रतिशत फेल हो गया, किसानों को राशि मिलनी चाहिए,

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

उसका कुछ हिस्सा मिला लेकिन उनसे भी लिखवाया जा रहा है कि हमें शत्-प्रतिशत् पैसा मिल गया । एग्रीमेंट में दस्तखत कराया जा रहा है । जो मुआवजा देना चाहिए, उसका भी ¼ मुआवजा मिला । 40 गांवों के किसानों से लिखवाया जा रहा है कि हम मुआवजे से संतुष्ट हैं। क्या इस प्रकार की बातें सरकार की जानकारी में रहती हैं, क्या यह सब सरकार से परमीशन लेकर किया गया और नये-नये हाईब्रिड पैदा करने का किसानों को भ्रम दिया गया । अमानक बीज जो महत्वपूर्ण विषय है । अमानक बीज किसानों तक क्यों पहुंचे, कैसे पहुंचे । जब इसका अंकुरण किया, कृषि विभाग के अधिकारी और वहां के अधिकारियों ने इसका अंकुरण किया तो 70 प्रतिशत ही अंकुरण पाया गया । सोयाबीन हो या धान हो, बिलासपुर जिले की घटना हो, नारायणपुर के उप संचालक की बात हो । बीज के 20 सेम्पल और खाद के 42 सेम्पल अमानक पाए गए । ये राज्य सरकार के रिकॉर्ड में उपलब्ध है कि इतनी बड़ी संख्या में ये बीज और खाद अमानक पाए गए । धान के विक्रय दर में अप्रत्याशित वृद्धि होती है । कहां 2017 में धान 1650 रूपया था जो 2021 आते-आते 2400 रूपए प्रति क्विंटल के भाव से हो गया ।

सभापति महोदय, बिजली के बारे में बहुत चिंता हो रही थी । सरकार ने बहुत बड़े-बड़े नारे लगाये, बिजली हाफ-बिजली हाफ । आज वास्तव में बिजली हाफ नहीं, ¼ हो गई है । कवर्धा से लेकर, राजनांदगांव तक, छुईखदान तक, महासमुंद तक 6 घंटे, 8 घंटे की लगातार कटौती हो रही है ट्रान्सफार्मर फेल होते जा रहे हैं । बिजली के मामले में हम लोगों ने नीति बनाई थी कि कहीं बिजली के पम्प के कनेक्शन  लेने वाले किसानों को वेटिंग के चक्कर में उनको एप्लीकेशन देने की जरूरत नहीं होगी । उन्हें कहीं लाईन नहीं लगाना पड़ेगा । एक-एक साल 35 हजार पम्प कनेक्शन आज वेटिंग में छत्तीसगढ़ में है और उससे ज्यादा पम्प खुद गए हैं । अब ये 70 हजार पम्पों में 35 हजार देने के लिए यदि पैसे की व्यवस्था नहीं होगी । मुख्यमंत्री जी घोषणा करते हैं कि 35 हजार पम्प कनेक्शन दे देंगे । किसान को बेहतर स्थिति में लाने के लिए कार्ययोजना बनाकर और उसके आदेश होना चाहिए कि ये 35-36 हजार पम्प कनेक्शन कब तक हो सकता है और कब नहीं होगा ? धान की खरीदी हुई लेकिन धान का ख़राब होना एक राष्ट्रीय अपराध भी है । मगर आज धान की स्थिति यह है कि हमने पूरे 15 साल धान खरीदी की व्यवस्था बनाई और यह व्यवस्था की कि धान का पूरा-पूरा लिफ्टिंग, बारिश के पहले शत्-प्रतिशत् करना सुनिश्चित करें। आज पूरा का पूरा 15-16 लाख मेट्रिक टन धान सड़ रहा है । यह व्यवस्था का फैल्युवर है, सरकार की असफलता है । धान का उठाव न होना एक अपराध की श्रेणी में आता है । इन सारी व्यवस्थाओं को सुधारने के लिए क्या करेंगे? अब तो यह हालत है कि सहकारी समिति के हमारे सदस्य, सहकारी समिति के लोग अब इस्तीफा तक देने के लिए तैयार हैं, कवर्धा के जिले में नुकसानी से परेशान होकर 400 कर्मी का 3 महीने का वेतन नहीं मिलने की वजह से इस्तीफा देने की स्थिति है। ऐसे बहुत सारे मुद्दे हैं जो किसान और किसानों से जुड़े हैं । मैं अन्य विषयों पर और चर्चा करूंगा । आज मैं इतना ही बोलना चाहता हूं, धन्यवाद् ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय कृषि मंत्री जी, मेरे ख्याल से आज का स्थगन ढाई साल का सबसे अच्छा स्थगन है, जिसमें कोई आरोप-प्रत्यारोप नहीं हो रहे हैं । आप इस बात का ध्यान रखिएगा कि लोगों को आपसे कितनी अपेक्षा है और इसमें गंभीरता से चर्चा हो रही है । किसी तरह से इधर-उधर की बात नहीं कहीं जा रही है।

श्री रविन्द्र चौबे :- बहुत ही सम्माननीय अजय भाई । यह विषय ही ऐसा है, जिसमें आप भी रचनात्मक सुझाव देंगे और हम भी जो काम कर रहे हैं, उसकी प्रशंसा ही मिलेगी ।

श्री अजय चन्द्राकर :- लेकिन आप अपेक्षित गंभीरता दिखाईए, मैं यह कह रहा हूं ।

श्री रविन्द्र चौबे :- उससे भी ज्यादा दिखाएंगे ।

श्री अजय चन्द्राकर :- अभी तक तो नहीं दिख रही है ।

श्री रविन्द्र चौबे :- जितनी आपकी अपेक्षा और उम्मीद है, सरकार उससे भी ज्यादा गंभीर है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- अभी तक तो नहीं दिख रही है न । आप दिखाएंगे, ऐसा कह रहा हूं ।

उद्योग मंत्री (श्री कवासी लखमा) :- मोदी जी को एक पत्र लिख दीजिए कि खाद नहीं आ रहा है । हम लोग उसमें ठीक हो जाएंगे ।

श्री अजय चन्द्राकर :- अकबर जी, लखमा जी आपके बाजू में रहेंगे तो घोर आपत्ति होगी । यह आप नोट कर लो । आज जितना खड़ा होना है, हो जाओ ।

श्री शिवरतन शर्मा :- आसंदी से निवेदन करना कि कल अकबर जी की सीट एक दिन के लिए बदल दी जाये ।

श्री कवासी लखमा :- मैं आसंदी से अनुरोध करूंगा कि शिवरतन जी को डांट दिया जाये ।

सभापति महोदय :- मंत्री जी, बैठिए । लक्ष्मी ध्रुव जी, आप अपनी बात रखिए।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव (सिहावा) :- माननीय सभापति महोदय, विपक्ष के द्वारा खाद और बीज के संबंध में स्थगन प्रस्ताव लाया गया है । मैं अपनी बात सरकार के समर्थन में रखूंगी । माननीय कृषि मंत्री जी ने कृषि के लिए 8474 करोड़ रूपये बजट का प्रावधान किया है और 2021 में उसको 7561 करोड़ रूपए और बढ़ा दिया गया है। यह इस बात का संकेत है कि हमारी सरकार किसानों की हितैषी है, किसानों के विकास और उनकी समस्याओं को निरंतर दूर करना चाहती है इसलिए बजट में यह प्रावधान किया गया है । मैं विपक्ष के साथियों को बताना चाहती हूं कि यदि किसानों के हितैषी होते तो उनके कार्यकाल में 15 हजार किसान आत्महत्या क्यों करते ? साथ ही किसान निरंतर आंदोलनरत् थे । कांग्रेस की सरकार आने के पहले किसान निरंतर हताश, परेशान थे । कई किसानों ने कृषि करना छोड़ दिया था, यह बात विपक्ष को समझना चाहिए । इस बात को हमारे मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी ने दिल से समझा, सुना और सत्ता में आने के पहले ही घोषणा कर दी कि हम छत्तीसगढ़ के किसान को हताश होने नहीं देंगे, उनको परेशान होने नहीं देंगे, उनका जो कर्ज है, उसको माफ भी करेंगे और धान की कीमत 25 सौ

रूपये करेंगे, यह घोषणा-पत्र में तय कर दी थी । किसान इस बात से काफी खुश हुए, उनको आशा की किरण दिखाई देने लगी और उसी आशा की किरण की बदौलत है कि जनता ने हमारी पार्टी को 70 विधायकों को समर्थन दिया है । इस बात को भली-भांति विपक्ष को समझना चाहिए ।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- 70 विधायकों के समर्थन के बाद भी खाद और बीज की कमी बनी है ।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- मैडम, इसका कारण आपके ऊपर बैठे आपके नेता हैं । यदि वे हमें 100 प्रतिशत देते तो आज यह समस्या नहीं आती । फिर भी किसान किसी भी प्रकार से तकलीफ में न रहे, इसके लिए सरकार निरंतर प्रयासरत है। साथ में हम लोग उनको वर्मी कम्पोस्ट भी प्रदान कर रहे हैं, ताकि उनके खेती-किसानी में किसी प्रकार की परेशानी उत्पन्न न हो ।

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- धमतरी में वर्मी कम्पोस्ट में 30 किलो का पैसा लिया जा रहा है और 18 किलो तौला जा रहा है ।

सभापति महोदय :- रंजना जी, आप हस्तक्षेप न करें, आप अपनी बात कहें ।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- मैडम, आप फील्ड में जाकर देखिए कि काम कैसे हो रहा है।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- रंजना, शिवरतन के चक्कर में मत रहिबे, फसो दिही। (हंसी)

श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू :- त काकर चक्कर में रहना हे ?

सभापति महोदय :- लक्ष्मी ध्रुव जी अपनी बात कहिए ।

श्री शिवरतन शर्मा :- छत्तीसगढ़ के किसान तोर चक्कर में फंस के पछतावथे।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- मेरे क्षेत्र में किसानों के लिए सोंढुर जलाशय से पानी छोड़ दिया गया है, ताकि किसान अच्छे से बुआई कर सकें।

श्री अजय चन्द्राकर :- अभी डहरिया जी बड़े चक्कर में हैं, अभी एक-दो दिन में उसको बतायेंगे, उद्घाटित करेंगे कि क्या बड़े चक्कर में हैं।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- छत्तीसगढ़ सरकार निरंतर किसानों के लिए काम कर रही है। चाहे सिंचाई क्षमता का विस्तार हो, रूपांकन क्षमता के अनुरूप प्रयास किया जा रहा है। कृषि भूमि के उत्पादन रकबे में दोनों दृष्टि से बढ़ोत्तरी हो रही है। यहां तक जिन किसानों के पास भूमि नहीं है, उनके लिए भी सरकार ने योजना बनाई है। यदि केन्द्र की सरकार किसान हितैषी होती तो एथेनॉल बनाने के लिए अनुमति दे देती, जिससे हमारा धान नष्ट नहीं होता और आज हम एथेनॉल बना रहे होते, उसका उत्पादन जारी रहता। आपके नेता ने इस बात पर ध्यान क्यों नहीं दिया ? दिल्ली बार-बार जाने के बाद भी ध्यान नहीं दिए। किसानों के हित के लिए कोदो, कुटकी, रागी, दलहन-तिलहन फसलों के रकबे का विस्तार किया गया है। किसानों की और आमदनी बढ़े, इसके लिए हमारी सरकार ने मत्स्य पालन को भी कृषि का दर्जा दिया गया है। लाख को भी कृषि का दर्जा दिया गया है ताकि किसानों के घर में पैसा



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

आये। देश में सर्वाधिक गन्ना खरीदी भी यहां की गई है। महात्मा गांधी वानिकी विश्वविद्यालय की स्थापना की गई है। ताकि हमारे किसान परम्परागत खेती के स्थान पर नये आधुनिक तकनीक के साथ काम कर सके। ये सारे प्रयास किसान हितैषी होने के कारण हमारे प्रदेश के मुखिया आदरणीय मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी ने सोचा है और निरंतर इस पर काम चल रहा है।

मानननीय सभापति महोदय, दूसरी बात यदि आप लोग किसानों के हित की बात सोचते तो आपने जो 270 रूपया बोनस देने का वादा किया था, उससे भी नहीं मुकर होते। 300 रूपया बोनस देने का भी वादाखिलाफी किया है। 2100 रूपया धान का समर्थन मूल्य देने से भी मुकर गये। समर्थन मूल्य देने के बजाय निरंतर किसानों के ऊपर, खासकर मैं धमतरी जिले का गवाह हूं, वहां लाठियों की बरसात की गई, गोलियों की बरसात की गई। क्या यह किसानों के हित में काम किया गया था ? यह एक बार विपक्ष को सोचना चाहिए। जब हमारी सरकार किसानों के हित में निरंतर काम कर रही है, तो विपक्ष के लोग इसको सहन नहीं कर पा रहे हैं। किसानों का विकास कैसे रोका जाये, केन्द्र सरकार इसके लिए जिम्मेदार है।

सभापति महोदय :- कृपया समाप्त करेंगे।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- केन्द्र सरकार जो वादा करती है, वह पूरा नहीं करती है। हमारी सरकार वादा पूरा कर रही है तो उस पर नित-प्रति-दिन बाधा पहुंचाने का काम कर रही है। तो मैं सदन से यह कहना चाहती हूं कि हमारा छत्तीसगढ़ किसानों का छत्तीसगढ़ है। हमें किसानों के हित के लिए काम करना चाहिए, वे हमारे अन्नदाता हैं। सरकार उसके लिए चाहे खाद हो, चाहे बीज हो, निरंतर देने का प्रयास कर रही है। हर प्रकार की सुविधा मुहैय्या कराने की बात कर रही है। आप लोग 41 हजार करोड़ रूपये कर्ज छोड़कर गये हैं, आप लोगों को यह बात भूलना नहीं चाहिए। क्या किसानों के प्रदेश में किसानों के ऊपर कर्ज लादना चाहिए ? आप इस बात का अहसास कर लें, तो बहुत बड़ी बात है। हमारी सरकार कोरोना जैसे महामारी के बावजूद भी निरंतर चाहे गोधन न्याय योजना हो, चाहे राजीव गांधी न्याय योजना हो, लाभ देने का प्रयास कर रही है और आज प्रदेश में किसान खुशहाल है और मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी के ऊपर आस्था है। इतना कहकर मैं अपनी वाणी को विराम देती हूं। सभापति जी, आपने बोलने का समय दिया, धन्यवाद।

श्री नारायण चंदेल (जांजगीर-चांपा) :- माननीय सभापति महोदय, इस बात का दुर्भाग्य है कि यहां के मुख्यमंत्री भी किसान हैं और कृषि मंत्री भी किसान हैं। लेकिन उसके बाद भी, यह सरकार भी बनी है,...।

श्री केशव चन्द्रा :- कतका झन किसान हे ?

श्री रामकुमार यादव :- अउ कतका बोनस खुद पाय हस, तेहू ला बताइहा।



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री नारायण चंदेल :- और इस सरकार की नींव भी किसानों पर रखी गई है। लेकिन आज जो स्थिति है, हमारे विपक्ष के सदस्यों ने खाद और बीज की समस्या को लेकर, आज यह ज्वलंत समस्या है, आज छत्तीसगढ़ प्रदेश के पूरे 90 विधानसभा क्षेत्रों में किसान सड़क पर हैं। किसान आंदोलनरत हैं। किसान धरने पर बैठे हैं, प्रदर्शन कर रहे हैं। वह किसलिए प्रदर्शन कर रहा है ? उनकी मूलभूत आवश्यकता खाद और बीज है। आज छत्तीसगढ़ में किसानों की जो स्थिति है, मैं दो पंकित में बयां करना चाहता हूं । बाजार का यह हाल है, किसान पीला और दुकानदार लाल है । यह स्थिति छत्तीसगढ़ में है । माननीय मुख्यमंत्री जी, आज अमानक खाद, अमानक बीज, मैं जांजगीर-चांपा जिले से आता हूँ, सर्वाधिक किसान वाला जिला है, सर्वाधिक सिंचित जिला है, लेकिन उसके बाद भी जो स्थिति है, किसान आज याचक बन गया है ।

श्री रामकुमार यादव :- सभापति जी, 15 साल में सबसे ज्यादा फैक्ट्री खोलने का काम यही लोग किये हैं ।

सभापति महोदय :- कृपया बैठ जायें ।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय सभापति महोदय, जो आंकड़े हैं, आज कृषि विभाग द्वारा वर्ष 2021 के लिए जुलाई माह तक कुल 3,40,000 टन यूरिया की मांग भारत सरकार को प्रेषित की गई । जिसके विरूद्ध भारत सरकार ने 3,10,000 टन की आपूर्ति की जा चुकी है, जो 91 प्रतिशत है । माननीय सभापति महोदय, उसके बाद भी इस छत्तीसगढ़ की सरकार को जो जनादेश मिला है, वह सरकार चलाने के लिए मिला है, दुर्भाग्य यह है कि कांग्रेस के भी कार्यकर्ता सप्ताह में दो बार प्रदर्शन करते हैं । रैली निकालते हैं, धरना देते हैं, मानसिक रूप से यह तो तैयार हो जाओ कि सरकार में हो या विपक्ष मे हो । रोज केन्द्र सरकार को पत्र लिख रहे हैं । हम अपने दायित्वों का निर्वाह करें, जनता ने अगर हमको सरकार बनाने के लिए जनादेश दिया है, आप सत्ता में बैठे हैं, तीन-चौथाई बहुमत से बैठे हैं । किसी भी सरकार का यह पहला दायित्व है, छत्तीसगढ़ की हमारी सारी अर्थव्यवस्था जो है, वह कृषि पर आधारित है । आज वही किसान गांव का रहने वाला, दुकालू, सुकालू, बैसाखू, कमारू, पहारू, डहारू, खाद और बीज के लिए भटक रहा है । सोसायटियों में जाकर बैठा है । वह याचना कर रहा है । वह याचक की भूमिका में है । वह ज्यादा दाम में दुकानदारों से खाद और बीज खरीद रहा है । बीज निगम की क्या स्थिति है ? अभी चौबे जी बाहर गये हैं, फर्जी बीज, अमानक बीज, जो बीज अंकुरित नहीं हो रहा है, यह किसान के साथ में अन्याय हो रहा है। नकली खाद...

श्री रामकुमार यादव :- तुमन के समय में नून हा घलो ठहरा जावय, बासी में घुरत नई रहिसे ।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जब धान खरीदी पिछले बार हुई, हम किसान की बात करते हैं, गिरदावरी में किसान की कमर को तोड़ दिया गया । धान खरीदी के ठीक पहले, किसान के खेतों को नापा गया, जो छोटे किसान है, मंझोले किसान है, सीमांत किसान है, दो एकड़, ढ़ाई एकड़, डेढ़

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

एकड़ के कई किसानों के पूरे खेत गायब हो गये । कुछ किसान तो आये थे, भईया हमर खेत गंवागे, मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ के इतिहास में पहली बार, हमन कहेन की खेत गंवागे, कैसे गोठियाथस, तो बोले भईया गिरदावरी में हमर खेत गायब होगे, एखर रिपोर्ट कहां लिखाना हे, मैं केहेंव माननीय मुख्यमंत्री और कृषि मंत्री मेर जाय ला परही । यह परिस्थिति छत्तीसगढ़ में पहली बार हुई है । जिस किसान की बात हम करते हैं, उसका खेत गुम हो जाता है । जब वह थानेदार के पास जाता है, थानेदार उसको कह देता है कि यह हस्तक्षेप के अयोग्य है । यह स्थिति छत्तीसगढ़ में किसानों के साथ में हो रहा है ।

सभापति महोदय :- नारायण चंदेल जी, कृपया समाप्त करेंगे ।

श्री नारायण चंदेल :- सभापति महोदय, जांजगीर-चांपा जिले की बात मैं बता दूं, 11 हजार में से सिर्फ 4 हजार टन खाद उपलबध हुआ है । आज भी जांजगीर-चांपा जिले से ही पूरे प्रदेश के सारे किसान सड़कों पर है, आज जांजगीर-चांपा जिले के नवागढ़ में, बम्हनीडीह में किसानों ने चक्का जाम किया है । माननीय सभापति महोदय, इस सारी चीजों को हमको दिखवाना चाहिये । मैं सदन में उपस्थिति माननीय मुख्यमंत्री जी से निवेदन करूंगा कि यह खाद एवं बीज की समस्या क्यों पैदा हो रही है । खाद और बीज की समस्या इसलिए पैदा हो रही है? खाद और बीज की समस्या इसलिए पैदा हो रही है कि सरकार का कुप्रबंधन है। सरकार का प्रबंधन ठीक नहीं है। कोई देखने वाला नहीं है, कोई पूछने वाला नहीं है। इसलिए पता नहीं यह किसमें लगे हैं, यह जानकारी नहीं है। लेकिन खाद और बीज की तरफ किसी का ध्यान नहीं है। माननीय मुख्यमंत्री जी स्वयं किसान हैं, कृषि मंत्री जी किसान हैं। किसान पीड़ित मत हों, किसान ठीक रहें, किसान खुशहाल रहें, किसान को तकलीफ मत हो, इसलिए खाद और बीज के प्रबंधन को ठीक करें। किसानों की समस्या को दूर करें। यही मैं इस स्थगन प्रस्ताव के माध्यम से माननीय मुख्यमंत्री जी से आग्रह करूंगा, इस सरकार से निवेदन करूंगा। माननीय सभापति महोदय, आपने बोलने के लिए समय दिया, उसके लिए धन्यवाद।

श्री बृहस्पत सिंह (रामानुजगंज) :- माननीय सभापति महोदय, आज हम लोग विपक्ष के स्थगन प्रस्ताव की चर्चा में भाग ले रहे हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- आज आपकी आवाज कुछ दबी-दबी है।

सभापति महोदय :- बृहस्पत सिंह जी, आप अपनी विषय में बात कहिये।

श्री बृहस्पत सिंह :- माननीय सभापति महोदय, यह मुझे भरे सदन में बार-बार छेड़ते हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- पुनर्गठन जरूर होगा। पंजाब, राजस्थान हो गया, अब छत्तीसगढ़ में आने वाले हैं। आपका नाम ऊपर में है।

श्री बृहस्पत सिंह :- माननीय सभापति महोदय, इनको बोलने की बीमारी हो गई है।

सभापति महोदय :- चलिये, आप तो अपनी बात कहिये।



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री शिवरतन शर्मा :- बृहस्पत सिंह जी, आपको डरने की जरूरत नहीं है। पूरा सदन आपके साथ है।

श्री बृहस्पत सिंह :- माननीय सभापति महोदय, आज हम लोग कृषि प्रधान देश के कृषि प्रधान राज्य की बात कर रहे हैं। जिस राज्य के किसानों के बारे में हमारे विपक्ष के साथियों ने चिंता की और हम लोगों ने भी इसमें चिंता की है। हाय रे मंहगाई, गजब हो गई मंहगाई, हम लोग 55 रुपये लीटर डीजल खरीदते थे, आज वह 100 रुपये प्रति लीटर से ऊपर पार हो गया है। यह हमारे विपक्ष के साथियों के नेता मोदी जी की कृपा है। हाय रे मंहगाई 65 रुपये प्रति लीटर में डीजल और पेट्रोल हम खरीदते थे, उसका उसका पेट्रोल और डीजल का रेट 100 रुपये से ऊपर पार हो गया है, अब डर लगता है कि आधा लीटर या एक पाव पेट्रोल, डीजल भरवायें। गजब हो गया यह खाद की मंहगाई जिसको हम लोग 600 रुपये बोरी खरीदते थे, उसका रेट आज 1500 रुपये बोरी पहुंच गया है। इतना हीं नहीं किया, छत्तीसगढ़ के साथ ऐसा सौतेला व्यवहार कि 40 प्रतिशत काट दिया। किसको खाद दें, किसको बांट दें या किसका बाद में नंबर लगायें, यह हालात हो गये हैं। गजब की हो गई है यह मंहगाई, 40 प्रतिशत की कटौती कर कर दी। मैं विपक्ष के साथियों से चाहता हूं कि आप मोदी जी को चिट्ठी लिखिये। उनसे डरिये मत। आप मत डरिये, आपकी सी.आर. खराब नहीं होगी। किसानों की बात है, छततीसगढ़ कृषि प्रधान राज्य है। उनके हित में दलगत भावना से ऊपर उठकर के किसानों की लड़ाई लड़िये। चन्द्राकर जी, आप बहुत लोकप्रिय नेता हैं। मैं आपको सलाम करता हूं।

माननीय सभापति महोदय, जहां तक पर्याप्त बारदाने की बात है। आपने देखा होगा बारदाने की इतना ज्यादा दिक्कत थी कि छत्तीसगढ़ सरकार और किसानों को मिलकर ऐसी व्यवस्था बनानी पड़ी कि जो हमारे प्लास्टिक बोरा खाली हुए थे, उससे भी धान खरीदी करनी पड़ी। सब लोग कह-कह कर हार गये, चौबे जी, चिट्ठी-चिटठी लिख-लिख कर के थक गये। सारे समाचार पत्रों ने खूब छापा, लेकिन इनकी दिल्ली में जो बहरी सरकार बैठी है, वह किसानों की आवाज को सुनने के लिए तैयार नहीं हुई। यह इनकी सरकार है। मैं राजीव गांधी किसान न्याय योजना की बात बता रहा हूं। छत्तीसगढ़ सरकार को किसान न्याय योजना क्यों लागू करनी पड़ी ? जब छत्तीसगढ़ में भूपेश बघेल जी की सरकार बनी तो उन्होंने सबसे पहले कर्ज माफी की बात कही थी।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय सभापति जी, इसको विलोपित किया जाये की दिल्ली की सरकार बहरी सरकार है। यह असंसदीय है।

श्री बृहस्पत सिंह :- नहीं सुनने वाले को क्या बोलेंगे ?

श्री नारायण चंदेल :- संसदीय भाषा का उपयोग करिये।

श्री बृहस्पत सिंह :- अनसुना सरकार बोलूं। चलिये अनसुना सरकार कर लीजिए। माननीय चन्द्राकर जी की नहीं सुनने वाली मोदी सरकार। राजीव गांधी किसान न्याय योजना हम लोगों को नई



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

योजना छत्तीसगढ़ में क्यों लेकर आनी पड़ी? छत्तसीगढ़ की भूपेश बघेल जी सरकार 2500 रुपये क्विंटल देने का वादा किया था, उसके पहले हमारे 15 साल सरकार में रहे हमारे पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह जी सदन में हैं। आपने कहा था कि 2100 रुपये क्विंटल में धान खरीदेंगे, 300 रुपये बोनस दिया। पूरे छत्तीसगढ़ के लोग आपके किये गये वादे को पूरा कराने के लिए चिल्लाते-चिल्लाते थक गये। पता नहीं आप लोग गंगा जल लेकर कसम खाये थे या नहीं खाये थे। आप अपने वादे को क्यों पूरा नहीं कर पाये, मुझे नहीं याद है। लेकिन 2100 रुपये के लिए इसी सदन में हम लोग वहां पर बैठते थे, चन्द्राकर साहब, हम लोग इसके लिए बहुत चिल्लाये, लेकिन आप लोगों ने हम लोगों की एक भी बात नहीं सुनी और न ही 300 रूपये बोनस दिया। अगर भूपेश बघेल जी की सरकार 2500 रूपये देने के लिए तय किया, उन्होंने पहले साल दिया भी है पता नहीं क्या तूफान हो गया, सारे लोग दिल्ली में मोदी जी के पास पहुंच गये, यह इस बात को लेकर पहुंच गये कि 2500 रूपये देने में सफल हो गये।

श्री अजय चन्द्राकर :- लेकिन बृहस्पत सिंह जी, आज तो दिन आपका है आप बधाई ले लीजिए। आप राष्ट्रीय स्तर के नेता हो गए हैं। मुख्यमंत्री जी को छोड़कर 18 विधायकों का समर्थन सिर्फ आप ही के पास है। इस हाऊस में और किसी के पास नहीं है। आप ही के पास है और आप राष्ट्रीय स्तर के नेता हो गए।

श्री बृहस्पत सिंह :- सर, आपको बता दूं।

सभापति महोदय :- बृहस्पत सिंह जी, आप अपनी बात संक्षेप में समाप्त करें।

श्री बृहस्पत सिंह :- सर, मैं वही बात बता रहा हूँ। लगातार छत्तीसगढ़ की सरकार ने, माननीय भूपेश बघेल जी की सरकार ने, माननीय रविन्द्र चौबे जी की सरकार ने आपकी सरकार ने 2500 रूपये के लिए पहला साल उन्होंने भी दिया और दूसरे साल जो उन्होने जो देने की कोशिश की, ऊपर से चिट्ठी आ जाती है।

सभापति महोदय :- कृपया समाप्त करें।

श्री बृहस्पत सिंह :- सर,अगर 1800 रूपये से अधिक धान लोगे तो हम आपका एक दाना नहीं खरीदेंगे, पैसा नहीं देंगे। इसलिए सरकार को किसान न्याय योजना के माध्यम से 2500 रूपये क्विंटल, दूसरे किसान न्याय योजना के माध्यम से घुमाकर देना पड़ा।

सभापति महोदय :- कृपया समाप्त करें।

श्री बृहस्पत सिंह :- सर प्लीज। किसानों की बात है। आप थोड़ा सा मौका दीजिए।

सभापति महोदय :- कृपया समाप्त करें। समय की पाबंदी है।

श्री बृहस्पत सिंह :- सर, मैं उसी बात को बोल रहा हूँ। साहब इन्होंने चावल में रोक लगायी। बार-बार जो दूसरी बात आ रही है तीन कानूनों की बात तो पूरा देश देख रहा है। हम बहुत संक्षेप में कह देते हैं। इन्होंने किसानों की आय दुगुनी करने में जो खेल किया और बार-बार कम्पोस्ट खाद की बात


अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

होती है। हमारे देश का पहला विकसित राज्य कृषि प्रधान राज्य रहा है वह पंजाब और हरियाणा रहा है। वहां सबसे पहले लोगों ने रासायनिक खाद का उपयोग किया। कीटनाशक दवा का उपयोग किया, वहां हालात इतनी ज्यादा खराब हो गई कि आज वहां इतने ज्यादा कैंसर पीड़ित हो रहे हैं कि वहां की सरकारों को स्पेशल ट्रेन चलाकर बॉम्बे भेजना पड़ रहा है। इसलिए हमारे राज्य के नेताओं ने, हमारे राज्य की सरकारों ने आप लोगों ने तय किया कि जो गोबर का खाद बनेगा वह आर्गेनिक खाद बनेगा, जिससे हमें कोई नुकसान नहीं होगा।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय सभापति महोदय, जी उनको बोलने दिया जाए क्योंकि आज के [4][XX] वही है।

श्री बृहस्पत सिंह :- साहब, आज की जो बीमारी होगी, आने वाली पीढ़ी सुरक्षित रहे। निरोग रहे, स्वस्थ रहे, हम लोगों ने यह कोशिश की है। इसलिए आप गुगल में सर्च करके देख लीजिए हिन्दुस्तान ही नहीं, पूरी दुनिया में कहीं भी गोबर का खाद या गोबर नहीं बिकता। पहले जो किसानों की गोबर की लड़ाई होती थी कि मेरी तरफ गोबर क्यों फेंक दिये ?आज इस बात की लड़ाई होगी कि मेरा गोबर क्यों उठा लिये। मेरे गाय, खेत का गोबर क्यों उठा लिये। आज इस बात की लड़ाई हो रही है। यहां छत्तीसगढ़ की सरकार में गोबर खरीदी बिक्री हो रही है। उनके बारे में सोचिए जिनके पास पैसे नहीं होते थे। आज गोबर के माध्यम से उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हो रहा है। छत्तीसगढ़ की सरकार ने बहुत ही सराहनीय काम किया है।

सभापति महोदय :- कृपया समाप्त करें।

श्री बृहस्पत सिंह :- माननीय सभापति महोदय, अगर 2500 रूपये क्विंटल देने में, इनको सरकार दे रही है इसके लिए अगर इनको पेट में दर्द हो रहा है अगर खाद में 40 प्रतिशत कटौती हो गई, इसके लिए बोल नहीं पा रहे हैं, आपने राज्य के लिए मांग नहीं पा रहे हैं तो इनको मुबारक हो। मैं तो यही कहूंगा कि छत्तीसगढ़ कृषि प्रधान राज्य है और इस कृषि प्रधान राज्य के लिए आपने माननीय चन्द्राकर जी बहुत अच्छा प्रस्ताव लाया है। लेकिन थोड़ा सा दो कदम और आगे बढ़िए, हिम्मत जुटाईये ताकि दिल्ली ने जो किसानों का 40 प्रतिशत खाद काट कर रखा है। किसानों को धान का पैसा रोका गया है जो हमारा चावल नहीं खरीदा गया और हमारे धान खराब हो रहे हैं उसके उठाव की व्यवस्था करेंगे हमारी यही अपेक्षा है। माननीय सभापति महोदय, आपने मुझे बोलने का मौका दिया, उसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद्।

श्री शिवरतन शर्मा (भाटापारा) :- माननीय सभापति महोदय, प्रदेश का किसान परेशान है। परेशानी का कारण यह है कि न किसान को समय पर बीज मिला, न किसान को समय पर खाद मिल रही है और न ही किसान को आवश्यकता अनुसार बीज मिल पा रही है।

---

[4] [XX] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय सभापति महोदय, इनको भी बोलने दिया जाए क्योंकि आज के ढेड़हा यही हैं।

श्री शिवरतन शर्मा:- माननीय सभापति महोदय, सत्तापक्ष के जितने वक्ता खड़े हुए।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय चौबे जी, इन्होंने क्या कहा है, आपने सुना है या नहीं सुना है। आपने इनकी बात पर ध्यान नहीं दिया। उन्होंने कहा कि वह आज के [5][XX] है और ये आज के ढेड़हा हैं।

श्री शिवरतन शर्मा:- माननीय सभापति महोदय, सत्तापक्ष के जितने वक्ता खड़े हुए उनने स्थगन के मूल विषय को कम छुआ और सरकार का गुणगान करते रहे कि हमने किसान का कर्ज मुक्त किया। किसान को 2500 रूपये धान की कीमत दी। ये 2500 रूपये की कीमत के नाम पर किसान की कर्जा माफी के नाम पर इस सरकार ने छत्तीसगढ़ के किसानों को ठगने का काम किया है। सरकार की ओर से कोई भी खड़ा होता है तो बोलता है कि हमने 10 हजार करोड़ रूपये का कर्ज माफ कर दिया है। आज ही मेरे प्रश्न के उत्तर में जवाब आया है कि सरकार ने 8 हजार 743 करोड़ रूपये का कर्ज माफ किया है और इसके एवज में जो बैंक को भुगतान हुआ है वह भुगतान हुआ है 8 हजार 159 करोड़ रूपये का भुगतान हुआ है तो पहला तो यह जो 10 हजार करोड़ रूपये का बार-बार दावा करते थे, ये खुद स्वीकार कर रहे हैं कि कर्ज उससे कम माफ हुआ है । दूसरा विषय, इन्होंने अपने प्रश्न के उत्तर में कहा कि हमने अल्पकालीन ऋण किसानों का था वह पूरा माफ कर दिया। माननीय सभापति जी, 17 लाख 98 हजार 983 किसानों का कर्ज माफ हुआ है और उसमें 2 लाख 70 हजार 482 किसान ऐसे हैं जिन्होंने वाणिज्यिक बैंक से लोन लिया है। मैं चुनौतीपूर्वक बोलता हूं, यह 2 लाख 70 हजार 482 किसान ऐसे किसान हैं जिनका पूरा अल्पकालीन ऋण माफ यह सरकार नहीं की, मुश्किल से 50 प्रतिशत ऋण माफ हुआ और 50 प्रतिशत किसानों को पैसा पटाना पड़ रहा है। कर्ज माफी के नाम पर छत्तीसगढ़ के किसानों को अगर धोखा देने की बात किसी ने की तो इस सरकार ने की। अपने जन घोषणा पत्र के विपरीत जाकर काम किया। माननीय सभापति जी, दूसरी बात बोलते हैं कि हम 2500 रूपये क्विंटल में धान की खरीदी कर रहे हैं। आप हिसाब लगाकर देख लें कि अगर छत्तीसगढ़ का किसान हिसाब लगायेगा, ये चार किस्तों में जो 2500 रूपये राजीव गांधी किसान न्याय योजना के नाम पर बोनस का पैसा दे रहे है, 2100 रूपये से ऊपर की कीमत किसान को नहीं पड़ती। 2100 रूपये की कीमत इसलिए नहीं पड़ती, इन्होंने चौथी किस्त पिछली बार दी, उसमें 50 रूपये प्रति एकड़ कांटा गया। माने एक एकड़ में अगर 15 क्विंटल बेचता है तो 50 रूपये प्रति क्विंटल कांटा गया, 750 रूपये की कटिंग हो गयी। माननीय सभापति जी, जब हमारी सरकार थी तो छत्तीसगढ़ में धान खरीदी कभी 1 नवंबर को कभी 15 नंवबर को होती थी। अभी धान ख्रीदी 1 दिसंबर को शुरू होती है। हमारे यहां जो ज्यादातर किसान धान बोते हैं, पहले एक समय था कि हमारे यहां लेट वैरायटी का माई धान किसान बोते थे। पर आज की

[5] [XX] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकला गया।

तारीख में हम छत्तीसगढ़ के किसी भी गांव में चले जाएं तो किसान माई धान के रूप में सरना बोता है, ज्यादातर किसान महामाया धान, आई.आर. 36 बोता है, आई.आर. 36 और महामाया तो ऐसा है कि अक्टूबर के महीने में कट जाता है, पीसा जाता है और सरना जैसा धान भी 15 नवंबर तक कट जाता है। माननीय सभापति जी, 1 दिसंबर से धान खरीदी शुरू करने से किसान को धान मिंजकर एक महीना घर में रखना पड़ता है और 31 अक्टूबर का कटा मींजा धान वह बेचने के लिए 15 दिसंबर के आस-पास जाता है तो जो दो किलो की सूखद एक डेड़ महीने के अंदर आती है, उसका भार भी किसान के ऊपर पड़ता है। वह दो किलो की सूखद भी जोड़ेंगे तो वह भी 750 रूपये होती है।

कृषि मंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- शिवरतन जी, अभी जब इधर बोल रहे थे तो आपने कहा कि खाद और बीज का स्थगन है, आप लोग कर्ज माफी से कहां-कहां बोल रहे हैं करके बोल रहे थे। आप धान के दो किलो सूखद तक आ गये। जो 2500 रूपये दे रहे हैं उसका हिसाब कर रहे हैं। हिसाब-किताब में जो पहली पंक्ति में बृजमोहन जी बैठे हैं ना वे लोग होशियार हैं। आपका हिसाब किताब थोड़ा गड़बड़ है। तारीख नोट कर लेना। यह वर्षाकालीन सत्र है, शीतकालीन सत्र जब एक दिसंबर आयेगा ना तो किसानों को 2500 रूपये मिल रहा है या उससे ज्यादा मिल रहा है, उसको आपको यहीं बैठकर बोलना पड़ेगा। आपका हिसाब गलत हो रहा है।

श्री शिवरतन शर्मा :- अभी तो मैं हिसाब आपको बता रहा हूं। मैं आपको चुनौतीपूर्वक बोलता हूं कि यह हिसाब अगर गलत होती है तो आप मेरे हिसाब को गलत सिद्ध कर देना। दूसरी बात आपने स्थगन के विषय की बात की, मैं इस बात को इसलिए कह रहा हूं कि आपके पक्ष के जितने वक्ता बोलने के लिए खड़े हुए तो आपके वक्ताओं का 2500 रूपये खाली ऋण मुक्ति के ऊपर ही बात थी। मैं इसलिए इस बात का जवाब दे रहा हूं। माननीय सभापति जी, इस साल एक नया नाटक शुरू हो गया। किसान धान बेचेगा तो अपना बारदाना खरीद कर लाए और बारदाना खरीद कर लेकर आएगा तो उसके बदले 15 रूपये वापस किया जाएगा। अब वह 15 रूपये किसान को अभी तक नहीं मिला। किसान ने जो बारदाना खरीदा वह बारदाना 30 से 35 रूपये में खरीदा। एक एकड़ में 15 क्विंटल धान बेचने के लिए किसान को 35 बारदाना खरीदना पड़ा तो बारदाना खरीदने में किसान को लगभग सवा पांच सौ रूपये का नुकसान हुआ।

श्री कवासी लखमा :- शिवरतन जी, दिल्ली से क्यों नहीं मांगा। कभी दिल्ली को लेटर लिखे हैं क्या ? दिल्ली से बारदाना नहीं मिलने के कारण हम लोगों ने ऐसा किया है। उस समय क्यों गये थे ?

सभापति महोदय :- मंत्री जी आप बैठिए।

श्री शिवरतन शर्मा :- सभापति महोदय, किसान को लगभग सवा पांच सौ रूपये का नुकसान सिर्फ बारदाना खरीदने में हुआ। सरकार ने एक नया नाटक शुरू किया। वह नाटक क्या किया, बोले कि किसान के खेत की गिरदावरी होगी और जब गिरदावरी होगी तो किसान जो धान की खेती करता है

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

उसके मेड़ और पार को काटा जाएगा। अब मैं आपसे पूछता हूं, क्या मेड़ और पार के बिना किसान धान की खेती कर सकता है और किसान का उस नाम पर 10 प्रतिशत रकबा कम कर दिया गया? जो किसान 15 क्विंटल धान 1 एकड़ में बेचता, 10 परसेंट रकबा कम होने से वह साढ़े 13 क्विंटल उसने बेचा और डेढ़ क्विंटल धान को उसको 1300-1400 रूपये में बेचना पड़ा । वह भी एकड़ में किसान को नुकसान रकबा कटने के कारण हुआ है और एक समय ऐसा था कि डॉ. रमन सिंह जी के पीरियड में किसान ब्यारा तैयार नहीं करता था, हार्वेस्टर से धान लुआता था, वहीं तालपत्री में उसाता था और सीधे उपार्जन केंद्र में बेचने ले जाता था । आज किसान को ब्यारा तैयार करना पड़ रहा है । आज किसान को डेढ़ महीने धान की रखवाली करनी पड़ रही है और उसमें भी जो खर्च आ रहा है वह सारे खर्च को यदि जोड़ेंगे तो किसान को 2100 रूपये कम की कीमत मिल रही है यह 2500 रूपये के नाम से किसानों को धोखा देने का काम कर रहे हैं, किसानों को ठगने का काम कर रहे हैं ।

सभापति महोदय :- कृपया संक्षेप करने का कष्ट करें ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय सभापति महोदय, अब आज का मूल विषय खाद-बीज है । बहुत से वक्ताओं ने विषय रखा है और जहां तक मुझे नियमों की जानकारी है कि सेंट्रल जो भी खाद देता है, उसमें यह अपेक्षा रहती है कि 60 परसेंट खाद गवर्नमेंट के पास जाये, सहकारी समितियों के माध्यम से जाये, वल लॉक, डबल लॉक में जाये और 40 परसेंट प्राईवेट क्षेत्र में जाये लेकिन आज क्या स्थिति है, ठीक उल्टी स्थिति है । 60 परसेंट खाद निजी क्षेत्र में गई और 40 परसेंट गवर्नमेंट के क्षेत्र में गई और उसका दुष्परिणाम किसानों को यह भोगना पड़ रहा है कि जब किसान को डीएपी की जरूरत पड़ी, जब किसान को डीएपी की जरूरत पड़ी, जब किसान को यूरिया की जरूरत पड़ी, जब किसान को पोटाश की जरूरत पड़ी तो सहकारी समितियों में खाद नहीं था और किसान को निजी क्षेत्रों में जाकर के डबल कीमत पर खाद खरीदनी पड़ी । यदि निजी क्षेत्रों में यह खाद गयी तो इसके लिये कौन जिम्मेदार है और इसके लिये क्या कार्यवाही करेंगे । माननीय कृषि मंत्री जी, इसकी जानकारी दे देंगे कि इसके लिये जिम्मेदार लोगों पर आप क्या कार्यवाही करेंगे । दूसरा विषय बीज के अमानक होने का है । छत्तीसगढ़ में सरकार बनने के बाद लगातार बीज अमानक हो रहे हैं और मेरी विधानसभा में तो कांग्रेस के जिला पदाधिकारी का बीज अमानक मिला । एग्रीकल्चर विभाग के सारे लोगों ने स्वीकार किया कि बीज की गड़बड़ी के कारण फसल खराब हुई लेकिन एक पैसे का मुआवजा नहीं मिला लेकिन अभी क्या स्थिति है । हमारे छत्तीसगढ़ में किसान जब लईहरा बोता है और धान को पानी में भिगोता है तो जो धान ऊफल जाता है उसको हम हटाकर अलग कर देते हैं पर सर्टिफाई बीज अगर पानी में डाला जाये और सर्टिफाई बीज का 25 परसेंट धान ऊल जाये तो माना जायेगा न कि वह बीज खराब है लेकिन आपके अधिकारी क्या कहते हैं कि तैरता हुआ धान अमानक हो यह जरूरी नही है । यह आपके बीज निगम के

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अधिकारी कह रहे हैं, जबकि गांव का सामान्य किसान भी यह जानता है कि अगर धान पानी में तैर गया तो वह बीज के योग्य नहीं है लेकिन आपके विभाग के अधिकारी लोगों को गुमराह कर रहे हैं ।

सभापति महोदय :- कृपया समाप्त करें ।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय सभापति महोदय, मैंने तो अभी मूल विषय बोलना तो शुरू ही किया है । केवल ऐसी स्थिति नहीं है । आपके निर्देशन में बहुत सी कंपनियां एसी चल रही हैं, जो निजी क्षेत्रों में किसानों को अलग-अलग धान बोने के लिये आमंत्रित करते हैं और धान का बीज बेकार मिलता है, किसान को नुकसान उठाना पडता है लेकिन सरकार न तो उसके ऊपर कार्यवाही करती है और न ही उनको मुआवजा दिया जाता है, यह कोरबा जिला की घटना है । जिला मुख्यालय से महज 15 किलोमीटर दूर ग्राम पंचायत बेंदरकोना में आदिवासी बाहुल्य गांव में नर-नारी धान लगाया गया और धान में अंकुरण तो हुआ पर बाली नहीं आई और आदिवासी किसानों को नुकसान उठाना पड़ा और कोई कार्यवाही नहीं हुई । माननीय सभापति महोदय, सरकार के संरक्षण में नकली खाद का विक्रय चल रहा है । सरकार के संरक्षण में बीज निगम के माध्यम से अमानक बीज बांटे जा रहे हैं, किसानों को बिजली की आवश्यकता है लेकिन बिजली पर्याप्त नहीं मिल रही है । आज छत्तीसगढ़ में वर्षा कम हुई है, रोपा और बयासी का समय है, किसान 24 घंटे अपने पंप चलाना चाहता है लेकिन स्थिति यह है कि 6 से 7 घंटे बिजली की कटौती हो रही है जिसके चलते किसान अपने धान की खेती नहीं कर पा रहा है और स्वयं माननीय मंत्री जी ने अपने उत्तर में स्वीकार किया है ।

समय :
5:30 बजे

**<u>सदन को सूचना</u>**

सभापति महोदय :- स्थगन प्रस्ताव पर चर्चा पूर्ण होने तक सभा के समय में वृद्धि की जाये। मैं समझता हूं कि सभा इससे सहमत है।

**(सभा द्वारा सहमति प्रदान की गयी)**

सभापति महोदय :- शिवरतन जी, समाप्त करें। मोहन मरकाम जी।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय सभापति जी, एक मिनट। माननीय सभापति जी, माननीय मंत्री जी ने अपने उत्तर में एक बात कही है। 42,250 क्विंटल तिलहनी फसलों के बीज की मांग के विरूद्ध 8091 क्विंटल बीज उपलब्ध है। मतलब 20 प्रतिशत। जितनी आवश्यकता थी, उसका 20 प्रतिशत बीज उपलब्ध है, यह मंत्री जी अपने उत्तर में स्वीकार कर रहे हैं और अजय जी ने जिस बात का जिक्र किया, मंत्री जी ने अपने उत्तर के अंतिम लाइन में लिखा है, खरीफ फसलों के बोनी का कार्य जारी है, अत: यह कथन सही नहीं है कि खाद बीज की कमी के कारण बुआई का कार्य शेष है।

सभापति महोदय :- चलिए, समाप्त करिए। मोहन मरकाम ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री शिवरतन शर्मा :- छत्तीसगढ़ में 15 जून के बाद धान की बुआई शुरू होती है और समय पर पानी गिरता है तो रोपा और बियासी का काम अंतिम चरण में होता और उस समय माननीय मंत्री जी कह रहे हैं कि बुआई का कार्य जारी है और खाद की कमी के कारण बुआई का काम नहीं रूका। पूरी तरह से छत्तीसगढ़ के किसानों को धोखा देने में यह सरकार लगी हुई है। माननीय सभापति जी, यह सरकार किसान विरोधी सरकार है और किसान ने एक बार धोखा खाया है। किसान एक बार ठगा गया है और जब जरूरत पड़ेगी तो किसान इसका बदला आपसे जरूर लेगा।

श्री मोहन मरकाम (कोण्डागांव) :- माननीय सभापति महोदय, विपक्ष के सम्मानतीय साथियों द्वारा काम रोको प्रस्ताव के माध्यम से खाद बीज की समस्या पर स्थगन (काम रोको प्रस्ताव) लाया है और हमारी सरकार ने सहृदय से..।

श्री अजय चन्द्राकर :- मोहन मरकाम जी, मेरे मन में एक छोटी सी उत्सुकता है। मोहन मरकाम जी। एक मिनट तो आप सुनिए। बस, एक मिनट। आप अध्यक्ष हैं।

श्री मोहन मरकाम :- जी बोलिए।

श्री अजय चन्द्राकर :- क्या है बृहस्पत सिंह जी पूरे विश्व में आज चर्चित नाम है। आज छत्तीसगढ़ की राजनीति पूरे देश में है। आप प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष हैं। यह घटना सच है, गलत है, क्या है, आप क्या कर रहे हैं, हम लोग भी राजनीतिक क्षेत्र में काम कर रहे हैं तो आपके स्टेप को जानना चाहते हैं कि आप क्या किये? क्या आप कोई अनुशासनात्मक कार्यवाही करेंगे या क्या करेंगे या निपट गया, माफी मांग लिया, क्या-क्या कुछ है, आप बताइए।

श्री केशव प्रसाद चन्द्रा :- नहीं, अंदर की बात को आपको क्यों बताएंगे?

श्री मोहन मरकाम :- माननीय सभापति महोदय, माननीय विपक्ष के सम्मानित साथियों द्वारा काम रोको प्रस्ताव के माध्यम से खाद बीज की समस्या को लेकर इस सदन में स्थगन लाया गया है, मैं सरकार को धन्यवाद देना चाहता हूं कि किसानों के प्रति वह कितनी गंभीर है और इस पर चर्चा के लिए सदन में लाया गया। मैं आसंदी को धन्यवाद देता हूं कि आपने स्वीकार किया। भारतीय जनता पार्टी की छत्तीसगढ़ की प्रभारी डी. पुरंदेश्वरी जी कहती हैं कि छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री किसान होना हमारे लिए बहुत बड़ी चुनौती है। हमारी सरकार की प्राथमिकता में किसान है और खेती-किसानी है। भारतीय जनता पार्टी 15 साल तक सरकार में रही। अगर किसान इनकी प्राथमिकता में होती तो यह स्थिति निर्मित नहीं होती।

समय :
5.33 बजे **(अध्यक्ष महोदय (डॉ. चरणदास महंत) पीठासीन हुए)**

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

माननीय अध्यक्ष महोदय, खेती किसानी के अतिरिक्त हमारी सरकार का निर्णय स्वागत योग्य है। अगर किसान अपने खेत में फसल नहीं उगाता या खेत फसल योग्य नहीं है। अगर उसमें पेड़ पौधा लगाता है तो भी हमारी सरकार 10 हजार रूपया प्रति एकड़ 3 वर्षों तक देगी, यह ऐतिहासिक निर्णय है।

श्री केशव प्रसाद चन्द्रा :- अउ धान के ला 9 हजार कर दे हो।

श्री मोहन मरकाम :- माननीय अध्यक्ष जी, छत्तीसगढ़ को लगभग 11 लाख 75 हजार मीट्रिक टन खरीफ सीजन में फर्टिलाइजर की आवश्यकता होती है। उसकी एवज में केन्द्र सरकार ने मात्र 6 लाख 61 हजार मीट्रिक टन फर्टिलाइजर छत्तीसगढ़ को उपलब्ध कराया है। मतलब 56 प्रतिशत ही। खाद बीज की कमी के अगर कुछ जगहों में हालात बने हैं तो इसके लिए सिर्फ और सिर्फ केन्द्र में बैठी भारतीय जनता पार्टी की सरकार जिम्मेदार है। अगर समय पर हमारी मांग के अनुसार 11 लाख 75 हजार मीट्रिक टन फर्टिलाइजर उपलब्ध होता तो हर किसानों को खाद बीज की समस्या का सामना नहीं करना पड़ता। माननीय अध्यक्ष महोदय, आज कहीं न कहीं केन्द्रीय सरकार लगातार छत्तीसगढ़ के साथ भेदभाव कर रही है। हमारी सरकार ने प्रधानमंत्री से राज्य को 3 लाख मीट्रिक टन अतिरिक्त उर्वरक की मांग की गई है। उस पर भी केन्द्र सरकार का कोई जवाब नहीं आया है। मैं पूछना चाहता हूं माननीय डॉ. रमन सिंह जी, जो भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष हैं, भारतीय जनता पार्टी के 9 सांसद हैं। इन्होंने केन्द्र सरकार के पास कौन सी चिट्ठी लिखी है ? अगर छत्तीसगढ़ के किसानों के हितैषी है और प्रदेश में खाद बीज की कमी है तो आपकी पार्टी की सरकार केन्द्र में बैठी है आपको भी ध्यान देना चाहिए । अध्यक्ष महोदय, मोदी सरकार की छत्तीसगढ़ के किसानों के प्रति बदनीयती इसी से झलकती है कि छत्तीसगढ़ को केन्द्र से आवंटित खाद का मात्र 56 प्रतिशत ही अभी तक उपलब्ध कराया गया है । जबकि मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, गुजरात, पंजाब, हरियाणा जैसे राज्यों को मोदी सरकार ने वहां आवंटित कोटे का 90 प्रतिशत खाद उपलब्ध कराया है । मैं भारतीय जनता पार्टी के नेताओं से पूछना चाहता हूं । किस भाजपा सांसद या विधायक ने केन्द्र से छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा मांगे गए उर्वरक की आपूर्ति स्वीकृत कराने की पहल की है ? भारतीय जनता पार्टी का कोई सांसद या विधायक इस सदन में बता देगा कि आपने छत्तीसगढ़ के हितों के लिए, छत्तीसगढ़ के किसानों के लिए क्या प्रयास किया ? क्या छत्तीसगढ़ के किसानों के हित के लिए भाजपा नेताओं का कोई नैतिक अधिकार नहीं बनता ? मैं भारतीय जनता पार्टी के नेताओं से आग्रह करना चाहता हूं, क्या उनके कार्यकर्ता गांव-गांव में जाकर अपने सांसदों की नाकामी बताएंगे, उनका घेराव करेंगे ? छत्तीसगढ़ की जनता ने ही 9 भारतीय जनता पार्टी के सांसदों को केन्द्र में भेजा है । भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता जिन सांसदों, विधायकों को अपने क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने के लिए भेजा है वे मोदी सरकार के सामने भीगी बिल्ली बनकर बैठे हैं, वे केन्द्र में छत्तीसगढ़ की कोई बात नहीं करते । भारतीय जनता पार्टी के नेताओं का चाल-चरित्र इसी से जाहिर होता है । उनके केन्द्रीय मंत्री किसानों को मवाली कहते हैं, किसानों को खालिस्तानी कहते हैं (शेम

Uncorrected and unedited/Not for Publication 

शेम की आवाज़) ये भारतीय जनता पार्टी के नेताओं का चाल-चरित्र है। किसानों के प्रति इनका नजरिया है । अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ राज्य को खाद की आपूर्ति कम होने पर भारतीय जनता पार्टी के किसी सांसद ने अपनी कोई बात रखी क्या ? मैं भारतीय जनता पार्टी के सम्मानित विधायकों से पूछना चाहता हूं कि इनको तो सिर्फ और सिर्फ राजनीति करना है । मैं सरकार के मुखिया को धन्यवाद् देता हूं।

अध्यक्ष महोदय :- आपको भी बहुत-बहुत धन्यवाद् । अब समाप्त करें ।

श्री मोहन मरकाम :- माननीय अध्यक्ष जी, अंतिम वक्ता हूं और अपने दल की बात कहने के लिए आपका संरक्षण चाहिए । अध्यक्ष जी, भारतीय जनता पार्टी किसानों के लिए घड़ियाली आंसू बहाते हैं । हमारे वक्ताओं ने विस्तार से कहा । हमारी सरकार ने किसानों के लिए इन ढाई वर्षों में कर्जा माफी से लेकर, आज ये रकबा घटने की बात करते हैं । आज इन ढाई वर्षों में रकबा भी बढ़ा है और धान बेचने के लिए किसानों की पंजीयन संख्या में भी 2 लाख की बढ़ोतरी हुई है । यह हमारी सरकार की नीति है । अध्यक्ष महोदय, राज्यों को यूरिया देना केन्द्र सरकार का काम है । पूरे देश में यूरिया की सप्लाई सही नहीं हो रही है, इसके पीछे केन्द्र की मोदी सरकार जिम्मेदार है । प्रधान मंत्री मोदी जी ने आकाशवाणी से प्रसारित मन की बात कार्यक्रम में कहा था कि उनकी सरकार आजादी की 75 वीं वर्षगांठ 2022 तक देश में यूरिया की कमी को आधा करने की दिशा में काम कर रही है । 2022 तक किसानों की आय दुगुना करने की बात कही थी । स्वामीनाथन कमेटी की रिपोर्ट लागू करने की बात कही थी । मगर आज इन 7 वर्षों में केन्द्र में बैठी सरकार ने स्वामीनाथन कमेटी की रिपोर्ट लागू करने की बात तो दूर आज कृषि के तीन काले कानून लाकर किसानों को बंधुवा मजदूर बनाने की ओर आगे बढ़ रही है । अध्यक्ष जी, बिना किसी वैकल्पिक व्यवस्था के केन्द्र सरकार ने राज्यों में किसानों की यूरिया सप्लाई का कोटा अघोषित रूप से कम करना शुरू कर दिया है ताकि मोदी द्वारा घोषित यूरिया की खपत कम करने का लक्ष्य 2022 तक पूरा कर सके । अगर केन्द्र सरकार सचमुच में किसानों का हित चाहती है तो खाद के दाम नहीं बढ़ाती । खाद के दाम बढ़ाकर कम किये गये तो हजारों करोड़ का लाभ खाद कंपनियों को पहुंचाया गया है । कीटनाशक दवाइयों की कीमतों में बेहताशा वृद्धि हो गई है । किसानों द्वारा उत्पादित अनाजों के समर्थन मूल्य में मात्र 1 प्रतिशत से 4 प्रतिशत की बढोत्तरी की गई है । मैंने स्वामीनाथन कमेटी की बात पहले ही कही थी, जो 50 प्रतिशत लाभ की बात जुमला निकली है । भारतीय जनता पार्टी छत्तीसगढ़ में 15 साल तक सरकार में रही, किसानों के साथ धोखाधड़ी ही की है । वर्ष 2022 तक किसानों की आय दोगुना करना तो दूर, तीन काले कृषि कानून लाकर देश के किसानों के साथ कुठाराघात किया है । खाद महंगी, डीजल महंगा, कीटनाशक दवाइयों को महंगी कर फसलों के उत्पादन लागत बढ़ा दी गई है । भाजपा और केन्द्र सरकार की भाजपा सरकार की प्राथमिकता में किसान नहीं, किसानों के साथ धोखाधड़ी है । जमीनी सच्चाई यह है कि केन्द्र सरकार लगातार किसान विरोधी नीतियां बना रही

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

है । आज डीजल के दाम आसमान छू रहे हैं । जब मनमोहन सिंह जी की यू.पी.ए. सरकार थी तो 2013-14 में 105.52 डालर प्रति बैरल कच्चे तेल के दाम थे ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, स्थगन प्रस्ताव खाद और बीज पर हो रही है, यह डीजल कहां से आ गया ? स्थगन प्रस्ताव के विषय पर बात होनी चाहिए ।

श्री मोहन मरकाम :- वहीं आज 2020-21 में 44.82 डालर कच्चे तेल के दाम हैं ।

श्री अजय चन्द्राकर :- मोहन मरकाम जी, उधर पीछे सबकी पेशी चल रही है, आप चले जाओ ।

अध्यक्ष महोदय :- आप बहक रहे हैं ।

श्री मोहन मरकाम :- 2014 में यू.पी.ए. सरकार थी तो 9.20 रूपये पेट्रोल में प्रति लीटर एक्साईज़ ड्यूटी था...

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- खाद-बीज के स्थगन प्रस्ताव पर चर्चा चल रही है, आप उसी में ही चर्चा करिए ।

श्री मोहन मरकाम :- मैं उसी में बात कर रहा हूं ।

श्री नारायण चंदेल :- चौबे जी आज उनको गलत कागज दे दिये हैं । कल वाले विषय का कागज दे दिये हैं ।

श्री अजय चन्द्राकर :- बड़े नेता आये हैं, उसके टैंशन में हैं इसलिए इधर-उधर की बात कर रहे हैं । वे कमरे में हैं, सुन रहे हैं ।

श्री मोहन मरकाम :- 9.20 रूपये पेट्रोल में प्रति लीटर था, वहीं आज 32.90 रूपये प्रति लीटर एक्साईज़ ड्यूटी है । जब डॉ. मनमोहन सिंह जी की सरकार थी तो 3.46 रूपये प्रति लीटर डीजल में एक्साईज़ ड्यूटी थी और आज मोदी सरकार में 31.35 रूपये प्रति लीटर डीजल में एक्साईज़ ड्यूटी है । मतलब डीजल में 820 प्रतिशत बढ़ोत्तरी हुई है और खेती-किसान में 20 हजार रूपए प्रति एकड़ बढ़ी है ।

श्री नारायण चंदेल :- अध्यक्ष जी, पूरा चोचो-बोरो कर डरथे ।

श्री मोहन मरकाम :- इसका मतलब यह है कि कहीं न कहीं भारतीय जनता पार्टी के लोग घड़ियाली आंसू बहा रहे हैं । आज इनका चेहरा छत्तीसगढ़ की जनता के सामने, देश के सामने उजागर हो गया । हमारी सरकार की नीतियां, योजनाओं के लिए माननीय भूपेश बघेल जी की सरकार है । आप चिन्ता कर रहे हो तो हमारे मुख्यमंत्री जी किसान हैं । अगर आज आपके प्रदेश प्रभारी चिन्ता कर रही हैं तो हमारी सरकार की नीतियां किसानों के हित में है । अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का मौका दिया, उसके लिए धन्यवाद ।

श्री कवासी लखमा :- हमारे प्रदेश अध्यक्ष डीजल पेट्रोल के बारे में बोल रहे हैं तो आप लोगों के पेट में दर्द क्यों हो रहा है ?

श्री सौरभ सिंह :- आप जो मॉल उपलब्ध करवा रहे हो वह पिक-अप नहीं ले रहा है ।



अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आप जो दस्तावेज उपलब्ध करवा रहे हो, वह सब नकली मॉल है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- दादी, यह गंभीर विषय है । नारायण चंदेल जी ने कहा है कि पी रहे हैं, लेकिन पिक-अप नहीं ले रहा है । आप उसको ठीक करवाईए । यह बीज-खाद को छोड़िए, पिक-अप ठीक करवाईए ।

श्री सौरभ सिंह :- आपके विभाग का मामला है, पिक-अप नहीं ले रहा है ।

श्री नारायण चंदेल :- दो-तीन चीज नकली मिल रहा है । नकली खाद, नकली बीज और नकली मद्य विभाग ।

श्री केशव प्रसाद चंद्रा (जैजैपुर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, किसान मन ले संबंधित विषय हे और अभी खरीफ फसल के महत्वपूर्ण समय हे । अगर ए समय मा बीज अउ खाद किसान मन ला नहीं मिलही तो निश्चित रूप से उत्पाद ह प्रभावित होही।

श्री अजय चन्द्राकर :- खरीफ फसल हाथी के कारण भी नुकसान हो रहा है, उसको भी भाषण में जोड़कर बोलना ।

श्री केशव प्रसाद चंद्रा :- दू ठन ध्रुव ह बोलिस हे, जोन 15 साल सरकार में राज करे हे, ते मन अउ अभी ढाई साल तक बइठे हे, ते मन । मैं तीसरा ध्रुव हव । खाद के कमी ला सब स्वीकार करिन हे । लेकिन जिम्मेदारी कोई नहीं लीन । ए सरकार बईठे हे 70 ठन सीट के वाहवाही लूटथे ते मन ऊपर के सरकार ला दोष देवथे अउ ऊपर के सरकार वाला मन ए सरकार ला दोष देवथें । माननीय अध्यक्ष महोदय, किसान के का गलती हे ? किसान मन ला तो खेती करे बर खातू चाही अऊ ओ मन इ मन ला चुने हावय। चुने हे तो खातू ला लाय, दिल्ली से लड़ाई करके लाही, फैक्ट्री ले लाही, कहां ले लाही, लेकिन किसान मन ला देवय, माननीय कृषि मंत्री, हमर ये कहना हावय। आप अरोप लगाव कि हम चिट्ठी लिखे हन, आवंटन नइ होइस, ऐसे बोल के आप अपन जवाबदारी अऊ जिम्मेदारी ले नइ बच सका, किसान आप ला माफ नइ कर सकय। आप सब चीज स्वीकार करके हावा, खाद के कमी ला स्वीकार करे हा, अमानक बीज हे, स्वीकार करे हा, अमानक खातू हे कहकर स्वीकार करे हा, काहेकि आपके जो परीक्षण हे ओमा अमानक खाद और बीज आय हावय। ऐसे परिस्थिति में केवल हम किसान के हितैषी हन, कहके वाहवाही लूटिहा, तो नइ बनय। अब खातू के कमी काबर हे ? जिला के कलेक्टर ला चिट्ठी लिखथन के खातू के कमी हे, खातू दे दे, तो कहथे कि उपर ल आही तो देबो। उपर ले कहां से आही ? कहां आसमान ले आही ? कहां पानी गिरत हे, तेखर जगह मा खातू टपकही का ? कोई न कोई तो माध्यम हे, कहां ले खातू आही ? कल तक कहां से खातू आत रहिस, परसो कहां ले खातू आत रहिस ? कोई न कोई तो माध्यम हे, लेकिन आप किसान मन ला खातू देय पर सही प्रयास नहीं करत हावा।

श्री अजय चन्द्राकर :- जो गोबर बीने के योजना हे, तो तै हा हाथी के लीद बीने के योजना के मांग कर, कुछ न कुछ खातू आही।

श्री केशव चन्द्रा :- माननीय चन्द्राकर जी, ये हा कुछु मजाक के विषय नइ हे, किसान कतका पीड़ित हे, आप आकड़ा मा बात करथा, आप कभी व्यवहारिक रूप से बात नइ करा। आज किसान एक-एक बोरा डी.ए.पी. बर रात-रात भर समिति के सामने खड़ हे, बोआई के समय आ गय हे, रोप लागत हावय, खुर्रा बोय हे तेमा खातू छीचे के समय आ गय हे अउ किसान समिति मा लाइन मा खड़े हावय। ओ मन ला खातू नइ मिलत हावय। लेकिन आप जाने के कोशिश नइ करा कि काबर खातू नइ मिलत हे। जतका खातू आत हावय, सामान्य रूप ये 60:40 के रेशियो हे।

श्री रामकुमार यादव :- चन्द्रा जी, चन्द्राकर जी के चलही तो ओ भालू के ला भी बिनवा देही।

श्री केशव चन्द्रा:- 60:40 के रेशियो मा आवंटन होथे। आप ला 60 प्रतिशत समिति ला देना हे, 40 प्रतिशत व्यापारी ला देना हे। लेकिन आपके आकड़ा उल्टा हे। आप 60 प्रतिशत व्यापारी ला देवत हा अउ 40 प्रतिशत समिति ला देवत हा, व्यापारी के गोदाम मा खातू भरे हे अउ फायदा उठात हावय। 1200 रूपया के डी.ए.पी. ला 2000 रूपया मा बेचत हावय अउ आपके समिति मा खातू नइ हे। प्रदेश के बाकी समिति के का हाल हे, मैं जानव, लेकिन जांजगीर-चांपा मा आप परिसीमन करके समिति के संख्या ला बढ़ा दे हा, लेकिन ओखर लिमिट कतका करे हा ? 9 लाख रूपया करे हावा। 9 लाख के लिमिट मा ओ अगर डी.डी. बनाही , परमिट काटही तो एक ट्रक डी.ए.पी. अउ एक ट्रक यूरिया आही। अउ यूरिया नइ आत हावय, डी.ए.पी. आ जात हे तो बांटत नइ बनत हावय, अगर डी.ए.पी. आ गय, यूरिया नइ आत हे तो बांटत नइ बनत हे, परमिट के समायोजन नइ होत हे, तेखर कारण अगला गाड़ी के डी.डी. अउ वारंट नइ काट पावत हे।

श्री शिवरतन शर्मा :- आज ये हालत माननीय विधानसभा अध्यक्ष के गृह जिला के, तो बाकी प्रदेश के का हाल होही, तेला अंदाज लगा लव।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, उनको जल्दी बोलने दीजिये।

डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी :- तै तो ये बता डीजल अउ गोलवा के रेट कतका हे ?

श्री केशव चन्द्रा :- तो आप लिमिट ला बढ़ावा। दूसर चीज, ये डबल लॉक ले समिति तक जाय के व्यवस्था ठीक नइ हे। कतका कन डबल लॉक हे अउ कतका कन डबल लाक के स्थिति का हावय ? समिति डी.डी.आर.ओ. देथे, मार्कफेड के अधिकारी मन कहथे कि डबल लॉक से खातू ला ले जाय के जवाबदारी अउ जिम्मेदारी समिति के हे। एक भी समिति परिवहन के ठेका नइ करय, बल्कि वो बैंक हा अगर हमर जिला में हो तो बिलासपुर बैंक हा ओखर ठेका करथे कि प्रति किलोमीटर कतकाकन किराया देना हे, अउ सेटिंग मा वो ठेकेदार तय हो जाथे अउ ओ मन मौका के फायदा उठा के जे समिति मा ले जाना रहथे, ओ समिति मा ले जाथे। आपके दर भी कतका हे ? माननीय मंत्री जी, आप ला बतात हव, परिवहन के दर कतका हे ? जतक का समिति हा खातू ला बेचके कमीशन नइ कमाय, तेखर तीन गुना परिवहन के खर्चा दे बर लागथे। जब एक व्यापारी खातू लेथे, तब ओखर गोदाम तक एफ.ओ.आर.

कम्पनी हा पहुंचाकर ओ खातू ला देथे। लेकिन आज हमन समिति ले खरीदत हन। मार्कफेड करा ले डी.डी. देकर खरीदत हन। तो हमर समिति मा ओ एफ.ओ.आर. हा काबर पहुंचा के नइ देय करय। एफ.ओ. आर. पहुंचाही तो निश्चित रूप से समिति ला लाभ होही। आप आंकलन कर लेहा, एक साल के खातू बेचे मा एक-एक समिति ला चार से पांच लाख  रूपया के नुकसान होवत हावय। समिति कैसे चलही । जे समिति के बात करथन, किसान के रीड़ के हड्डी कहाथन, वो समिति आज कंगाल होवथे, कर्मचारी मन ला तन्ख्वाह नई दे पावथे, आप धान बेचथव, धान खरीदथव, धान ला उठावत नई हव, वोखर कमी ला वो समिति हा झेलथे ।

अध्यक्ष महोदय :- बहुत-बहुत धन्यवाद ।

श्री अजय चन्द्राकर :- सही है, यह वस्तुस्थिति ।

अध्यक्ष महोदय :- ज्यादा लम्बा कर देथव । लम्बा झन करव ।

श्री केशव प्रसाद चन्द्रा :- अध्यक्ष महोदय,किसान मन के पीड़ा  ला देखे हावन । लाईन लगाय हे, खातू बर तरसथे, कतको झन व्यापारी मन करा ले, ब्याज में लेवथे । अऊ वो बात ला सदन में नई रखबों, मंत्री जी कैसे समझहि, सरकार कइसे समझही । एमन तो वाहवाही लूटेम मगन हे । 2500 रूपया में धान ला लेथन अऊ कर्जा माफ करे हन कहिके । कर्जा माफ करे हव, 2500 रूपया क्विंटल में ले थव, जान ल टोंर देथव, खातू नई पाही, धान नई होही, कर्जा माफ अऊ 25 सौ रूपये के का फायदा हे । 15 साल तक तुमन काय करेव, 15 साल तक तुमन फलाना करेव, तुमन ढेकाना करव ना, अच्छा काम करव । किसान तुमन ला चुने हे तव । ऐमन खराब काम करे हे तेला तुमन सुधारव । किसान मन ला खातू मिलय । किसान मन ला बढ़िया बीजहा मिलय । किसान मन ला वोखर लाभ मिलय । माननीय कृषि मंत्री जी मैं आपला निवेदन करथंव, आपके विभाग में जो दवाई अऊ खातू के सप्लाई होथे,
वोला थोड़िकन जांचव अऊ परखव । काबर कि साइपर 20 परशेंट, साइपर 10 पराशेंट म कीड़ा हा मर जाथे, साइपर 20 परशेंट में कीड़ा ला डुबाहू तो चमचम ले भाग जाथे। नई मरय । ऐसने दवई ला मत दव । किसान मन ला छिंचे के बुधियारी लागथे, वोमन अऊ मर जावथे । कम से कम 5 परशेंट के पुरता मरय । वोतके  ला मैंटेन कर लेवव । मोर आपले निवेदन हावय । खातू के कमी ला जल्दी से जल्दी पूरा करव, समिति  के लिमिट ला बढ़ावव । ताकि समिति में सही ढंग से  खातू जा सके। व्यापारी मन ला तो बिल्कुल देना बंद करव । आपके सरकार हे, आपके पावर हे, आप शतप्रतिशत खातू समिति ला दे सकथव । जब खातू के कमी होही, शतप्रतिशत खातू ला समिति मा दे सकथव । काबर व्यापारी ला देवथव । अभी अकलतरा में रेक लगे रहिसे । 60 परशेंट डीएपी ला व्यापारी मन ला दे दिन । लडत-लड़त थक गेन । कलेक्टर साहब कथे कि व्यापारी मन दे के निर्देश हे । 40 परशेंट समिति म दिन । ट्रांसपोर्टिंग के व्यवस्था नई हे, जल्दी उठाना हे । व्यवस्था आप ला बनाना हे, सरकार ला बनाना हे । किसान तक खाद आपला पहुंचाना हे । हमन तो नई काहथन भई कि हमर क्षेत्र मा, हम आने दल के

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

विधायक आन तव सरकार ला नई कहे सकन, केन्द्र के सरकार ला नई केहे सकन, हम तो किसान ला कथन, तुमन ला खातू ला नई दे पाबो, ए पद मा रहे के अधिकार नई ये । हमन रिजाईन देबर तैयार हवन । तुहू मन ए जवाबदारी लौ, सरकार में बइठे हावव । मोदी काय करथे, दिल्ली के सरकार खातू देवथे, नई देवथे, तुमन जो हे सरकार ला खातू देके काम करव । ये मोर निवेदन हे ।

समय :

5:52 बजे **(सभापति महोदय (श्री देवव्रत सिंह) पीठासीन हुये)**

श्री रामकुमार यादव :- गौटिया साहब, सही-सही बतावव । हमर सरकार में वोमन ज्यादा पैसा पाय हे कि नइ पाय हे ।

सभापति महोदय :- केशव जी, कृपया समाप्त करेंगे । माननीय नेता प्रतिपक्ष ।

श्री केशव प्रसाद चन्द्रा :- पैसा पाय, नई पाय, ये प्रश्न नई हे । तुंहला सरकार 70 सीट में चुनके भेजिस । बोरा के बात आही तो बोरा ला मोदी जी नई देवथे । तुमन काबर चुने हावव । रहान देवव तुमन काबर हव । बात आही खातू के तो मोदी जी नई देवथे । धान खरीदी के बात आही तो मोदी जी नई देवथे । घोषणा करत समय तो मोदी जी नई रहिसे । वो समय लिख देतेव, मोदी जी दिही त करबो। तुंहर ताकत म घोषणा करव । जनता तुंहर विश्वास कर लिस, तुमन ला चुन लिस, अब तो मोदी जी वाला शब्द नहीं आना चाहिये । जिम्मेदारी से नई मुकरना चाहिये ।खातू ला आपमन देवव । माननीय मंत्री जी, आपसे निवेदन हे, आग्रह हे, वास्तव में किसान पीड़ित हे । बहुत दुखी हावय । खातू के रेट ला जब केन्द्र सरकार बढ़ाईस, हम आप ला भी चिट्ठी लिखे रेहेन । मंत्री जी, खातू के रेट बाढ़ही तो किसान के कनिहा टूट जाही । आप हमर चिट्ठी के जवाब भी देव, हम केन्द्रीय मंत्री जी ला भी चिट्ठी लिखे रेहेन, वोखरो हमर करा जवाब आईस । हम सब्सीडी देवथन और खातू के जो रेट हे, वोहा यथास्थिति रही । वोखर बाद भी ज्यादा पैसा लेहव । हमर जांजगीर चांपा जिला में तो वह बाद में आये हे । डाक्टर साहब बताइन हे, ज्यादा पैसा ले हावव । कर्जा में तो लेहावव, समायोजन कर दव ना । एक दिन के बात तो हे । समायोजन कर देव काबर किसान मन ला भटकावथव ।

श्री रामकुमार यादव :- वोखर बात म मत फंसीहव । पेपर मे नइ मरे रहाय, वहु मरगे कथे किसान ला ।

सभापति महोदय :- केशव जी, कृपया समाप्त करें।

श्री केशव प्रसाद चन्द्रा :- माननीय सभापति महोदय, पुन: यही निवेदन के साथ बहुत अच्छा विषय मा आज सत्र के प्रथम दिवस किसान मन के समस्या ला ले करके स्थगन अईस। आप ग्राह्य करा। मंत्री जी भी ओमा चर्चा करवाये बर अपन सहमति दीन, एकर लिए मैं धनयवाद देत हवौं। जो भी कमी होईही, ओला सुधारा और खादू ला देवा। ऐसे सरकार करा निवेदन करते हुए बहुत-बहुत धन्यवाद।

नेता प्रतिपक्ष (श्री धरमलाल कौशिक) :- माननीय सभापति महोदय, यह प्रदेश किसानों का प्रदेश है और हमारे अन्नदाता किसान खाद और बीज की समस्या को ले करके प्रदेश की सड़कों में प्रदर्शन कर रहे हैं, जो सरकार की प्राथमिकता है। लेकिन इस सरकार की प्राथमिकता के बाद आखिर जो केन्द सरकार से आवंटन मिला और आवंटन मिलने के बाद में किसानों को उपलब्ध क्यों नहीं हो रहा है? उसका मुख्य कारण यह है कि इस सरकार की प्राथमिकता व्यापारी हैं, किसान नहीं हैं। यदि किसान इनकी प्राथमिकता होती तो 60 प्रतिशत खाद व्यापारी के गोदाम में नहीं जाती बल्कि 60 प्रतिशत खाद सहकारी समिति में जाती जहां से किसान खाद ले करके अपने खेतों में डालते। हमारे अनेक सदस्यों ने बताया कि उनको यूरिया को किस रेट में खरीदना पड़ रहा है, 600 रुपये अतिरिक्त में खरीदना पड़ रहा है। डी.ए.पी. का 1200 रुपये की सब्सिडी आने के बाद में, 1200 रुपये के बाद में 1800 रुपये सरकार के द्वारा लिया जा रहा है। व्यापारी लाल हो रहे हैं, किसान दुबला रहे हैं। वास्तविक में इसका मुख्य कारण है कि यह परिस्थिति अचानक नहीं आई है। जब यह सरकार को मालूम है कि खाद, बीज की कितनी आवश्यकता पड़ेगी, उसके बाद में रकबा भी कम हुआ है। लेकिन रकबा कम होने के बाद में आखिर यह स्थिति क्यों आ पड़ी है? इसका सरकार की लापरवाही है। माननीय रविन्द्र चौबे जी हमारे कृषि मंत्री हैं, कृषि मंत्री होने के बाद में मुझे ऐसा लगता है कि बीज निगम है। डॉ. रमन सिंह जी जब मुख्यमंत्री थे, जब यहां पर बीज निगम की स्थापना हुई। बीज निगम की स्थापना के बाद में यहां पर हमारे बहुत सारे प्रक्रिया केन्द्र हैं। चौबे जी, जगदलपुर, अंबिकापुर, रायगढ़ से ले करके हर हिले में लगभग आपका सेंटर है। उस समय हम लोगों ने प्रयास किया था कि जो किसानों की बीज की आवश्यकता है, उसका उत्पादन वहां पर हो। उसकी प्रापर निगरानी हो, मानीटरिंग हो। वहां से बीज निकले और बीज निकलने के बाद में हम किसानों तक बीज पहुंचायें। दूसरी बात जो हाईब्रिड बीज है, हाईब्रिड बीज का उत्पादन भी हमारे बीज निगम के द्वारा प्रक्रिया क्षेत्र में लिया गया। लेकिन कांग्रेस की सरकार की जो प्राथमिकता है, वह प्राइवेट व्यापारी हैं। मैं चौबे जी से कहना चाहूंगा कि आज बाहर के कंपनी वाले यहां पर आ करके बीज का उत्पादन कर रहे हैं। हाईब्रिड बीज का उत्पादन करने के बाद में वह दूसरे प्रदेशों में सप्लाई कर रहे हैं। जमीनों का यहां उपयोग कर रहे हैं और सप्लाई दूसरे प्रदेशों में कर रहे हैं। क्या हमारे जो बीज प्रक्रिया केन्द्र हैं, उसका उपयोग हम नहीं कर सकते? अपने किसानों के लिए हमारी जो आवश्यकता है, हम उसको बीज क्यों नहीं दे सकते? प्राइवेट व्यापारी के ऊपर आपका जो संरक्षण है, उस संरक्षण को कम करें और अपने उत्पादन क्षमता को बढ़ायें। अपनी अपनी उत्पादन क्षमता बढ़ायेंगे तो किसानों का भला होगा। व्यापारी तो आ रहे हैं और आ करके कमा करके यहां से जा रहे हैं, लेकिन किसानों को उससे कोई फायदा नहीं होने वाला है। इसलिए बीज के मामले में कम से कम हम आत्मनिर्भर बनें।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

माननीय सभापति महोदय, हम सामान्यत: धान के मामले में यह कह सकते हैं कि हम बीज उत्पादक किसानों के माध्यम से जो हमारी आवश्यकता है, वह बीज हम दे सकते हैं। लेकिन जब हम तिलहन, दलहन, सोयाबीन में आयेंगे तो आज भी हमारी स्थिति नहीं है कि हम यहां के किसानों की पूर्ति कर सकें। आज भी हमको दूसरे प्रदेशों के ऊपर आश्रित रहना है। वहां से बीज ला करके के चाहे हमारा रबी का हो, खरीफ का हो, यदि उनकी आवश्यकता है तो हमको दूसरे के ऊपर निर्भर रहने की आवश्यकता है। यह जो स्थिति है । एक तरफ तो हम यह कहते हैं कि हमारा कृषि प्रधान प्रदेश है और जब हमारी बीज की आवश्यकता पड़ती है तो हमारी इतनी अच्छी जमीन है, हमारे इतने अच्छे किसान हैं लेकिन जब उनकी आवश्यकता पड़ती है तो आखिर हम दूसरे प्रदेशों के ऊपर कब तक निर्भर रहेंगे। इस बात के ऊपर काम करने की आवश्यकता है। जैसे हम धान के ऊपर अब दूसरे के ऊपर आश्रित नहीं हैं, यदि हम हायब्रिड को छोड़ दें तो बाकी जिंसों में भी हम इस प्रदेश को सक्षम कैसे बना सकें, उसके लिए जब तक हम अपने किसान को प्रेरित नहीं करेंगे, अपने किसान को प्रोत्साहित नहीं करेंगे तब तक यह संभव नहीं होगा और जो मुख्य मामला आ रहा है कि आपका बीज अमानक है। उसके पीछे जो सबसे बड़ा कारण है वह आपकी मॉनिटरिंग नहीं है। यदि आपके उत्पादन केन्द्र में बीज हो, उसका सर्टीफिकेशन हो, आप जाकर प्रॉपर देखें तो आपके बीज का अंकुरण ठीक होगा। लेकिन आप जिस प्रकार से बीज ले रहे हैं तो जिस खेत में बीज का उत्पादन हो रहा है, उसकी मॉनिटरिंग पता नहीं कौन से अधिकारी कर रहे हैं ? हमारे यहां स्वर्णा का बीज गया था स्वर्णा के बीज में अन्य धान मिक्स है, मिला हुआ है न उसको प्रयोगशाला में भेज रहे हैं न उसकी टेस्टिंग करा रहे हैं जो भी बीज आये, पता नहीं, अधिकारी क्या देख रहे हैं और सीधा किसानों के पास में भेज दिये और भेज देने का जो परिणाम हो रहा है कि आज किसानों के पास जो अमानक बीज जा रहा है जो बीज की शुद्धता है आखिर सामान्य धान जो हम बेचते हैं उससे ज्यादा रेट में बीज उत्पादक किसान से हम लेते हैं और जब किसानों को देते हैं तो बीज निगम के द्वारा सामान्य धान से ज्यादा रेट में उनको देते हैं। यह देने के बाद में उसकी शुद्धता क्यों नहीं है ? इसके लिए जवाबदार कौन है ? आप उन अधिकारियों के खिलाफ में कार्यवाही करेंगे? कि आपके बीज निगम के लोग बिलासपुर गये थे, आप आने वाले समय में उनसे बात करेंगे। उसमें जो दूसरे धान हैं वह लगभग 20 प्रतिशत, 30 प्रतिशत की मात्रा है तो 30 प्रतिशत की मात्रा के बाद में आप उनसे ज्यादा रेट ले रहे हैं तो आप किस आधार पर ले रहे हैं ? आप उनके ऊपर कार्यवाही क्यों नहीं कर रहे हैं ? उनके ऊपर यह कार्यवाही होनी चाहिए। लेकिन आपकी यह कार्यवाही नहीं हो रही है।

कृषि मंत्री (श्री रविन्द्र चौबे ) :- माननीय नेता प्रतिपक्ष जी, आप किसानों की चिंता कर रहे हैं और सदन में शिकायत भी कर रहे हैं कि 30 प्रतिशत तक, मैं फिर से आपसे कह रहा हूँ कि आप सोसायटी का भी नाम बता दीजिए, जहां ये बीज 30 प्रतिशत तक अमानक, अगर दूसरे बीज मिले हुए हैं उसका भी बता दीजिए। वैसे हमारे किसान समझदार होते हैं । अगर 30 प्रतिशत तक उस तरीके से

मिक्स होगा तो वह बीज नहीं डालेगा। उसके बावजूद भी कहीं सप्लाई हुई होगी तो आप उसकी बिल्कुल चिंता मत करिए। आप बता दीजिए, उसके खिलाफ भी कार्यवाही करेंगे।

श्री अजय चन्द्राकर :- साहब, आपने तो सरेंडर कर दिया था कि हर युग में यह लोग मौजूद हैं मैं क्या कर सकता हूँ। पिछली बार आपने यही कहा था युगों युगों तक यही लोग हैं यही रहेंगे, मैं क्या कर सकता हूँ। अभी आप कह रहे हैं कि मैं कार्यवाही करूंगा।

श्री शिवरतन शर्मा:- माननीय कृषि मंत्री जी, मैं एक सोसायटी का नाम बता देता हूँ। भाटापारा ब्लॉक में पाटन सोसायटी है। वहां गलत बीज दिया गया, किसानों ने बाद में शिकायत की और फिर किसानों का बीज बदला गया। किसानों को बीज बदलकर मिल गया। जिन्होंने यह कार्य किया था, उसके ऊपर क्या कार्यवाही हुई, क्या कार्यवाही हुई ? सवाल गलत बीज देने वाले के ऊपर में कार्यवाही की बात कर रहा हूँ।

श्री रविन्द्र चौबे :- यह तो प्रक्रिया है। किसान के खेत में ठीक बीज गया है, बदला गया है। आप ही खुद स्वीकार कर रहे हैं।

श्री शिवरतन शर्मा:- मैं बोल रहा हूँ। मेरी शिकायत के बाद में बीज बदला गया है।

श्री रविन्द्र चौबे :- लेकिन मैं फिर से कह रहा हूँ..।

श्री शिवरतन शर्मा:- पर मैं कह रहा हूँ कि आप गलत बीज देने वाले के ऊपर में कार्यवाही करेंगे या नहीं करेंगे ? ऐसे लोगों को सरकार का संरक्षण मिल रहा है।

श्री रविन्द्र चौबे :- मैं कह रहा हूँ। इसीलिए आदरणीय नेता प्रतिपक्ष जी से मैंने चाहा। मैं उसके खिलाफ भी कार्यवाही करूंगा। लेकिन किसानों को सही बीज मिलना चाहिए, उसके लिए सरकार प्रतिबद्ध है।

श्री शिवरतन शर्मा:- आपको मैंने अपने भाषण में एक जिक्र किया था हमारे यहां पौंसरी सोसायटी है। उस सोसायटी में आप शैली भाटिया को जानते होंगे। पिछली बार 100 किसानों को गलत बीज मिला। आधे धान में बाली आकर झुक चुकी थी बाली और आधा धान गभोट की स्थिति में था। शिकायत हुई, आपके विभाग के अधिकारी गये उनने कहा कि बीज अमानक था, गलत था उसके चलते यह स्थिति निर्मित हुई है पर न किसान को मुआवजा मिला, न आज तक किसी के ऊपर कार्यवाही हुई। यह सब विषय में विधान सभा में बोल चुका हूँ।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय चौबे जी, मैं तो आपको इसलिए सलाह दे रहा हूँ कि आप खुद किसान हैं और आपके बीज निगम के पास इतनी जमीनें हैं और हमारे किसान भी हैं जो उत्पादक किसान हैं लेकिन उसके रहने के बाद भी आखिर अमानक बीज क्यों आ रही है। जो अमानक बीज आ रही है, उसका भुगतान आखिर किसान को भुगतना पड़ रहा है। हमें आवश्यकता मालूम है, पिछले साल का भी मालूम है, पहले का भी मालूम है, आपके जो सभी प्रकार के धान हैं, जिंक राईस है, आर्गेनिक


अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

राईस है, सुगंधित धान है और बाकी जो धान है। आपकी मांग 9 लाख 81 हजार 930 क्विंटल की रही, 6 लाख 81, 584 क्विंटल उपलब्ध कराई गयी और वितरण 5 लाख 05 हजार क्विंटल हुआ। आपका रकबा भी कम हो गया और रकबा कम होने के बाद भी आज हम सप्लाई करने की स्थिति में नहीं हैं। मुख्यमंत्री जी का एक नया प्राजेक्ट है कि धान के रकबा को कम करो, कोदो कुटकी और सोयाबिन, वानिकी पेड़ लगाओ बाकी चीजों को बढ़ाओ। हम उसका पैसा देंगे। सोयाबिन का जब समय आया तो सोयाबिन के बीज आपके पास उपलब्ध नहीं है। सोयाबिन के लिए आपकी जो मांग 38,999 क्विंटल आई थी उसके एवज में आपने 1,661 क्विंटल वितरण किया है। आप सोयाबिन को कैसे बढ़ायेंगे। आप किस आधार पर बढ़ायेंगे ? अब उसके बाद कोदो कुटकी की जो बात आई है, कोदो कुटकी की मांग 4,291 आई थी और आपने 653 क्विंटल दिया। एक तरफ आप धान का रकबा कम करके कोदो कुटकी को बढ़ाने की बात कर रहे हैं, दूसरी तरफ जब बढ़ाने की बात आती है तो आप बीज उपलब्ध नहीं करा पा रहे हैं, यह आपकी सरकार चल रही है। इस प्रकार से यदि हम पूरा देखें तो सोयाबिन की लगभग वहीं स्थिति रही है। हम यदि पूरा देखेंगे तो कुल मिलाकर आप 11 लाख के against में 5 लाख 19 हजार 161 क्विंटल सप्लाई कर पाए हैं। हम बीज के मामले में कहां पर खड़े हुए हैं। माननीय सभापति महोदय, जिस प्रकार से बड़ी-बड़ी बातें की जाती है और कई बार तो मैं मुख्यमंत्री जी को बोलता हूं कि जब आप नहीं कर सकते तो उस काम की क्यों बीड़ा उठाते हैं। एक बहुत बढ़िया उदाहरण रोका छेका अभियान का दे रहा हूं। इन्होंने रोका छेका अभियान लगाया केवल कागजों पर रहा। प्रेस वाले रोज फोटो खींच-खींचकर दिखाए, गौठान में तो एक भी गाय नहीं मिली। सड़कों में गाय बैठी रही। वैसी आप उत्पादन में चाहते हैं कि धान के बदले में बाकी को बढ़ावा दें तो उसकी तैयारी भी तो होनी चाहिए लेकिन उसकी तैयारी के बजाए केवल कागजों में बढ़ाने से आपका उत्पादन बढ़ने वाला नहीं है। इस प्रकार से बीज के मामले में सरकार को जितनी देनी चाहिए वह लगभग असफल रही है और असफल होने के कारण हमारे किसान को समय पर बीज नहीं मिला। आज बोनी करने से आज कुछ नहीं होगा। अब तो आपके खेतों में पानी भर गये हैं। 15 जून से सामान्यत: हमारी बुवाई का काम शुरू हो जाता है और 15 जून से बुवाई का काम शुरू होने के बाद में आज तो लगभग किसानों का रोपा लग गया है, केवल बिजली की समस्या और पानी के कारण में किसानों का रोपाई का काम बचा हुआ है। अभी बारिश होने के बाद में रोपा लगाने का काम शुरू हुआ। अब तक तो डी.ए.पी. के बाद यूरिया डालने का और सेकंड बार खाद डालने की स्थिति बन गयी है। यह हमारे बीज के मामले में सरकार की स्थिति रही है। खाद के मामले में क्या स्थिति है, आप सब लोग बोल रहे थे कि खाद की कमी नहीं है। मैं आपको बीजापुर से ले करके सरगुजा तक की स्थिति बता दूं। 15 साल में किसानों को खाद को ले करके एक भी बार चक्काजाम करने की नौबत नहीं आई। न यूरिया को ले करके, न डी.ए.पी. को ले करके, न किसी सुपर फास्फेड को ले करके यह स्थिति कभी नहीं बनी। आपको खाद के बारे में भी मालूम था कि हमको

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

कितनी आवश्यकता पड़ेगी। उसके अनुरूप आपको जो आबंटन मिला वह आपके सहकारी सोसायटी में जाने के बजाए आपने व्यापारियों के गोदाम में भरने का काम किया और व्यापारी आपकी प्राथमिकता में रही। इसके कारण किसान आज चक्काजाम कर रहे हैं। मैं आपको बताना चाहूंगा कि रायगढ़ में पुसौर, कोडातराई, पड़ईगांव, कोडपालिक, कोररा, जतरी में न डी.ए.पी है न यूरिया है। आप उसको नोट कर लीजिए। लोईंग जामगांव, लैलूंगा में टारपाली, बनसुरिया, बरमकेला में डोंगरीपाली, कालाकुण्डा, लेंदरा, बरमकेला, करनापाली, बीजापुर में इलमिडी, उसूर, कुदूर, कोतबा, गंगोर, चेनरपल्ली, धरोरा, बीजापुर भोपालकोटनम । नारायणपुर में एटका, नारायणपुर बिजलीओरछा, छोटडोंगर ।

उच्च शिक्षा मंत्री (श्री उमेश पटेल) :- माननीय नेता जी, चूंकि आपने 2-3 सोसायटियों के नाम बताये जो मेरे विधानासभा के अंतर्गत हैं और मैं इस सदन में इस बात को रखना चाहूंगा कि आपने जतरी का नाम लिया और कौन सा नाम लिया?

श्री धरमलाल कौशिक :- कोंडापाली-गोर्रा । आप पता करवा लीजिए ।

श्री उमेश पटेल :- अभी कुछ देर पहले मेरी बात हुई है, वहां पूरी तरीके से तीनों खाद वहां उपलब्ध है ।

श्री धरमलाल कौशिक :- नहीं है, मैंने कल ही बात की है ।

श्री उमेश पटेल :- चलिये, हम लोग साथ में चलते हैं ।

श्री धरमलाल कौशिक :- चल दूंगा । मुझे जाने में दिक्कत नहीं है । उसी प्रकार से आपके नारायणपुर में एटका नारायणपुर, बिजलीओरछा, छोटेडोंगर पूरे मतलब दंतेवाड़ा को छोड़ दो, जैविक जिला है ।

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- माननीय सभापति महोदय, डॉ. रमन सिंह जी का भाषण निकालकर देख लीजिये, उसी-उसी सोसायटियों का नाम लिये हैं । लगता है कि वही कॉपी इधर पहुंच गई है ।

वाणिज्यिक कर मंत्री (श्री कवासी लखमा) :- नकल किये हैं ।

श्री धरमलाल कौशिक :- इसमें नकल करने की आवश्यकता नहीं है । प्रदेश में जो खाद की समस्या है और प्रदेश में खाद की समस्या आपके राजनांदगांव से लेकर आपके कवर्धा तक, आपके दुर्ग से लेकर के बेमेतरा तक ।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय नेता जी, आप माननीय मुख्यमंत्री जी को यह बताईए कि जो कृषि मंत्री जी का उत्तर है उसको पढ़ लीजिये यदि नकल की बात करते हैं और कितनी कमी है, कितना सही है वह वस्तुस्थिति आपके उत्तर से पता लग जायेगी । वह तो आपकी स्वीकारोक्ति है । बहस की भी जरूरत नहीं है । वह तो प्रक्रिया है इसलिए बहस हो रही है । आपने तो पूरा स्वीकार कर लिया ।

कृषि मंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- हां, मैंने कहा न । मैंने स्वीकार किया है ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अजय चंद्राकर :- उत्तर आप माननीय मु ख्यमंत्री जी को दे दीजिएगा ।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय मुख्यमंत्री जी भी अवगत हैं और आपको भी अवगत कराया कि 11 लाख 75 हजार मीट्रिक टन की मांग थी, आवंटन था । आपने कहा न कि पहले स्ट्राइक क्यों नहीं हुआ तब दिल्ली में मनमोहन सिंह जी की सरकार थी । अभी आवंटन के विरूद्ध खाद क्यों नहीं मिल रहा है ?

श्री अजय चंद्राकर :- अभी आपने सुना न कि 90 परसेंट आवंटन हो गया है, आपने खंडन क्यों नहीं किया ?

श्री रविन्द्र चौबे :- मैं अभी उत्तर में बताता हूं न कि कौन सा 90 परसेंट आवंटन हुआ है करके । जो सच्चाई है वह आपके सामने है । हमने कहा न, हमने स्वीकार किया है कि हमको जो आवंटन हुआ, उसका 56 परसेंट हमको फर्टिलाईजर मिला है तो खाद की तो कमी रहेगी न, इसको हमने स्वीकार किया है लेकिन आप दिल्ली में क्यों नहीं बोलते कि आप छत्तीसगढ़ की उपेक्षा क्यों कर रहे हैं ? आप उत्तरप्रदेश में 90 परसेंट खाद देते हैं, मध्यप्रदेश में 86 परसेंट पार है और छत्तीसगढ़ में केवल 56 परसेंट खाद क्यों दिया जा रहा है, आप इसका कुछ उत्तर देंगे ।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय सभापति महोदय, हमने इस बात को कई बार उठाया है कि प्रदेश में जो आवश्यकता है, आपने कब दिया और उसके साथ में उसका एलोकेशन कितना हुआ ? आपने टुकड़े-टुकड़े में दिया, आपको यह मालूम है कि इतने खाद की आवश्यकता हमको पड़ेगी लेकिन आपने एक-बार में नहीं दिया और प्रदेशों से जो बुलाया जाता है, आपकी राष्ट्रीय स्तर से वर्चुअल बैठक होती है ।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय सभापति महोदय, मैं प्रधानमंत्री जी या केंद्र सरकार से मांग करता हूं और जो मुझे नहीं मिलता । मैं केवल जानकारी दे रहा हूं, आप उसमें परेशान क्यों होते हैं ? प्रधानमंत्री मेरे भी हैं, दिल्ली की सरकार हमारी भी है और राज्य और केंद्र के बीच में तय होता है, फर्टिलाईजर कंट्रोल का काम केंद्र सरकार का है, कितना आवंटन होता है, कब बैठक होती है, कितना जारी होता है यह सब प्रक्रिया है । प्रधानमंत्री जी के खिलाफ कोई बोल रहा है मतलब कोई शिकायत नहीं है । वे हमारे भी प्रधानमंत्री हैं लेकिन यहां के किसानों को फर्टिलाईजर चाहिए इसलिए हमने कहा, हमने तो यहां के सांसदों को भी चिट्ठी लिखी । माननीय केंद्रीय कृषि मंत्री जी को भी चिट्ठी लिखी, आपसे भी अनुरोध किया था कि आप दिल्ली में जाकर के थोड़ा सा तो आवंटन हमारा ठीक करवा दीजिये ।

श्री शिवरतन शर्मा :- आवंटन तो वहां से आ गया, निजी क्षेत्र को कितना जायेगा और गवर्नमेंट के क्षेत्र को कितना रहेगा, यह तय करने का अधिकार तो आपके पास है । इसमें आपने जो गड़बड़ी की है वह भी बता दीजिये ।

श्री रविन्द्र चौबे :- हां, मैं वह भी बता देता हूं ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री शिवरतन शर्मा :- जो 60 परसेंट गवर्नमेंट को जाना था । (व्यवधान) आपने निजी क्षेत्र को दिया । (व्यवधान)

श्री रविन्द्र चौबे :- मैं वह भी बता देता हूं । आपके 15 सालों में किस-किस साल में कितना निजी को दिये ।

श्री शिवरतन शर्मा :- आप तो इस साल की बात कीजिए न । (व्यवधान)

श्री रविन्द्र चौबे :- मैं इस साल का भी बता देता हूं । (व्यवधान)

श्री अजय चंद्राकर :- आप सन् 1956 से बताईए, 15 सालों का नहीं, आप तो सन् 1956 से बताईए । मध्यप्रदेश बना है तब से बताईए ।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय चौबे जी, आप प्रधानमंत्री को पत्र लिख रहे हैं इससे हम नाराज नहीं हैं । आप प्रधानमंत्री से मांग करेंगे इससे हम नाराज नहीं हैं। यह सरकार की प्रक्रिया है कि पूरे देश के रासायनिक खाद को लेकर के जो बैठकें होती हैं, प्रदेश वहां पर अपने प्रस्ताव भेजते हैं और उसके आधार पर आवंटन होता है यह प्रक्रिया है उसके लिये हम क्यों नाराज होंगे ? मैंने तो उस समय भी कहा था कि हमारे लायक कोई जरूरत हो तो हम लोग भी बात करेंगे, लेकिन मैं यही तो जानना चाहता हूं कि आपको जब आवश्यकता थी तो आपने कब भेजा ? कितने का भेजा? आपको कब मिला और मिलने के बाद में आपने आवंटन को कहां से कहां बांट दिया? इसीलिए तो खाद की कमी पड़ रही है। हमें इसी बात की तो आपत्ति है। माननीय सभापति महोदय, जिस प्रकार से यहां पर मैंने कहा खाद का कृत्रिम अभाव, वास्तव में ठीक से जो पिछले साल का बचा हुआ खाद है और इस साल के जो मिले हुए खाद हैं, यदि उसका आवंटन ठीक से करते तो किसानों को दिक्कत नहीं आती। यह कृत्रिम अभाव है और कृत्रिम अभाव इस सरकार के कारण है। इनकी नीति के कारण है।

श्री अजय चन्द्राकर :- यह आपदा में अवसर है।

श्री धरमलाल कौशिक :- यह आपदा में अवसर है। माननीय सभापति महोदय, मुख्यमंत्री जी ने पिछली बार बिजली के बारे में घोषणा किया कि जितने भी पेडिंग हैं, उन सबको हम कनेक्शन दे देंगे। आज के ही प्रश्न में मुख्यमंत्री जी ने जवाब दिया है, 35,900 से ऊपर कनेक्शन जिनकी प्रक्रिया पूर्ण हो गयी है और वह लंबित है। लंबित क्यों है? क्योंकि उसके लिए साढ़े 3 सौ करोड़ चाहिए और इनके पास में डेढ़ सौ करोड़ पैसा है। तो मुख्यमंत्री जी, आप जब घोषणा किये हैं तो उसका बजट भी तो बनाये होंगे न और नहीं तो आपकी घोषणा ऐसे ही रह जायेगी। उसके बजाय आप घोषणा नहीं करेंगे तो ज्यादा अच्छा होगा और यदि घोषणा किये हैं तो किसानों को उम्मीद थी कि बरसात के पहले हमारे खेत में बिजली लग जायेगी, आज वे सब वंचित हो गये हैं।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अजय चन्द्राकर :- नेता जी, यह घोषणा बाहर में किसी पार्टी के सम्मेलन में नहीं विधान सभा में हुई है। यह बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह घोषणा विधान सभा में हुई थी कि हम उन्हें कनेक्शन देंगे।

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- माननीय सभापति महोदय, बजट मार्च में संक्शन हुआ और उसकी समय यह घोषणा हुई कि हम 32 हजार कनेक्शन देंगे। उसके लिए बजट का प्रावधान रखा गया और अप्रैल से लेकर लगातार लॉकडाउन रहा और यह फिल्ड वर्क करना है और इस कारण से रूका। अब बरसात आ गया है, लेकिन मैं यह कहना चाहूंगा कि सारे वर्क ऑर्डर हो चुके हैं। सारी प्रक्रिया पूरी हो चुकी है। बरसात खत्म होते ही सारे कनेक्शन देने का काम होगा और नवंबर के पहले तक सब हो जायेगा। (मेजों की थपथपाहट)

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय सभापति महोदय, यह सरकार पैसे के अभाव में किसानों को बिजली का कनेक्शन नहीं दे पा रही है।

श्री भूपेश बघेल :- पैसे का अभाव बिल्कुल नहीं है, लेकिन लॉकडाउन के कारण से यह परेशानी रही है।

श्री धरमलाल कौशिक :- आज के प्रश्न के जवाब में है, मैं आपको निकालकर दिखा देता हूं।

श्री भूपेश बघेल :- इसे सबको स्वीकार करना पड़ेगा। Factory बंद हैं, ट्रांसपोर्टिंग बंद है। वर्क नहीं कर सकते। लेबर भी नहीं है।

श्री धरमलाल कौशिक :- आपका जवाब है। या तो आप उसे देखे नहीं हैं। आप दस्तखत कर दिये होंगे। आज के प्रश्न के जवाब में है।

श्री भूपेश बघेल :- आप कहीं का कहीं पकड़ते हैं न। वह सब प्रक्रिया पूरी हो चुकी है।

श्री अजय चन्द्राकर :- नेता जी, कृषि मंत्री जी, आप जो पैसे की कमी नहीं है, बता रहे हैं न, दो साल से मुख्य बजट में सौ-सौ करोड़ रूपया है और 35 हजार रूपये बता रहे हैं। बताइए न उतने पैसे में हो जायेगा क्या नवंबर तक।

श्री रविन्द्र चौबे :- श्रीमान अजय चन्द्राकर जी, आप 15 साल इधर हुकूमत..।

श्री अजय चन्द्राकर :- फिर 15 साल आ गये। 35 हजार के लिए 2 साल में सौ-सौ करोड़ रूपये, इसमें बात करिए न। हम 15 साल तक कुछ नहीं किये, इसलिए आप वहां मंत्री बन गये, चलिए यह मान लीजिए। अभी आप 35 हजार को दो सौ करोड़ में कैसे करेंगे, यह बताइए।

श्री रविन्द्र चौबे :- मैं आपसे कह रहा था। बजट में टोकन एक रूपया भी रखा जाता है न तो पैसे का रिएलोकेशन करके काम संपादित कर दिया जाता है। आप जानते हैं। आप सरकार चलाये हैं। आप इस तरीके से प्रश्न करते हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- अच्छा। (हंसी)



अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय सभापति महोदय, जो विभागीय टीप है, आपने जवाब दिया है। वर्ष 2019-2020 में समर्थन मूल्य पर खरीदे गये 83.94 लाख टन धान में से कस्टम मिलिंग योग्य समस्त धान का उठाव उपार्जन केन्द्रों से किया जा चुका है। आप इसका मतलब समझाएंगे क्या ? कि कस्टम मिलिंग योग्य पिछली बार हम लोगों ने यह प्रश्न किया था कि वर्ष 2019-2020 की धान की खरीदी हो गई और वर्ष 2020-2021 के धान की खरीदी हो गई। तो वर्ष 2019-2020 की धान की जो खरीदी हुई। कितनी कस्टम मिलिंग हुआ, कितना नहीं हुआ और कितना अभी भी आपके स्टॉकिंग में पड़ा हुआ है ? मंत्री जी बताने में असफल रहे, इस बात को चौबे जी ने भी स्वीकार किया तो ऐसा कितना धान पड़ा हुआ है तो कस्टम मिलिंग के योग्य नहीं है और 2019-20 में सरकार को कितना घाटा हु

आ ? मैं अभी 2020-21 की बात नहीं कर रहा हूं, अभी आप उसको 1100 में 1200 में नीलामी कर लीजिए, उसके बाद बात करेंगे । लेकिन आप 2019-20 के धान को कब तक खींचेंगे ? एक दिन तो उसका हिसाब देने की आवश्यकता पड़ेगी ना। यदि आप हमें हिसाब न दें, लेकिन खुद को तो हिसाब की आवश्यकता पड़ेगी । लेकिन 2019-20 के धान की स्थिति यह है कि आज भी सड़ते पड़ा है, उसे उठाने के लिए व्यापारी तैयार नहीं है । गर्मी के समय कस्टम मिलिंग होनी चाहिए ।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय नेता जी, खाद बीज में आपके पास कुछ बोलने के लिए नहीं है तो इधर आ गए हैं क्या ? अब खाद बीज पर स्थगन में आ जाएं ।

श्री धरमलाल कौशिक :- ये किसान का मामला है और अन्न का मामला है । अब आपको धान सड़ाने में मजा आ रहा है तो मैं उसमें क्या बोल सकता हूं ? आप सड़ाइए धान । सभापति जी, धान सड़ने के बाद एथेनॉल बनेगा । इसलिए सरकार की भी मंशा है कि उसको सड़ने दिया जाए । कोई बात नहीं, सड़ने दिया जाए । 2019-20 में जो धान खरीदी हुई, आखिर उसका हिसाब आना चाहिए या नहीं आना चाहिए और सरकार क्यों नहीं कर पा रही है ? अभी भी सड़ रहा है, 2020-21 के धान का कस्टम मिलिंग नहीं हुआ । गर्मी के समय में कस्टम मिलिंग के लिए देना चाहिए तो मई जून के बाद धान भेजने के लिए प्रक्रिया करते हैं । बाकी कस्टम मिलिंग के समय पेंडिंग रहेगा । वास्तव में जिस प्रकार से आप धान की खरीदी कर रहे हैं और सरकार की नीति के कारण उसका वेस्टेज हो रहा है । मुझे तो ऐसा लगता है केवल सरकार की नीति के कारण इस बार 10 हजार से 12 हजार करोड़ के नुकसान में सरकार आएगी । आखिर यह अपव्यय क्यों ? यह सरकार का पैसा नहीं है, छत्तीसगढ़ के एक-एक गरीब का पैसा है । उनके पैसे का यदि इस प्रकार से अपव्यय किया जाएगा तो आखिर ये इस प्रदेश को कहां ले जाएंगे ? एक तरफ लगातार हमारा कर्जा बढ़ रहा है, मैं उस दिशा में बात नहीं करना चाहता लेकिन हम कैसे बचा सकें, इस बात की चिंता सरकार की प्राथमिकता नही है । चौबे जी, पूरे प्रदेश में आपके यहां से लेकर कोरबा, बालोद, जांजगीर-चांपा नरनारी धान के बारे में जो आया, प्रायवेट कंपनी आकर यहां एग्रीमेंट कर लिया और उसके बाद जिस प्रकार किसानों को धोखा दिया गया । वहां कुछ भुगतान हुआ

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

और उसके बाद मुझे नहीं मालूम कि चौबे जी ने किसानों को क्या आश्वासन दिया ? लेकिन यह बात कही गई कि अभी जो मिल रहा है ले लीजिए, आगे उनके ऊपर कार्रवाई करेंगे । आज किसान उसकी प्रतिक्षा कर रहे हैं । एक एकड़ में 40 हजार, 45 हजार की लागत लगी और 6600 रूपए क्विंटल में खरीदने की बात हुई । उस कंपनी के ऊपर एफ.आई.आर. कराने के लिए किसान आए लेकिन आज तक एफ.आई.आर. नहीं हुई है । उनके खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं हुई है । अब यह सरकार के संरक्षण में है, आपके संरक्षण में है या आपके बिना संरक्षण के वह कंपनी यहां पर काम कर रही है, यह तो आप ही बता सकते हैं लेकिन बहुत सारी प्रायवेट कंपनियां इसी प्रकार का धंधा करके किसानों को छलने का काम कर रही हैं । उनके शोषण से आज किसानों को बचाने की आवश्यकता है । माननीय सभापति महोदय, आज के इस महत्वपूर्ण विषय में मुख्य रूप से सरकार यह बताए कि वह किसानों को कब तक खाद उपलब्ध कराएगी और उपलब्ध कराने में जो विफलता रही है उसका मुख्य कारण है व्यापारियों के पास खाद का जाना । क्या मंत्री जी अधिकारियों पर कार्रवाई करेंगे और किसानों को सुनिश्चित करेंगे कि आगे खाद की कमी नहीं होगी और जो किसान धान के बीज के नाम से छले गए हैं उनकी जो भरपाई होनी चाहिए, उसकी व्यवस्था हो और ऐसी कंपनियों के खिलाफ आप एफ.आई.आर. दर्ज कराएंगे, मैं आपसे ऐसी मांग करता हूं । आज के इस महत्वपूर्ण विषय में हमारे सभी वक्ता बोलना चाह रहे थे, लेकिन समय की कमी के कारण में बोलने से वंचित रहे हैं । मैं तो चाहता था कि सत्ता पक्ष और प्रतिपक्ष, सबको बोलने का मौका मिलना चाहिए । यह एक ऐसा विषय है, जो जनहित से जुड़ा हुआ है, इस प्रदेश के किसानों से जुड़ा हुआ मुद्दा है । इसमें चर्चा होनी चाहिए । हम लोगों ने स्थगन के माध्यम से सदन में चर्चा के लिए यह विषय लाया है, सरकार की ओर से पक्ष रखी गई है, लेकिन इसके बाद भी मैं कहना चाहता हूं कि केवल हमारे चर्चा करने से नहीं होगा, वास्तव में इसका समाधान होना चाहिए, इसका रास्ता निकलना चाहिए, तभी किसानों को लाभ होगा । यह केवल चर्चा का विषय न रहे । सभापति जी, आपने बोलने का समय दिया, उसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं ।

कृषि मंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- आदरणीय सभापति जी, मैं आपके माध्यम से समूचे सदन को धन्यवाद देना चाहता हूं ।

समय :
6:26 बजे **(अध्यक्ष महोदय (डॉ. चरण दास महंत) पीठासीन हुए)**

श्री अजय चन्द्राकर :- अध्यक्ष महोदय, माननीय मंत्री जी, आप उत्तर दे रहे हैं तो एक जानकारी की पुष्टि करिए । मैंने आज या कल के पेपर में पढ़ा है कि आपके वर्मी कम्पोस्ट को अमेजान भी खरीद रही है, उसके माध्यम से बिक्री होगी । यह सच है या असत्य है, यह बताईएगा ।

अध्यक्ष महोदय :- अमेजान तो छेना को भी खरीद रही है । वे छेना भी बेचते हैं-कंडा ।

श्री रविन्द्र चौबे :- आपके ठीक सामने डा. साहब बैठे हैं, इसके बारे में आप उनसे पूछिएगा । यह राजनांदगांव का ही न्यूज़ है और वहां के नगर निगम का है, अमेजन, फ्लिपकार्ट में वहां का वर्मी कम्पोस्ट बिक रहा है । बहुत अच्छी जानकारी आपको डॉ. साहब से मिल जाएगी ।

श्री अजय चन्द्राकर :- मैंने तो आपसे जानकारी मांगी है ।

श्री रविन्द्र चौबे :- मैंने हां कहा न । अध्यक्ष महोदय, अरसे बाद स्थगन को ग्राहय करके किसानों के सामने जो ज्वलंत समस्या है, उसके बारे में दोनों पक्षों ने बहुत अच्छे सुझाव दिए, सकारात्मक बातें भी हुईं । कुछ शिकायतों का लहजा भी रहा, लेकिन उसको मैं रचनात्मक रूप से लेता हूं कि सरकार में रहकर अगर कोई कमियां हैं तो उसको दूर किया जाना चाहिए । मैं किसानों की चिन्ता करने के लिए सदन के सभी सदस्यों को हृदय से बहुत बधाई देता हूं और धन्यवाद देता हूं कि स्थगन प्रस्ताव में बहुत सामयिक चर्चा की गई । चूंकि स्थगन का मुद्दा है तो प्रतिपक्ष की ओर से कहा गया कि सड़कों में किसान आन्दोलनरत् हैं इसलिए इस विषय को लाया गया ।

माननीय अध्यक्ष जी, बारिश में लगभग 10-15 दिन लेट हो गई थी, हमारे सामने भी चिन्ता की बातें थीं और किसानों के माथे में भी चिन्ता की लकीरें थीं, लेकिन अब बारिश ठीक-ठाक होने से किसान खेतों में लग गए हैं । आन्दोलन करने वाले कौन हैं, यह आप भी जानते हैं, मैं भी जानता हूं । मैं उनके बारे में कुछ नहीं कहना चाहता, लेकिन बिन्दु अगर किसान है और केवल फर्टिलाईज़र और बीज के बारे में यहां चर्चा होनी थी, जो स्थगन का मुद्दा है तो उसमें कुछ बातें आपकी ओर से और इधर से आईं । दो विषय के अलावा इसमें दो विषय और जोड़ लिए गए । माननीय नेता प्रतिपक्ष जी ने, माननीय अजय जी, पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह जी ने विद्युतीकरण के पम्प कनेक्शन के लिए बजट की बातें कहीं कि बजट की राशि कम है और पेंडेंसी ज्यादा है । माननीय मुख्यमंत्री जी ने सदन में घोषणा की है और उन्होंने जो आंकड़े दिए हैं, उसमें पम्पों के विद्युतीकरण का काम चल रहा है। एक और प्रश्न इन सारे विषयों से जोड़ते हुए जो धान की खरीदी हुई, उसके बारे में उल्लेख किया कि कुल धान फड़ में पड़े हुए हैं, प्रायमरी सोसायटी में पड़े हुए हैं, वह खराब हो रहे हैं । वह आपके लिए भी चिन्ता का कारण है, हमारे लिए भी चिन्ता का कारण हैं और चिन्ता क्यों उत्पन्न हुई ? उसकी शुरूआत कहां से हुई, यह आप भी समझ रहे हैं । हमने 92 लाख मेट्रिक टन धान की खरीदी की है । आने वाले समय में उत्पादन भी बढ़ने वाला है । धान की खरीदी के आंकड़े भी बढ़ने वाले हैं और आने वाले समय में इसके निष्पादन के लिए हम लोगों को प्रयास करना होगा, लेकिन हर बार सदन में यह बात आपसे आग्रह के रूप में आदरणीय मुख्यमंत्री जी भी कहते हैं और हम भी कहते हैं । इसके लिए हम लोगों ने दो-तीन बिन्दुओं पर विचार किया है। हमने लगातार केन्द्र सरकार से मांग की है कि हमारे जो 6-6 एम.ओ.यू. हो गए हैं, 12 एम.ओ.यू. पाईन लाईन में है तो हमें एथेनॉल के प्लॉट लगाने की अनुमति दी जाये । इसको केन्द्र सरकार क्यों रोकती है ? केवल अनुमति तो देनी है । हमने तो जमीन भी नहीं मांगी । हमने अनुदान भी



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

नहीं मांगा, हमने पैसे भी नहीं मांगे, हम तो यह कह भी नहीं रहे हैं कि आपके धान या एफ.सी.आई. के चांवल को हम एथेनॉल बनाने वाले हैं । हम अपने बजट से, अपने पैसे से, अपनी धरती, अपनी किसानों की मेहनत के धान के निष्पादन के लिए काम करेंगे तो केन्द्र सरकार को सहमति देने में क्या एतराज हो सकता है ? अगर हम केन्द्र के बारे में कोई बात कहते हैं तो इसका कतई यह आशय नहीं है कि हम उनकी आलोचना करते हैं। राष्ट्र की सरकार है, हमारी भी सरकार है और उतना ही अधिकार हमारा है। आपको गलतफहमी हो जाती है कि आप उनके प्रतिनिधि के रूप में बैठे हैं। अगर हम केन्द्र की बात करते हैं तो आपको आलोचना जैसे शब्द लगने लगते है। हम देश की सरकार से मांग करते है और यह हमारा अधिकार है। हम जिस सदन में बैठे हैं, यह के पौने 3 करोड़ लोगों का प्रतिनिधित्व करने वाली संस्था है। इसलिए यहां हम जो बात करते हैं, वह केन्द्र सरकार तक परिलक्षित होता है। तो हम आज भी कहना चाहते हैं कि इन मामलों में हमारी मदद करिये। विपक्ष, प्रतिपक्ष का यह कतई मतलब नहीं है कि आप आलोचना कर देंगे और आप अपनी जिम्मेदारी से मुक्त हो जायेंगे। फर्टिलाइजर के बारे में बार-बार बात कही जा रही है। मैं तो भाई आदरणीय केशव चन्द्रा जी को धन्यवाद दूंगा कि इन्होंने 15 साल और इनके ढाई साल के बीच का कहा। यह चिंता किसानों की है, हमें किसानों की चिंता करनी चाहिए। जब खाद का आवंटन हुआ, तब तो हमको भरोसा था। आप लगातार तारीख पूछ रहे थे कि भारत सरकार से कब तय हुआ ? आदरणीय नेता प्रतिपक्ष जी, हमने वर्ष 2021 के लिए 11 लाख 75 हजार मीट्रिक टन का रिक्वायरमेंट भेजा। 25 फरवरी को भारत सरकार के सामने प्रस्तुति हुई, 2 मार्च को केन्द्र सरकार ने हमें इतने खाद के आवंटन की सहमति दी और हमारा अधिकार बनता है। हमने हमारी मांग को प्रस्तुत किया। केन्द्र सरकार ने सहमति दी। आप तारीख का उल्लेख करना चाहते थे। लेकिन हम खाद चाहते ही हैं, यह छत्तीसगढ़ धान का कटोरा है। हमको छत्तीसगढ़ में खाद की जरूरत अधिक है। अभी डी.ए.पी. की जरूरत थी। लगातार सभी वक्ताओं ने कह दिया, डॉ. रमन सिंह जी आप, कम से कम आप तो नहीं कहते। आप 15 साल तक हमारे मुख्यमंत्री रहे हैं। आपने कह दिया कि पूरा फर्टिलाइजर, 60 प्रतिशत से अधिक फर्टिलाइजर व्यापारियों को दे रहे हैं। मैं आपको आकड़ें बताना चाहता हूं। मैं आपके कार्यकाल के आकड़ें बताना चाहता हूं। सन् 2013 में आपने 51 प्रतिशत यूरिया निजी को दिया था और 49 प्रतिशत सहकारी क्षेत्र में दिया था। सन् 2014 में सिंगल सुपर फास्फेट 55 प्रतिशत निजी को दिया था और 45 प्रतिशत कोआपरेटिव को दिया था।

श्री अजय चन्द्राकर :- वह हमने दिया था, इसलिए ये आकड़ें दे रहे हैं, यह कहना गलत है।

श्री रविन्द्र चौबे :- चलिये, मैं पूरा नहीं पढ़ता हूं।

श्री अजय चन्द्राकर :- यह कोई तर्क नहीं है, आप जिम्मेदारी से बात नहीं कर रहे हैं।

श्री रविन्द्र चौबे :- मैं जिम्मेदारी से बात कर रहा हूं। मैं जिम्मेदारी से बात कर रहा हूं, आपको बात सुनना चाहिए।

श्री शिवरतन शर्मा :- श्रीमान, आपकी पूरी बात सुनेंगे। एक निवेदन है कि ढाई साल की बात करें तो ज्यादा अच्छा रहेगा। 15 साल में किसानों को समस्या नहीं रही। आपके प्रलोभन में किसान फंस गये हैं। ढाई साल से दु:खी हैं। तो ढाई साल की बात करें तो ज्यादा अच्छा रहेगा।

श्री रविन्द्र चौबे :- थोड़ा आईना भी दिखाना पड़ता है।

श्री अजय चन्द्राकर :- मैं बार-बार बोला हूं, जो आईना आपने दिखाया है।

श्री रविन्द्र चौबे :- आपको आंकड़ें सुनने में क्या तकलीफ हो रही है ?

श्री अजय चन्द्राकर :- मुझे आंकड़ें में कोई तकलीफ नहीं है। स्थगन का विषय है, आपके आकड़े पढ़ने से इस साल कमी दूर हो जायेगी क्या ?

श्री रविन्द्र चौबे :- मैं उसको भी पढ़कर सुनाता हूं। लेकिन आपको पूरा सुनने में आपत्ति क्यों हो रही है ?

श्री अजय चन्द्राकर :- कोई आपत्ति नहीं है।

श्री रविन्द्र चौबे :- आपने सन् 2018 में टोटल खाद का 56 प्रतिशत निजी क्षेत्र में ट्रेडर्स को दिया था और केवल 44 प्रतिशत कोआपरेटिव संस्थाओं को दिया था। तब आपकी यह बात कहां गई थी ? आप लगातार आरोप लगा रहे हैं और असत्य कथन कह रहे हैं।

श्री धरम लाल कौशिक :- माननीय चौबे जी, प्रश्न यह है कि आज आपने कितना दिया, वह महत्व नहीं है। प्रश्न यह है कि किसान को क्यों चक्का जाम करना पड़ रहा है ? उस समय चक्का जाम करने की स्थिति क्यों नहीं आई ? मतलब उनको खाद देना चाहिए, सहकारी समिति में जाना चाहिए। किसान को आवश्यकता कब है और व्यापारियों को कब दिया जाना चाहिए ? आज चक्का जाम होने की स्थिति आई है, इस कारण हमारा यह स्थगन है। यदि आज किसानों को खाद की आवश्यकता नहीं होती तब इस विषय को विधानसभा में लाने की आवश्यकता नहीं थी। तो महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि आज किसानों को चक्का जाम करने की स्थिति क्यों आ पड़ी है, यह आपके नीति के कारण है।

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय अध्यक्ष महोदय, कभी-कभी हमारे आदरणीय नेता प्रतिपक्ष जी बहुत बुद्धिमत्ता की बात करते हैं। आपका प्रश्न जायज है। यह स्थिति क्यों है ? हमको आवंटन के विरूद्ध खाद क्यों नहीं दिया जा रहा है ? मैं यही तो बताना चाहता हूं। अप्रैल माह में भारत सरकार से 6 लाख 68 हजार मीट्रिक टन उर्वरक प्राप्त हुआ। जिसमें 3 लाख 97 हजार मीट्रिक टन उर्वरक मार्कफेड को और 2 लाख 76 हजार मीट्रिक टन उर्वरक ट्रेडर्स को दिया गया। इस प्रकार मार्कफेड को 60 प्रतिशत और ट्रेडर्स को 40 प्रतिशत दिया गया। आप आंकड़ें सुन लीजिये। (मेजों की थपथपाहट) माह मई में, जो सप्लाई प्लान था, 2.15 लाख मिट्रिक टन, के विरूद्ध 2.19 लाख मिट्रिक टन उर्वरक की पूर्ति हुई, जिसमें 1.12 मार्कफेड को और 1.7 निजि क्षेत्र को प्रदान किया गया । माह जून में सप्लाई प्लॉन के मुताबिक 2 लाख 85 हजार मिट्रिक टन के विरूद्ध हमको 2 लाख 19 हजार मिट्रिक टन की पूर्ति हुई ।

जिसमें 1 लाख 57 हजार मिट्रिक टन 71 प्रतिशत मार्कफेड को, और 68 हजार मिट्रिक टन, केवल 29 प्रतिशत, ट्रेडर्स को दिया गया । आदरणीय नेता प्रतिपक्ष जी, यह आंकड़े हैं, कहीं केवल ट्रेडर्स को खाद देने की बात नहीं हुई । आपने हमारी मांग 11 लाख 75 हजार टन आपने स्वीकृत किया । हम दिल्ली की परिस्थिति को जानते हैं, उनको भी इम्पोर्ट कराना पड़ रहा है । कोरोना के काल में वहां के भी प्राब्लम्स हैं, पोर्ट से हमारा छत्तीसगढ़ दूर होने के कारण, नजदीक के राज्यों को जल्दी मिल जाता है, छत्तीसगढ़ को खाद प्राप्त होने में थोड़ी देर हो जाती है । ये परिस्थितियों का निर्माण हुआ, उसके बावजूद भी हम लगे रहे कि केन्द्र सरकार हमारी फर्टिलाइजर की पूर्ति करे, क्योंकि वहां से संचालित होता है । कंट्रोल फर्टिलाइजर का, आवंटन फर्टिलाइजर का, कंपनी तय करने का काम केन्द्र सरकार करती है । हमने कोई कमी नहीं की है । आवंटन के विरूद्ध केवल 56 परशेंट फर्टिलाइजर छत्तीसगढ़ को मिल पाया है । मैंने अगर स्वीकार किया, खाद की कमी है, गलत क्या किया ? आदरणीय मैं इस सदन के माध्यम से कहना चाहता हूँ कि जुलाई महीने में अभी 4-5 रेक आने की संभावनायें हैं । फर्टिलाइजर की जो जरूरत है, इसके अनुरूप जो हमारा सप्लाई प्लान है, उसके अनुरूप हम कर पायेंगे । ऐसा मेरे को उम्मीद है ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आपके पास स्टॉक कितना है, यह बता दें ? मैंने आपको जुलाई का स्टॉक बताया है । आपका जो डिस्ट्रीब्यूशन सिस्टम है, सिंगल लॉक तक जो पहुंचना चाहिये, वह सिंगल लॉक तक नहीं पहुंच रहा है । इसके कारण किसानों को नहीं मिल रहा है । किसानों को नहीं मिलने के कारण से ब्लैक मार्केट से खरीद रहे हैं । आपका डिस्ट्रीब्यूशन सिस्टम फेल हो गया है । पहले सिंगल लॉक में जाता था, आज आप सिंगल लॉक में क्यों नहीं भेज रहे हैं । सिंगल लॉक में यह माल पहुंचना शुरू हो जाये तो कमी दूर हो जायेगी ।

डॉ.कृष्णमूर्ति बांधी :- पहले जो बेनिफिट था ।

श्री रविन्द्र चौबे :- हां-हां डॉ. बांधी जी, हम लोग चाहते हैं कि सोसायटी को लाभ हो । ज्यादातर मैंने जो आंकड़े दिया, अगर मार्कफेड के माध्यम से जा रहा है तो सोसायटी को ही जा रहा है, प्रायमरी सोसायटी को ही जा रहा है, इसका मतलब है कि जितना उपलबध खाद है, उसको भेज पा रहे हैं ।

डॉ.कृष्णमूर्ति बांधी :- माननीय मंत्री जी, डायरेक्ट सोसायटी में जायेगा तो जो सोसायटी का जो 6 परशेंट है, उनको खाद बेचने का लाभ मिलता है, उससे वंचितहो रहे हैं । सोसायटी लॉस हो रहा है, जैसे चन्द्रा जी ने कहा । अगर आप डायरेक्ट सिंगल लाक में भेजेंगे, डायरेक्ट ट्रांसपोर्टिंग करेंगे, कमीशन को ट्रांसपोर्टर लेकर जा रहा है । बात यह भी है ।

श्री रविन्द्र चौबे :- अपने उद्‌बोधन में आदरणीय नारायण चंदेल जी ने, माननीय चन्द्रा जी ने कहा कि निजी क्षेत्र के लोग अधिक कीमत में खाद बेच रहे है।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

विशेष रूप से जांजगीर जिले मे । मैं आज भी अपने अधिकारियों को निर्देश जारी करूंगा । कल ही जितने स्टाकिस्ट हैं ना, उनके यहां कार्यवाही करेंगे । जहां भी अधिक कीमत पर खाद बेचने की शिकायत होगी, किसी को नहीं बख्शेंगे । आप जितनी चिंता किसानों की करते हैं, उतनी चिन्ता हम लोग करते हैं । इसलिए ऐसा कोई सरकार की ओर से हो रहा है, ऐसा नहीं । लगातार मैंने अपने उत्तर के आंकड़ों में बताया है, कितनी कार्यवाहियां हो रही है, उसके बाद भी आपने जांजगीर जिले का कहा, उसमें भी कार्यवाही करेंगे । जहां तक सीड का सवाल है, बोनी का जो कार्यक्रम है, वह 90 परशेंट हो गया है । लेकिन रोपाई प्रभावित हुआ है । अभी माननीय अजय जी ने अपने भाषण में कहा, पानी के बारे में किसी ने जिक्र किया, अभी हमारे बांधें में पानी नहीं है, हसदेव बांगों और खुडिया के अलावा किसी भी जलाशय का पानी छोड़कर किसानों को देने लायक स्थिति में नहीं है । थोड़ा बारिश और हो जाये, हम लोग भी चाहते हैं कि किसानों की रोपाई का काम जल्दी हो जाये । जितनी बारिश हुई है, उसमें रोपाई का काम चल रह है, दलहन तिलहन के बारे में भी आपने कहा, अभी तक खत्म हो जाना था, ये जो आंकड़े है, अभी चल रह है । पूरी बोआई का काम जब खत्म हो जायेगा, तो हो सकता है कि दिन के विधान सभा में स्टेटमेंट भी दे दूंगा, लेकिन आप सब लोगों ने जो सुझाव दिया, कहीं-कहीं अमानक बीज के बारे में बात हुई। इसके लिए स्पष्ट निर्देश हैं। अभी शिवरतन शर्मा जी ने कहा न कि बीज बदला गया। आज भी कहीं ऐसी शिकायत आयेगी तो बीज बदला जायेगा। जहां तक एक वायर कंपनी की बात सभी सदस्यों ने उठाई। उन्होंने सीड प्रोडक्शन कार्यक्रम में अभी जो समर पेडी का लिया था, उससे कुछ किसान प्रभावित हुए थे। उसमें दुर्भाग्य से मेरे क्षेत्र के भी कुछ किसान थे। डॉ. साहब ने अभी उस बात का जिक्र किया। यह वायर कंपनी पहली बार छत्तीसगढ़ में नहीं आई है, यह पहली बार सीड प्रोडक्शन का कार्यक्रम नहीं लिया है। अकेले धमतरी क्षेत्र में समर पेडी का लगभग 3 हजार हेक्टेयर में सीड प्रोडक्शन का यह कार्यक्रम लेता है। वहां की कोई शिकायत नहीं है। लेकिन कुछ किसानों को तकनीकी रूप से जो प्रशिक्षित होना था, वह शायद नहीं हो पाये। यह मानकर भी चलते हैं कि कहीं-कहीं बीज खराब हुई होगी।

श्री अजय चन्द्राकर :- आपने धमतरी का उल्लेख किया, धमतरी में बीज प्रक्रिया केन्द्र है। उसमें आपने कार्यक्रम को कम कर दिया है। दोनो क्षेत्रों में एरिया में कटौती कर दी है। यह मैं आपको बता दूं। मैंने जो आरक्षण की बात बताई है वह बिल्कुल सत्य है, चाहे आप लाख नकारें।

श्री केशव प्रसाद चन्द्रा :- नहीं, इधर के लिए आपने कुछ मुआवजे की घोषणा की है कि कंपनी मुआवजा देगी, लेकिन जांजगीर चांपा जिले में यह घोषणा नहीं हुई है। ग्रीष्मकालीन फसल की नर, नारी लगा करके लोग वहां भी लुटाये हैं। नर, नारी बीज उत्पादन के लिये दिये, एक क्यारी पर नर लगाना है, एक क्यारी पर नारी लगाना है तो उत्पादन दो-तीन क्विंटल से ज्यादा नहीं आया। इधर तो उनको मुआवजा मिल गया लेकिन जांजगीर-चांपा जिला में किसानों को मुआवजा नहीं मिला है।



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अजय चन्द्राकर :- यह क्लियर हो जाये कि नर, नारी वालों को मुआवजा देना है या सबमें देना है ?

श्री रविन्द्र चौबे :- माननीय अजय जी, वह बहुत ठीक बात बोल रहे हैं, केशव चन्द्रा जी खुद भी बड़े किसान हैं और अच्छे किसान हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- मैं उनके घर गया हूं।

श्री रविन्द्र चौबे :- गांव में उसको उसी तरीके से बोते हैं। 12 लाईन अलग धान बोते हैं, एक लाईन नर का धान बोते हैं। उसको परागण की क्रिया कराते हैं। रस्सी से कराते हैं। उसमें थोड़ा मेहनत का काम होता है। जो किसान उसी में चूक जाता है, वहां फसल का उत्पादन प्रभावित हो जाता है। कुल मिलाकर आप भी समझते हैं और माननीय केशव भाई भी समझ रहे हैं। लेकिन ऐसा हुआ है जो नये किसानों ने ये धान को 6 हजार प्रति क्विंटल के लालच में अगर बो लिया है और तकनीकी रूप से उसको ठीक से परागण की क्रिया नहीं करा पाये तो उसका उत्पादन प्रभावित हुआ है। लेकिन आपने कहा और आपने भी पूछा, लगभग 10 करोड़ 43 लाख रुपये क्षतिपूर्ति के रूप में किसानों को कंपनी से बंटवा दिया गया है। उसके बावजूद भी माननीय केशव भाई किसी किसान की और शिकायत होगी, यह कंपनी हम लोगों की रिश्तेदार थोड़ी है। अगर किसानों के साथ इस तरीके से काम करेंगे तो इनके खिलाफ भी कार्यवाही करेंगे, लेकिन पहले किसानों को पैसा दिलवायेंगे। 10 करोड़ 43 लाख रुपये दिलवा चुके हैं। उसके बावजूद भी कहीं शिकायत आयेगी न तो आप बताईयेगा, उसमें भी कार्यवाही करेंगे। सारी बात हुई। वर्मी कम्पोस्ट के बारे में अजय जी को बहुत शिकायत है।

श्री शिवरतन शर्मा :- वर्मी कम्पोस्ट के बारे में पूछा हूं।

श्री रविन्द्र चौबे :- शिवरतन भैया, वह आप नहीं समझेंगे।

श्री अजय चन्द्राकर :- क्या है कि वर्मी कम्पोस्ट आप जबरदस्ती पकड़ा रहे हैं, यह सर्वस्थापित सत्य है।

श्री शिवरतन शर्मा :- मैं रोज खेत जाथौं। खेती के बारे में कौनो विषय में मैं चर्चा कर सकथौं।

श्री रविन्द्र चौबे :- जाना चाहिए।

श्री शिवरतन शर्मा :- पूरा काम हाथ से करे हवं, इसलिए खेती का पूरा काम जानथौं, तैं नई समझै के बात करत हस।

श्री रविन्द्र चौबे :- शिवरतन जी, खेत में जाना चाहिए।

श्री शिवरतन शर्मा :- ट्रेक्टर में सूखा गोबर ला पिसवायें हैं और ओखर बाद छान के बोरी में भर के सोसायटी में भेजे हैं।

श्री रविन्द्र चौबे :- आखिरी में आप यह भी समझ लीजिए अगर वह खरसी है, उसको भी पीस के अगर खेत में डाले हैं न।

श्री शिवरतन शर्मा :- आप यह बता दो कि वह क्या 10 रुपये किलो के लायक है ?

श्री रविन्द्र चौबे :- शिवरतन जी, मैं फिर से कह रहा हूं किसी भी किसान से पूछना उसका भी फायदा होता है।

श्री शिवरतन शर्मा :- गोबर खाद का फायदा होता है, इससे इंकार नहीं करते हैं, पर क्या 10 रुपये किलो के लायक है ?

श्री रविन्द्र चौबे :- बस हो गया।

श्री सौरभ सिंह :- किसानों के पास च्वाईस होनी चाहिए न। उनको कंपलसरी दिया जा रहा है।

नेता प्रतिपक्ष (श्री धरमलाल कौशिक) :- माननीय चौबे जी, मैं जब दौरे में गया था तो मैं देखा हूं कि जो आपका सर्कुलर जारी हुआ है उसमें किसी अधिकारी का दस्तखत नहीं है। लेकिन सोसायटी को पत्र भेजा गया है कि इतने बोरा यूरिया, डी.ए.पी. में उसको इतना कंपलसरी रूप से लेना पड़ेगा। यह काटा गया है। यह प्रपत्र मैं ला करके दे दूंगा। उसमें दस्तखत नहीं है। लेकिन आपके यहां से सर्कुलर जारी हुआ है तो कम से कम किसानों के साथ में यह दमनात्मक नीति मत अपनाईये कि जबरदस्ती उसके साथ में उसको लेना पड़ेगा। जो लेना चाहे, उनकी इच्छा है। कोई दिक्कत नहीं है किसान को लेना चाहिए। आपका वन विभाग तो आपके खाद को लेने को तैयार नहीं है। दूसरे विभाग जो आपके सरकारी हैं वह खाद को लेने को तैयार नहीं है तो क्यों किसान को डांटने के पीछे पड़े हुए हो। आप से स्वेच्छा से कर दीजिए। अभी जो तुगलकशाही है वह आपका फरमान ठीक नहीं है।

श्री नारायण चंदेल :- माननीय नेता जी, इनका मौखिक आदेश जारी हुआ है। वह जो बिना दस्तखत का आदेश है और गजट आउट हुआ है।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- वह तो आपका ब्यान है। यह माननीय कृषि मंत्री जी का बयान था।

श्री रविन्द्र चौबे :- ममा तें मोर बात ला समझेस में का कहे रहेव।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- में पूरा समझेव हों। तें बोलेस की शर्त लगाए हों। यूरिया लिही या कोई खाद लिही ओखर बाद वर्मी खाद भी लेना आवश्यक हे।

श्री शिवरतन शर्मा:- उन्होंने ज्यादा ही समझा है।

श्री अजय चन्द्राकर :- एक बार माननीय कृषि मंत्री जी गोबर अउ वर्मी कम्पोस्ट अलग-अलग हमन बोलथन। आप वर्मी कम्पोस्ट के विषय विशेषज्ञ बन गे हो। एक लीटर गोबर में कतका पानी रहिथे, ओखर कतका यील्ड रहिथे, कतका गुणवत्ता रहिथे, कतका भाव में जाही, आप हम लोगों को एक भाषण दे दीजिए ताकि हम वर्मी कम्पोस्ट के बारे में इधर-उधर की बात करना बंद कर देंगे। कहीं पर भी



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

आपका प्रबोधन हो जाए। अच्छा आप बता दीजिए कि एक किलो गोबर में कितना यील्ड निकलेगा, कितना पानी रहता है और कितना यील्ड रहता है।

श्री रविन्द्र चौबे :- आप बैठिए। माननीय अध्यक्ष जी, हमने एक दिन अखबारों में माननीय अजय जी का स्टेटमेंट पढ़ा। इन्होंने कहा कि गोबर सड़ रहा है। इन्होंने चिंता व्यक्त की थी।

श्री अजय चन्द्राकर :- सड़ रहा है ? नहीं। यह जबरदस्त है।

श्री रविन्द्र चौबे :- आपने यह बयान दिया था। माननीय अध्यक्ष जी, हम लोग भी गांव के लोग हैं। हम लोग दो-दो साल गोबर को सड़ाते थे तभी खाद बनता था, लेकिन इस तरीके से स्टेटमेंट देने वाले लोग हैं। यह हमने पढ़ा है। चलिए, माननीय अध्यक्ष जी, वर्मी कम्पोस्ट के बारे में कोई तुगलकशाही जैसा आपने क्या एक शब्द का उपयोग किया। ऐसी कोई बात नहीं है। असल में कॉपरेटिव सोसायटी से किसानों का  जो क्रेडिट लिमिट बनता है, उसमें कैश एण्ड काईंड का प्रतिशत तय रहता है और कैश जितना जाता है वह जाएगा। हमने काईंड में अधिकार दिया कि बाकी फर्टीलाईजर के साथ-साथ वर्मी कम्पोस्ट भी हमारा किसान खरीद सकता है। ताकि उसको अलग से कुछ करने की जरूरत न हो। आदेश केवल इतना था और आपने कहा कि तुगलक और क्या-क्या बोल दिया।

श्री शिवरतन शर्मा :- वह खरीद सकता है नहीं, उसे खरीदना पड़ेगा। दोनों शब्द में अंतर है। आपका मौखिक फरमान जारी था कि आपको इतना खरीदना पड़ेगा।

श्री रविन्द्र चौबे :- वह पड़ेगा नहीं है। मैं फिर से इस सदन में कह रहा हूँ कि अगर कहीं भी खरीदना पड़ेगा जैसा शब्द है।

श्री शिवरतन शर्मा:- यह मौखिक आदेश थे, लिखित आदेश नहीं थे।

श्री रविन्द्र चौबे :- आप फिर वही बात कह रहे हैं। आप फिर गलत बात क्यों करते हैं।

श्री शिवरतन शर्मा:- छत्तीसगढ़ के किसानों को इसके लिए बाध्य किया गया।

श्री अजय चन्द्राकर :-  इस सदन में हम जिम्मेदारी से कहते हैं।

श्री शिवरतन शर्मा:- हम जिम्मेदारी से बोलते हैं।

श्री सौरभ सिंह :- मौखिक आदेश है। किसानों को दबाव दिया जा रहा है। आप दिखवा लीजिए।

श्री नारायण चंदेल :- एक फरमान जारी हुआ है जबकि किसानों का अरमान ही नहीं है। बिना वक्तव्य के फरमान जारी कर दिया। (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आप खुद स्वीकार कर रहे हैं कि गोबर जा रहा है और 2 रूपये में गोबर खरीदकर 10 रूपये में बिकवा रहे हैं। आप उसको खुद स्वीकार कर रहे हैं उसके बाद भी आप रोकने की बात नहीं करते हो। उसका वर्मी कम्पोस्ट ठीक से बनेगा उसके बाद ही डिलीवरी हो।

श्री धरमलाल कौशिक :- दूसरी बात आप पकड़ लिये कि अजय जी बोल दिये कि गोबर सड़ गया। हमारे तखतपुर क्षेत्र में उसका लोकार्पण किए हैं..।

श्री अजय चन्द्राकर :- गोबर बह गया।

श्री नारायण चंदेल :- गोबर बोहा गे।

श्री अजय चन्द्राकर :- गोबर बोहा गे।

श्री धरमलाल कौशिक :- 14 गांव के हमर विधायक जी के गांव में मॉडल गोठान के गोबर बोहा गे।

नगरीय प्रशासन मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- बाकी मन तो बइठे हे, माननीय नेता जी बोलत हे।

श्री अजय चन्द्राकर :- गोबर बोहा गे। अउ गोबर चोरी होगे। (व्यवधान)

श्री धरमलाल कौशिक :- 14 गांव के गोबर बोहा गे। माननीय मुख्यमंत्री जी मॉडल गोठान के उद्घाटन करे हे। आपके यहां  अइसना गोबर खरीदी चलत हे।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- जरा आप किसानों को लूटना बंद करिए और खाली सही तरीके से आप जो किसानों को लाभ मिलना चाहिए।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप हल्के से इस विषय को ले रहे हैं आपके वक्तव्य में कोई गंभीरता नहीं है आपने कोई आश्वासन नहीं दिया कि हम खाद और बीज की कमी को दूर करेंगे। हमइसकी व्यवस्था बनायेंगे आपने अपने वक्तव्य में ऐसी कोई बात नहीं कही।

श्री नारायण चंदेल :- इस विषय में सरकार गंभीर नहीं है।

श्री बृहस्पत सिंह :- सर, पहले आप लोग तो गौमाता-गौमाता चिल्लाते (व्यवधान)

श्री धरमलाल कौशिक :- इस पर आप इस पर कार्यवाही करें। लेकिन इस प्रकार से कोई जवाब नहीं आ रहा है। इसलिए हम सरकार के जवाब से असंतुष्ट होकर सदन से बहिर्गमन करते हैं।

समय :
6.49 बजे

**बहिर्गमन**

**भारतीय जनता पार्टी के सदस्यों द्वारा शासन के उत्तर के विरोध में**

**(नेता प्रतिपक्ष (श्री धरमलाल कौशिक ) के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी के सदस्यों द्वारा शासन के उत्तर के विरोध में सदन से बहिर्गमन किया गया।**

**(भारतीय जनता पार्टी के सदस्यों द्वारा नारे  लगाए गए)**



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अध्यक्ष महोदय :- सभा की कार्यवाही मंगलवार दिनांक 27 जुलाई, 2021 को 11.00 बजे दिन तक के लिए स्थगित।

**(सायं 6 बजकर 50 मिनट पर विधान सभा मंगलवार, दिनांक 27 जुलाई 2021 ( श्रावण 5,शक् संवत् 1943) के पूर्वाहन 11.00 बजे दिन तक के लिए स्थगित हुई.)**

**चन्द्र शेखर गंगराड़े**
**प्रमुख सचिव**
**छत्तीसगढ़ विधान सभा**

रायपुर (छ.ग.)
दिनांक 26 जुलाई, 2021

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं